

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ श्रीआचारांगसूत्रम् ॥

(मूळ अने शीलांकाचार्ये रचेली टीकानुं भाषान्तर) (भाग पहेलो)

छपानी प्रसिद्ध करनार-पण्डित श्रानक हीरालाल हंसराज (जामनगरनाळा)

जयित समस्त वस्तु पर्याय विचारा पास्त तीर्थिकं । विहिते कैक तीर्थ नय वाद समृह वशार्प्रतिष्ठितम्। षहुविधभिङ्गि सिद्ध सिद्धान्त विधूनित मलमलीमसम् । तीर्थमनादि निधनगतमनुपममादिनतंजिनेश्वरैः १ जेणे वधी वस्तु तथा तेना पर्यायना विचार बताववा वडे बीजां तीर्थों (मन्तव्योने दूर कर्यों छे अने एके एक तीर्थना नयवादना 🕻 समृहने लीधे प्रतिष्ठा पायेछं अने वहु पकारे भंगी बताववा वढे सिद्ध करेछा सिद्धान्तथी, जेणे कुमार्ग रूप मळनी काळाच घोड

For Private and Personal Use Only

| २ |

नाखी छे, तथा अमादिनिधन (सर्वदापणाने) ने पामेर्च छे; अने अनुषम पन जिनेश्वरोण उपदेश आपता पहेळांज जेने नमस्कार कुँ कुर्गों छे ते तीर्थ जयवन्तु वर्गे छे.

आचारशाम्बं सुविनिश्चितं गथा, जगाद वीरो जगते हिताययः।

तथैव किञ्चिद्गदतः सएव ो, पुनातु धीमान् विनयार्षिता गिरः॥

जेबीरीते श्रीवीर भगवाने जगतना हितने माटे सारीरी निश्रय करेला आचारशास्त्रने वर्णव्युं तेपीनरीते ते श्रीयुद्धिपूर्ण बीर भगवान पोते कंइक बोलनार एवानी आ मारी विनयशी र्थण करेली बाणी तेने पवित्र करो.

्रीमुनपरिज्ञा विवरण, सतिबहुगहनं च गन्यहित हातम् । तस्मारसुख बोधार्थे यह्नाम्यह मजासा सारम्। 🦎 सम्बहरित आचार्ये करेलुं 'शस्त्र परिज्ञानुं' विवरण वहु गहेनत लीवा छतां पण न एमजी श्वकाय तेषुं होवाथी रोनो जलही 🧏

भने भोडी महेनते त्रोध याप (समनीशकायं) तेटला माटे तेनो सार मात्र ब्रहण करुं छं.

अहिं निश्चये शग द्वेप पोह विगेरेथी हारेला सर्व मंसारी ीचो जे कि अने पन संबन्धी अनेक अति कडवां दुःस्तोना समूह कि शी पीडायेला छे, ते दृह करवाने माटे हेंग कि विश्व कि कि तेमणे यस्त करवो जोड़ण, ते यस्त विशिष्ठ विवेकविना कि कि तेमले अने ते श्रेप्त विवेक जे आप्त पहरू

ते श्रेष्ठ निवेक जे आप्त पुरु । (दिय हान विगेरे)नो समूह माप्त करेला होय, तैयना हैं एक अने ते आप्त पुरुष र ोषो । सय कर्यांगी थाय, ते दोष रहित जिनेष्यज हो 🏖

सूत्रम्

1 2 11

तेथी अमे अर्हन् जिनेश्वरना वनननो अनुयोग (अर्थकथन) करीए छीए ते चार मकारे छे ते आ ममाणे छे.
१ धर्मकथानुयोग, (२) गणितानुयोग (३) द्रव्यानुयोग अने (४) चरण करणानुयोग. तेमां धर्म कथानुयोग उत्तराध्ययन विगेरे
गणितानुयोग सूर्यमङ्गाति विगेरे द्रव्यानुयोग चौद पूर्व तथा संगति विगेरे न्यायना प्रन्थो, अने चरणकरणानुयोग ते आ आचारांगादिमुत्र छे ते चोथो अनुयोग बधामां मुख्य छे कारणके बाकीना त्रणमां तेनो अर्थ बतावेलोछे. कहेल छे के—
"चरण पडिवत्ति हेउं जेणियरे तिण्णि अणुओग"ति (तथा) चरण पडिवत्ति हेऊं, धम्म कहा कालदिक्ख-

मादीया। दविए दंसण सोहि, दंसण सुद्धस्स चरणं तु ॥ १ ॥

चारित्रना स्वीकारने माटे बाकीना त्रण अनुयोगों छे वळी चरणना स्वीकारनां कारणों धर्म कथा काळ अने दिशादिक छे. द्र-व्यानुयोगथी दर्शन शृद्धि (साचा तत्वउपर आस्था) अने तेनाथी चारित्र ग्रहण थाय छे. गणधरोए पण तेथीन तेनुं मथम विवेचन कर्युं छे. तेथी ते मगाणे आचारांगनो पहेछो अनुयोग करीए छीए. हवे ते अनुयोग मोक्ष देनारों होवाथी तेमां विध्न होवानों संभव छे कहेल छे के—

श्रेयांसि बहु विध्नानि, भवन्ति महतामि । अश्रेयसि प्रवृत्तानां, कापि थान्ति विनयकाः ॥ १ ॥ जैटलां सारा कार्यो छे तेमा मोटाओने विध्नो पण आबे छे पण अकल्याणमां प्रवर्तनाराओने कोइएण जगोए विध्न आवतुः

सूत्रम्

आचा०

शास्त्राव्या व्याप्त स्था प्रति हो तेने कोइ अटकावतुं नथी, तो सर्व विघ्ननो नाम थना माटे पंगल ए.हेर्गु जोइगे, ते पंजलाद मध्य अने अन्त एवा त्रण भेदे छे, तेमानुं ' जुवंमे आड संतेणं भगत्रया एवं मक्स्तायं ' आ भगतानतुं वचन होवाथी प्रथम पंगल छे, अथवा श्रुत एटले श्रुतज्ञान ते नंदीसूत्रमां गणातुं होवाथी पंगल छे, ए पंगल विना विघ्ने इच्छित शास्त्रना अर्थने पार पहांच- वानुं कारण छे, मध्य पंगल लोकसार अध्ययनना पांचमा उदेशानुं सूत्र छे. ' सेजहाके विदृप पिर पुण्णे चिद्रह समिस भोम्मे उव- संतर्प सारक्रमाणे' अहीं हुद (कुंड)ना गुणो वहे आवार्योना गुणोनुं कीर्तन छे अने आवार्यो पांच परमेष्टीमां होवाथी पंगल छे. अभ भणेला इच्छितश्रक्षांचांने स्थिर करवा माटे छे. छेटलुं पंगल नवमा अध्ययनमां छेटलुं सूत्र छे ' अभि निन्तु अधार्द आवक्त होताथी पंगल छे अमि निज्यु अधार्द आवक्त होताथी पंगल छे हाए भगवं समियासी' अहि अभिनिर्हतनुं ग्रहण ' संसार भ्रमण निह थाय) आ छेवटनुं पंगल शिष्य अने पशिष्य तेनो परिवार होताथी पंगल छे अने कावायी सहाय वेनो परिवार वर्णु जाणी छेतुं तेथी विशेष कहेता नथी अथवा आ आलुं शासूज झानरुप होताथी पंगल छे अने झानथी सकाम निर्मरा थायछे. वर्णु जाणी छेतुं तेथी विशेष कहेता नथी अथवा आ आलुं शासूज झानरुप होताथी पंगल छे अने झानथी सकाम निर्मरा थायछे. वर्णु जाणी छेतुं तेथी विशेष कहेता नथी अथवा आ आलुं शासूज झानरुप होताथी पंगल छे अने झानथी सकाम निर्मरा थायछे.

जं अञ्चाणी कम्मं, खवेइ बहुयाहिं वास कोडीहि तंनाणी तिहिं ग्रत्तो, खवेइ उस्सा सिमत्तेणं ॥ १ ॥ क्रिकाहो वर्षे अज्ञानी जे कर्म खपावे ते ज्ञानी अने वण गुष्तिनो धरनारो खासोखास पात्रमां खपावे छे, मंगळ बन्दतुं निष्क

9

(पदोने तोडीने अर्थ करतो ते) आ छे, मने भवधी दूर करे ते मंगळ अथवा मने, गळ एडले विघ्न न थाओ, अथवा गाल एटले नाम, भासनो न थाओ (मारु भणेलं स्थिर अने उपयोगी थाओ) अहीं बाकी रहेल आक्षेप (बादीनी ग्रंका) अने परिहार (स-माधान) विगेरे अन्य ग्रन्थोथी जाणवा. हवे आचारनो अनुयोग करे छे अर्थनुं कहेनुं ते अनुयोग, अथवा सूत्रनी पछवाडे अर्थ बताववो ते एटले पहेलं सूत्र भणावनुं अने पछी तेनो अर्थ बताववो अथवा अणु ते नानुं सूत्र तेनो विभाळ अर्थ कहेवो ते, ते अग पछीना कहेवाता द्वारो वढे जाणवुं ते आ पमाणे छे.

्निकखेवेगद्वनिरुत्तिविहिपवित्ती य केण वा कस्स तहारभेयलक्खण, तद्रिहपरिसा य सुत्तत्थो ॥१॥

(आ दश्रवैकालिकसूत्रनी निर्युक्तिनी पांचमी गाथा छे) तेमां निक्षेपो नाम विगेरे सात मकारे छे. नाम अने स्थापना ए बे निक्षेपो सुगम छे. द्रव्यथी अनुयोग वे मकारे छे आगमथी अने नो आगमथी तेमां आगमथी ज्ञाता होय पण तेमां उपयोग न राखे, अने नोआगमथी ज्ञशारि, भव्य शरीर, अने तेनाथी जुदो अनेक मकारे छे. द्रव्य वहे एटले साटिका (खढी) विगेरेथी, अथवा द्रव्यनो एटले आत्मा परमाणु विगेरेनो अनुयोग अथवा द्रव्यमां एटले निषद्या विगेरेमां अनुयोग थाय, ते द्रव्यानुयोग, क्षेत्रानुयोग गमां, क्षेत्रवहे, क्षेत्रनो, अथवा क्षेत्रमां अनुयोग ते आ मयाणे छे काळ वहे काळनो अथवा काळमां अनुयोग जाणवो, वचनानुयोग ते एक वचन विगेरेथी जाणवा. हवे भावानुयोगनुं वर्णन करे छे ते वे मकारे आगमथी, अने नो आगमथी, आगमथी ज्ञाता अने उपयोग राखनार, नोआगमथी जीपश्चिक विगेरे भावो वहे तेओना अर्थनुं कहेनुं, आ शिवाय बाकीनुं आवश्यकसूत्रथी

सूत्रम

1 4 1

आचा०
आचा०
आजां, कारण के अहं तो अनुयोग मात्रनो विषय छे.
आ अनुयोग आवार्यने आधीन होवाधी, कीणे कर्यों, ते बार बताने छे, तेनां उपक्रम विगेरे बार बार छे. ते यणा उपयोगी होवाधी बतावे छे. कोणे कर्युं अने ते केवा जोइए ते बतावे छे. अहीं आवार्यना छत्रीत्र गुणो बतावे छे.
देश छुळ जाइ रूवी संघयणी धिइजुओ अणासंसी, अविकत्थणो अमाई थिर परि वाडी महिय बक्को।१
जिय परिसो जियनिहो मज्झत्थोदेसकाळ भावन्नू, आसन्न छद्ध पड्मो णाणाविह देस भासण्णू।२।
पंच विह आयारे जुत्तो सुत्ततथ तदु भय विहिन्नु, आहरण हेउ कारण णय णिउणो माहणा कुसलो।३। आर्थ देशमां उत्पन्न थयेल वे बधाने सहेलाइथी बोध आपी सके ले पितानुं कुळ ते इक्ष्त्राक्क निगेरे तथा ज्ञातकुळ, ते श्रिष्ट हो-वाधी माथे आवेला बोजाने उपाडतां धाकता नथी 'मातानी जाति 'ते उत्तम होय तो विनयादिक गुणवाळो थाय ले, अने ज्यां सुन्दर आकृति त्यां गुणो रहे ले तथी रूप लीधुं, संहनन अने धीरज आ बेथी युक्त होय तो उपदेश विगेरेमां खेद न पामे, अ-नाशंसी होवाथी सांभळनारा पासे वस्तादिक न मागे अविकत्थन होवाथी हितमित बोलनारो ले अमाथी ते कपटी न होवाथी सर्वत्र विश्वास करवा योग्य ले, स्थिर परिपाटी ते भणेला सूत्र तथाअर्थने न भूले, ग्राह्म वाक्य तेनी आहा वधा माने, जीत पर्यद्

आचा २ ॥ ७ ॥

राजा विगेरेनी मोटी सभाओमां हारे नहिं, जीत निद्र होवाथी निद्राख शिष्योंने अप्रमादीयणे सहेळाइथी जगाहे, मध्यस्थ होवाथी वथा शिष्योंने योग्यरीते राखे छे, देशकाळ भावनी जाणनार होवाथी सुखथी गुण माप्तिना देशोमां निचरे छे, आसन्न छन्ध मन्तिमा (हाजर जवाबी होवाथी) शीघ परवादीना उत्तर आपवामां समर्थ छे, योते जुदी जुदी भाषानी विधि जाणतो होय तो जुदा जुदा देशमां जन्मेळा शिष्योंने सहेळाइथी समजावी शके छे, ज्ञानादि पांच आचारे युक्त होवाथी तेमतुं वचन माननीय छे. स्त्र अर्थ बन्नेनी विधि जाणतो होवाथी जोइए तेवीरीते उत्सर्भ अर्थादना मर्यचने बतावे छे. हेतु उदाहरण, निमिन्त, नयु तेना वि-स्तारने जाणनारो, व्याकुल थया विना, हेतु विगेरे बराबर बतावे छे. ग्राहणा कुश्रल होवाथी घणी युक्तिओथी शिष्योंने समजावे छे, जैन अने बीजा मतोनो जाणीतो होबाथी दरेकनी स्थापना अने खंडन करे छे. गंभीर ते खेदने सहेनारो, अने दीप्तिमान ते परना तेजमां न अंजाय, शिवना हेतुथी शिव एटले ते ज्यां विचरे त्यां मरकी विगेरे रोगोनी शांति थाय, सीम्य होवाथी तेने देखीने लोकोनी आंखो आनंद पामे, सेंकडो गुणोथी युक्त ते पश्रय (भक्ति) विगेरेथी युक्त आ मनाणे सृहि (आचार्य) मनचनना कथनमां योग्य जाणबी. (आवा गुणोवाळा आचार्य सूत्र अर्थ भणावे) ए अनुयोगना मोटा नगरमां पेसवानी मापक (जैनिस-द्धांतमां पेसवाने माटे चार अनुयोग द्वारो तेज व्याख्यान अंग छे) ते कहे छे. १ उपक्रम, २ निक्षेप, ३ अनुगम, ४ नयं, तेमां उपक्रम ते उपक्रमण अथवा जेना वढे उपक्रम करीए अथवा जेनो करीए अथवा जेमां करीए तेनो अर्थ आ थाय छे के कहेवाना शासने पूरुं समजावना माटे शिष्यनुं ते तरफ लक्ष खेचनुं ते उपक्रम आ उपक्रम, वे मकारे छे (१) शास्त्र संबंधी तथा (२) ली-क संबन्धी शास्त्र संबंधी अनुपूर्वी नाम, ममाण, वनतत्र्यता, अधीधिकार, अने समनतार, एम छ मकारे छे.

सूत्रम्

निश्लेषण ते निश्लेषो जैनावह जैनाथीजेमां थाय ते निश्लेष छे. उपक्रममां छावेछा सांमळनार शिष्यने पासे छावीने कहेवाना शास्त्र हैं नाम विगेरे बतावतुं. ते त्रण प्रकारे छे. ओघनिष्पन्न, नामनिष्पन्न, सूत्राछापकनिष्पन्न, तेमां अंग अध्ययन विगेरेतुं सामान्यनाम है सूत्रम् स्थापतुं ते ओघनिष्पन्न छे, अने आचार, ज्ञास्त, परिश्ला, विगेरे विशेष अभिधान नाम स्थापतुं अने सूत्रना आछावातुं नाम है विगेरे स्थापतुं, ते सूत्र आछापकनिष्पन्न जाणतुं.

हवे अनुगम कहे छे. जेनावहे अथवा जेनाथी अथवा जेनामां अनुगमन थाय ते अनुगम जाणवो एटले ते अर्थनुं कथन छे.) आ अनुगम निर्मुक्ति अनुगम, अने सूत्रानुगम, एम वे मकारे छे. पहेलो निर्मुक्ति अनुगम, त्रण मकारे छे. निक्षेप निर्मुक्ति, तथा रि इपोद्घात निर्मुक्ति, तथा सूत्र स्पर्शिक निर्मुक्ति अनुगम छे. तेमां पहेलो निक्षेप पोते छे तेमां सामान्य विशेष कहेवावडे ओघ निष्मुक्त अने नाम निष्मुक्त, ए वे निक्षेपावडे कहेलो सूत्रनी अपेक्षाए छे. तेनुं लक्षण हवे पछी कहेशे, छपोद्घात नीचे आपेली

उद्देसे णिदेसे य, णिगामे खेत्तकालपुरिसे य, कारणपचयलक्खण णए समोयारणाऽणुमए ॥ १ ॥ किं कतिविहं कस्स किं केसु कहं केचिरं हवड़ कालं। कइ सं तरमिवरहियं भवागरिस फासणणिरुत्ती। उदेशो, निर्देश, निर्गम, क्षेत्र, काल, पुरुष, कारण, पत्यय, लक्षण, नयो, समावतार, अनुमत, ॥१॥ श्रं, केटला मकारनुं, कोनुं, क्ष्यां, कोनामां, केवीरीते, केटलो काल छे, केटलुं अंतरवाळं, अंतर रहित, भावाकर्ष स्पर्शना निरुक्ति जाणवुं ॥ २ ॥

सूत्रम्

हैं. एनी अवयवार्थ निर्युक्तिकारज कहे छे. आयारी आचालो आगाला आगारीय आसासी। आयारिसोअंगंति य आइण्णाऽऽज्ञाइ आमोक्खा ।७। जे वर्तनमां मुकाय ते आचार जाणवो ए नाम विगेरे चार निक्षेपाये जाणवो, नामस्थापना सुगम छोडीने द्रव्य निक्षेपमां ज्ञ शरीर, भव्य शरीर तथा बेनाथी जुदो (व्यतिरिक्त) द्रव्याचार आ गाथा वडे जाणवो.

ंणामणधोयणवामण सिक्खावण सुकरणाविरोहोणि । दवाणि जाणि छोए दवायारं वियाणाहि ।८।

नावन, धावन, बासन, जिसण, सुकरण, जे अविरोधी द्रव्यों छे ते लोकोमां द्रव्याचार जाणवो दश्चिकालीकसूत्र त्रीता अध्ययन-मां जुओ (पेट भरवाने माटे आ लोकमां जे कला शिखाय छे ते द्रव्याचार जाणवो) भावभाचार वे मकारे छे. १ लोकिक, १ लोकोत्तर तेमां लोकिक ते जैन शिवायना धर्मकृत्यों छे जे अन्यदर्शनीओ पंचरात्रि विमेरेनो करे छे ते जाणवो अने लोकोत्तर ते झानदर्शन विमेरेनो पांच मकारे जाणवो, तेमां झानाचार आठ मकारे छे.

कालमां, विनयथी, बहुमानपूर्वक, तपश्चर्यानी साथे, भणनार गुरुनो गुण न भूलतां ग्रून अर्थ अने ते बन्ने शृद्ध भणे ते आठ 🖟 मकारनो ज्ञानभाषार छे, हवे दर्शनआचार आठ मकारनो छे ते बतावे छे.

सुत्रम् वर्तमान, ए त्रण काळना सर्व क्षेत्रमां रहेनारा एटछे पंदर कर्म भूमि विगेरे स्थानमां रहेछ। तेमने पण नमस्कार कर्यो अने अनुयोग कहेनार सुपर्मस्वामि विगेरेथी छड़ने, भद्रवाहु जो निर्धुक्तिकार छे, ते पोतानाथी पूर्वना आवारोंने नमस्कार करे छे. आ नमस्कारमां एम पण आस्नाय वताव्वाथी, पोतानी स्वेच्छा दूर करी जाणवी अने पोते पण सुरु पासे जे जाण्युं ते कहुं भ जानमस्कारमां एम पण आस्नाय वताव्वाथी, पोतानी स्वेच्छा दूर करी जाणवी अने पोते पण सुरु पासे जे जाण्युं ते कहुं भ करवा' आ अव्यय वडे पूर्व अने उत्तर कियानो संवच्य छे ते वतावे छे एटछे नमस्कार करीने यथार्थ नामवाला आवार भगवत नी, निर्धुक्ति करवो. भगवत विशेषण वापर्युं छे. निर्धुक्ति एटछे निश्चय अर्थ वतावनार युक्ति तेने कहीं एटछे अंदर रहेली निर्धुक्ति मत्यक्त कहीं स्वा ए ॥ १ ॥ हवे जेवी मनिर्धुक्ति एटछे निश्चय अर्थ वतावनार युक्ति तेने कहीं एटछे अंदर रहेली निर्धुक्ति मत्यक्त कहीं स्व । १ ॥ हवे जेवी मनिर्धुक्ति करवे। निर्धुक्ति वहे विशेषाने योग्य पदाने सुद्ध वनीने आवार्य महाराज एकटा करोने कहे छे.
आयार अंग सुयखंध, बंभ चरणे तहेव सरथे य । परिण्णाए संणाए निक्खेवो तह दिसाणं च ॥ २ ॥ क्रिका च स्व विश्व कालार, अंग, अुत, स्वंप, बहा, चरण, शख्यिहा, संबा. टिका च काल्यो कि निर्धुक्ति तह दिसाणं च ॥ २ ॥ क्रिका च स्वार, अंग, अुत, स्वंप, बहा, चरण, शख्यिहा, संबा. टिका च काल्यो कि निर्धुक्ति विश्व के स्व विश्व कालार कि स्व विश्व के स

आयार अंग सुयत्वंध, वंभ चरणे तहेव सत्थे य। परिण्णाए संणाए निक्खेवो तह दिसाणं च ॥ २ ॥ अवार, अंग, अन, स्कंघ, बस, चरण, शक्षपित्रा, संहा, दिशा ए शब्दोना निक्षेपा करवा जोइए, तेमां आचार, ब्रह्म, चरण, शक्षपित्रा, ए शब्दो नोम निक्षेपामां जणवा तथा अंग, श्रुनस्कंघ, शब्दो ओथ निष्पन्न निक्षेपामां अने संहा, दिशा, ए शब्दो, सुन्नालापकनिष्पन्न निक्षेपामां जाणवा एउले दरेकना केटला निक्षेपा थाय ते बतावे छे. चरणदिसावज्ञाणं निक्खेवो चडकओ य नायद्वो। चरणंभि छिबिहो खलु सत्तविहो होइउ दिसाणं। ३। चरण अने दिशा छोड़ीने वाकीना वधा शब्दोना चार पकारना निक्षेप छे. चरणनो छ पकारनो अने दिशानो सात प्रकारनो 🛠

निक्षेप जाणवो, अर्दि क्षेत्र काळ, विगेरे ज्यां घटे त्यां योजवां ॥३॥ नाम स्थापना विगेरे चार प्रकारे वधामां व्यापे छे, ते कहे छे.
जस्थ य जं जाणिजा निकरतेवं निकरतेवे निरवसेसं । जस्थिविध न जाणिजा चउक्कं निक्सिवे तस्थ ।४॥ ज्यां एटले चरण. अने दिशा शब्दनी आदिमां जे निक्षेपो क्षेत्र काळ, विगेरे संबन्धी जाणे त्यां संपूर्ण करे ज्यां संपूर्ण न जाणे त्यां आचारांग विगेरेमां नाम स्थापना द्रव्यभाव, ए चार निक्षेपा करे आ उपदेश छे गाथार्थ भदेश अन्तरना मसिद्ध अर्थना ला- ध्याने इच्छनारां निर्धिक्तिकार गाथा कहे छे—

आयारे अंगमि य पुट्युदिहो चउक्तनिक्खेवो । नवरं पुण नाणतं भावायारंभि तं वोच्छं ॥ ५ ॥ आयारे अंगमि य पुटबुद्धि च उक्तनिक्खेवो । नवरं पुण नाणतं भावायारंभि तं वोच्छं ॥ ५ ॥ दश्वेकालिक त्रीता अध्ययननी क्षुलिक जानार कथामां आचारनो पूर्वे कहेलो निक्षेप छे, अने अंगनो चतुरंग अध्ययनमां छे. आ उत्तराध्ययननुं त्रीजुं अध्ययन छे. अहीं जे विशेष छे ते कहीए छीए, भावाचारनी अहिविषय छे ते कहा। भगाणे बतावे छे.

तस्से गृह पवत्तण, पढमंग गणी तहेव परिमाणे । समोयारे सारो य, सत्ति दारेहि नाणत्तं ॥ ६ ॥ भावाचारना एक अर्थवाळा शब्दो कहेवा, तथा कये अकारे महत्ति थाय, ते आचारनु पवर्तन थयुं ते कहेवुं तथा पहेछं हैं अंग छे ते बताववुं तथा गणी (आचार्थ) तेनुं केटला मकारमुं आ स्थान छे, ते कहेचुं तथा परिमाण बताववुं के आटलुं छे त-

For Private and Personal Use Only

सुन्नम् हिं हव सूत्र स्पात्तक निश्वक्तिः अनुगम कहवा माट मुलाना अवयवना आक्षपन नया वह समाधान वहवान छ त अनुपम छ वाय है ते एक वाय प्राप्त स्त्र नाम हिंदी है याय छे. ते सूत्र मूत्रना अनुगमोमां छे. ते बचारणक्षे तथा पर्च्छेद क्षे छे, अनंत धर्मवहे अध्यासित (युक्त) वस्तु छे. त एक प्राप्त प्राप्त होते हैं धर्मवहे दोरे छे एटले विभाग पाडे छे. ते ज्ञान विशेष 'नयो ' छे. ते नैगम विगेरे सात छे, हवे आचारांगना उपक्रम विगेरे हैं अनुयोग द्वारोनुं योग्यरीते योहुं कहेवानी इच्छावाळा वधां विद्यो शान्त करवाने तथा मंगळ माटे, तथा विद्वानोनी महत्ति माटे, हैं संबन्ध, अभिधेय, मयोजन, बतावनार निर्युक्तिनी गाथाने निर्युक्तिकार कहे छे.

वंदित्तु सद्वसिद्धे जिणे अ अणुओगयाद सब्वे । आयारस्स भगवओ निज्जुत्तिं कित्त इस्सामि ॥ १ ॥
तेमां 'सर्व सिद्धोने तथा जिनेश्वरोने वांदीने 'आ बोल्यायी मंगळ बचन छे. 'अनुयोग दायकोने कहेना वढे संबन्ध बचन थें 'अधारांगमूत्रत्तुं 'ते अभिवेय बचन छे. 'निर्धुक्ति करीक्ष. 'ते पयो मन बताव्युं. आ दुंकामां अर्थ छे. एण अवयवनां अर्थ कहे छे. 'वद ' षातु नमस्कार अने स्तुति अर्थमां छे. तेमां नमस्कार काया वढे थाय. अने स्तुति वाणी वढे थाय; आ बक्षेनो भाव मन बढे थाय, तथी मन, वचन अने काया ए त्रण बढे पण नमस्कार कर्यो जाणत्रो. हवे सिद्ध शब्दनो अर्थ कहे छे जेमने कर्मो बाळी नाख्यां ते सिद्ध, एटले सर्वथा कर्मथी रहित जीव से सिद्ध जाणत्रो, अने बधा शब्द साथे लेतां बधा सिद्ध के जाणवा, एटले पंदरभेदे सिद्ध थाय छे ते तिथ अतीर्थ, अनंतर, परंपर, विगेरे पण सिद्धोना भेद जाणवा 'ते वथा सिद्धोने न- कि मस्कार करीने ' आ संवन्ध छे. ते वधे जोडवो, राग द्वेपने जे जीते ते जीन जाणवा तेज तीर्थंकर छे, ते अतीत, अनागत, अने

॥ १३॥

निस्तंकियनिकंखिय निवितिगिच्छा अमृद्धिष्ठि य । उनवृह्धिरीकरणे वच्छछपभावणे अह ॥ २ ॥
शंका रहित, अन्यमतनी बांछा रहित, संदेह राख्या विना, अमृद दृष्टिष्रणे, भाव चढावी, पढताने स्थिर करीने, वन्धुभाव राखी, तन, मन, धननो, सदुपयोग करी, जैनधर्मनो मभाव वधारवो ते ते दर्शनाचार आठ मकारनो छे हवे चारिवाचार आठ मकारनो छे ते बतावे छे.

तिझेव य गुत्तीओ पंच समिइओ अह मिलियाओ । पयवणमाईउ इमा तसु ठिओ चरण संपन्नो ॥३॥ हैं। त्रण ग्राप्ति ते मन, वचन, कायाने, पाप व्यापारमां के धर्मना सराग विषयमां न रोकवुं ते ग्राप्ति छे. अने संभाजीने चाछवुं बो- हैं। छवुं, खोबुं, वस्तु छेवी, मूकवी, अने क्षरीर विगेरेनो मेल अयोग्य स्थाने न नासको ते पांच समिति छे. ते आठ पवचन माता है

कहेबाय छे. तेमां रहेलो चरणयुक्त रहेलो साधु कहेबाय छे.

तप आवार बार पकारनो छे ते नीचे प्रमाणे—
अणसणसृणीयरिया वित्तीसंखेबणं रसचाओ । कायिकलेसी संलिणया य बज्झो तबो होइं॥ ४॥
पायच्छितं विषाओ वेयावचं तहेब सज्झाओ । झाणं उस्सम्मो विष अब्भितरओ सबो होइं॥ ५॥
आहारत्याम, ओळुं भोजन, खावानी चीजोनुं अमाण, स्वादिष्ट वस्तुनो त्याम, कायाने कष्ट, तथा अंगने संकोची राखवुं, ए छ
पकारे बाह्य तथ छे.

स्त्रम् ॥ १३॥ आचा० ॥ १४॥ अने पापनुं मायश्रित छेवुं गुणीओनो विनय करवो, नेमने योग्य वस्तु पूरी पाडवी, धर्मज्ञान भणवुं, अश्रुभ ध्यान छोडीने नि-र्मळ ध्यान करवुं, तथा काउसग्ग करवो, ए छ प्रकारे अभ्यंतर तथ छे. वीर्याचार अनेक प्रकारे छे.

अणिगूहियबलिबरिओ परक्रमइ जो जहूत्तमाउणे । जुंजइय जहाथामं नायन्त्रो वीरियायारो ॥ ६॥ धर्मना काममां, परमार्थना काममां, पोतानुं बळ अने उत्साह यथायोग्यपणे उपयोगमां वापरे ए वीर्याचार जाणतो. जेमां धर्म-करे छे. अतिगाढ (चीकणां) कर्म जेनावढे सर्वथा चलायमान थइ जाय ते आचाल छे तेनो निक्षेपो चार मकारे छे, नाम स्थाप-अने भाव आवालमां आ पांच मकारनो ज्ञानादि आचारज जाणवो, इवे आगल शब्दनो निक्षेपो लखे छे, आगालन तेत्र समय-देशमां रहेचुं छे. तेना चार निक्षेपा थाय छे, नामस्थापना सुगम छे, द्रव्यमां क्र शरीर, भव्य शरीर, शिवाय व्यतिरिक्तमां पाणी विगेरेतुं निचाणमां रहेवातुं छे. अने भाव आगाल ते ज्ञानादिक पांच आचार छे. ते आचारो रागादि रहित आत्मामां रहे छे. हवे आकर लखे छे, तेनी अंदर आवीने करे ते आकर, तेना चार मकारे निक्षेपा छे. द्रव्य व्यतिरिक्त निक्षेपामां चांदी विगेरे

सूत्रम ॥१४॥

के ते तेगांधी मळे छे, इवे आश्वास शब्द लखे छे, जेवां आश्वास लेवाय ते, तेना वार निक्षेपामां द्रव्य व्यतिरिक्तमां यानपात्र द्विपादि (वहाण अने द्वीय हुवताने आधारभूत) भावश्वास ते ज्ञानादि छे, इवे आदर्श शब्द बतावे छे. जेम देखाय ते आदर्श, तेना नामादि चार निक्षेपामां, द्रव्यव्यतिरिक्तमां, द्र्पण, अने भावाद्रश्रहानादि पूर्वे कहेल ते छे, कारण तेनी अंदर कर्तव्यता दे खाय छे. इवे अंग बतावे छे. जेनामां प्रगट कराय ते अंग, तेमां द्रव्य निक्षेपामां व्यतिरिक्त श्वरीरना अंग, पाधुं, अना, विगेरे छे छेवां. भाव अंग ते आ, आचारमूशन छे. इवे आचीर्ग लखे छे. ते उपयोगमां छेवाना अर्थमां छे. ते आचीर्ण नामादि छ प- प्रकारे छे. द्रव्याचीर्ण व्यतिरिक्तमां, सिहादिनुं पास खावानुं छोडीने गांसनुं भक्षण छे, क्षेत्राचीर्णमां वाल्हिक देशमां मकतु (साथवो) खाय छे, अने कोकणमां पेया खाय छे. इवे काला चीर्णमां जेमके उनाळामां रसवाळो चंदननो छेप लगावे छे तथा प्राटल, सिरीश, अने मिल्लका, ए फुलो व्हालां लागे छे तेनी गाथा.

सरसो चंदणपंको, अग्घइ सरसा य गन्धकासाई । पाडलिसिरीसमिख्य पियाई काले निदाहंमि ॥१॥

भावाचीर्षमां ज्ञानादि पंचक छे, तेनो प्रतिपादक आचार प्रत्थ छे. हवे आ जाति छखे छे. जेनामांथी संपूर्ण जन्म पामे, ते चार प्रकारे छे, द्रव्यनिक्षेपामां व्यतिरिक्तमां मनुष्य विगेरे जाति छेवी अने भाव आ जातिमां ज्ञानादि आचारने जन्म आपनार अजाज प्रत्थ छे. हवे आ मोक्ष शब्द कहे छे. जेमां सर्था मूकाय ते आमोक्षण छे, ते आमोक्षना चार निक्षेपा छे. तेमां द्रव्यव्यति- रिक्तमा, हेदमांथी प्रम छुटो करवानु ते, अने भाव आमोक्षमां, आड कर्मने जदमून्त्रथी कादनार आ आचार प्रत्थ छे. उपर ब-

सूत्रम् ॥ १५॥

बंध, अनुस्रोधता, स्राप्यव, असंमोह, सद्गुण दीपन ए शास्त्रमां निश्चय करीने एकार्थना गुणो छे जिदा जुदा देशना रहेवासी कि शिष्योंने समजवामां आ पर्यायोथी अर्थनी दृढता सारी थाय छे अने बरोबर समजवाथी तेमां महत्ति हासभी थाय छे।। ७॥ कि प्रवर्तना द्वार कहे छे, भगवाने क्यारे आचार प्रथ कहो ते बतावे छे.

सञ्वेसिं आयारो तिस्थस्स पवत्तणे पढमयाए । सेसाई अंगाई एकारस आणुपुत्रीए ॥ ८ ॥ बधा तीर्थकरो तीर्थ स्थापे ते वस्तते पथम आचारनो अर्थ कहे तेम पूर्वमां अने वर्तमान अने भविष्यमां एण जाणवुं त्यारपछी बीजां अग्यार अगनो विषय कहे छे अर्थने सांभळीने शिष्योने हितार्थे गणधर भगवंतो एज अनुपूर्वीवढे सूत्रोनी रचना करे छे. ॥ ८ ॥ आ पहेलो शा माटे कह्यों ते बतावे छे.

आयारो अंगाणं पढमं अंगं दुवालसण्हंपि । इत्थ य मोक्खोवाओ एस य सारो पवयणस्स ॥ ९॥

For Private and Personal Use Only

आचा० श्री भा आचार प्रत्थ बार अंगोमां पहेलुं कहीने तेनुं कारण बतावे छे. अहीं मोक्षनो उपाय जे चरण करण छे ते बताबे छे. आ प्रवचननो सार छे कारण के ते मुख्य मोक्षनो हेतु छे; एम स्त्रीकार्युं छे. अने ए आचारमां रहेलो, बीजां अंगोनुं अध्ययन क रवाने योग्य छे. तेथी तेने पहेलुं बताब्युं छे. ॥ ९ ॥ हवे गणिद्वार कहे छे. साधुवर्ग अथवा गुणोनो गण जेने होय ते गणी अने आचारने आधीन गणिपणुं छे ते बतावे छे.

आयारिम अहीए जं नाओ होइ समणधम्मो उ । तम्हा आयारधरो भण्णइ पढमं गणिद्वाणं ॥१०॥

जे आचार, अध्ययनथी दश्च भकारनी क्षान्त्यादि अथवा चरण करण आत्मक श्रमण धर्म नाणीतो धाय छे, तेथी बचा गणिप-णाना कारणमां आचार घरपणुं पहेलुं अथवा मुख्य गिलस्थान छे ॥ १० ॥ (गिणिपणुं कोण धरावे तेनो उत्तर ए स्वव्यो के पूर् बधा गुणोमां मुख्य गुण आचार छे माटे तेनो आचार सारों होवो जोइए) इवे परिमाण बतावे छे. आ अध्ययनथी, पदथी, बे

णत्रबंभचेरमइओ, अष्टारसपयसहस्तिओ वेओ। हत्तइ य संपचचृतो बहुबहुतरओ पयगोणं ॥ ११ ॥
तेमां अध्ययनथी नव ब्रह्मचर्य नामथी अध्ययनरुप आ ग्रन्थ छे. अने पदथी अदार हजार पदरुप छे, वेदशब्दथी एम बतावेछे, के जेना बढे, होय, अने उपादेय, पदार्थीनुं स्वरूप जाणे ते वेद, आ क्षायोपश्वमिक भावमां वर्तनारों आ आचार ग्रन्थ छे (आचा- रने बदछे मूळमां वेद श्वरू बापर्यों छे) तेनी साथे पांच चृहाओं छे. तेथी पांच चुहावाळो थाय छे कहेवामां जे बाकी खुलासों है

For Private and Personal Use Only

करवानो होय ते बतावनार चुडा कहेवाय छे. तेमां पहेली सात अध्ययनवाली छे. ते आ ममाणे—
पिंडेसणसे जिरिया भासजाया य । वत्थयाएसा उग्गहपिडमिति ॥

पिंडेपणा, श्रय्या, हर्या विगेरे सात अध्ययनवाली छे, बीजी सत्त सितिकया, श्रीजी भावना, चोथी म्रुक्ति, अने पांचपी ते निशोधाध्ययन 'बहुषहुरओ पदग्गेणं'ति तेमां चार चुलिकारूप बीजो श्रुतस्कंध, जमेरवाथी बहु अने निशीध नामनी पांचमी चुलिका छमेरवाथी बहुतर, अने अनंत, गम, पर्यायरूपे बहुतम छे ते पद परिमाणवडे थाय छे [आनुं विवरण आगळ करशे]॥ ११॥ हवे उपक्रमनी अंदर समवतार हुं द्वार छे, तेमां, आ चुडाओ नव ब्रह्मचर्य अध्ययनमां समाय छे ते बतावे छे. आयारग्गाणस्थो बम्भचेरेसुसो समोयरइ । सोऽवि य सस्थ परिण्णा ऍ पिंडअस्थो समोयरह ॥ १२ ॥ सत्थपरिण्णाअत्थो छस्सुवि कायेसु सो समोयरइ । छज्जीवणियाअत्थो पंचसुवि वएसु ओयरइ ॥१३॥ अाचार अग्रनो, अर्थ ब्रह्मचर्यमा अवतरे छे, अने ते पण शस्यपिशामां समुदाय अर्थ समाय छे ॥ १२ ॥ अने शस्यपिशानो अर्थ छे ते छ कायमां समाय छे, अने छ जीवणिआनो अर्थ पंच महाव्रतमां समाय छे, ॥ १३ ॥ अने पांच महाव्रत छे ते सर्व क्रिक्नोमां समाय छे, अने सर्व पर्यायोना अनंत भागमां ए द्रव्य समाय छे. ॥ १४ ॥

सूत्रम्

॥ १९ ॥

[टीकाकारे गाथाओ सहेली समजीने टीका फरी नथी, माटे सादो अर्थ उपर लख्यो छे.] पण आचार अग्र ते चुलिकाओ जा- पूर्ण णवी, एटले एम स्चन्युं के, चुलिकाओ ब्रह्मचर्यमां समाय छे, बाकी उपर सुजब छे, तेमां द्रन्यो ते धर्मास्तिकाय विगेरे छ लेवां अने पर्यापमां अग्रुरु लघु विगेरे छे. तेमना अनंतमे भागे ब्रतोनो अवतार थाय. ॥ १२-१३-१४॥ शिष्योनो पश्च, महाब्रतोनो वधा द्रन्यमां अवतार केवीरीते थाय अने सर्व पर्यायोमां केम न थाय ? तेतुं समाधान करे छे. छजोविणया पढमे बीए चरिमे य सब्वद्व्वाई । सेसा महब्रया खळु तदेकदेसेण द्वाणं ॥ १५ ॥ छ जीवणिकाय पहेला अने बीजामां छे, अने छेल्लामां सर्व द्रव्यो छे, अने बाकीना महात्रतो द्रव्यना एक देशमां छे. इवे महा-त्रतनो उपर पूछेलो मक्ष समजावे छे. जे अभिभायबढे घेरणा करी ते बतावे छे.

णगु सब णभपएसाणंतगुणं पढमसंजमहाणं । छिबिहपरिवुड्ढीए छहाणासंखया सेढी ॥ १ ॥ अन्ने के पजाया? जेणुवउत्ता चिरत्तिविसयिम । जे तत्तोऽणंतगुणा जेसिं तमणंतभागिम ॥ २ ॥ अन्ने केवलगम्मति ते मई ते य के तद्बभिह्या? । एवंपि होज तुष्ठा णाणंतगुणत्तणं जुत्तं ॥ ३ ॥ ॥चो०॥ सेढीसु णाणदंसणपजाया तेण तप्पमाणेसा । इहपुण चिरत्त मेत्तोवओगिणो तेण ते थोवा ॥ २॥ आ गाथाओनो दुकामां अर्थ बतावे छे. (नतुने अम्याना अर्थमां छे) संयम स्थान असंख्यात छे. तेओमां जे जघन्य छे, ते

सूत्रम्

11 33 1

अाचा०

अ

अंगाणं किं सारो ? आयारो तस्स हवइ किं सारो ?। अणुओगत्थो सारो तस्सवि य परूवणा सारो ॥१६॥ अंगाणं किं सारो ? आयारो तस्स हवइ किं सारो ? । अणुओगत्थो सारो तस्सिव य परूवणा सारो ॥१६॥ अंगोनो शुं सार छे ? उ. आचार तेनो शुं सार ? उ. अनुयोग अर्थ, अने तेनो सार प्रविष्णा छे. गाथानो अर्थ सरल होनाथी किं टीका नथी फक्त अनुयोग अर्थ एटले कहेनानो निषय अने तेनी महपणा एटले पोतानी पासे छें ते बीजाने समजाववुं बळी—

পাৰা

॥ २१ ॥

सारो पहन्वणाए चरणं तस्सिविय होइ निवाणं। निवाणस्स उसारो अवाबाहं जिणा बिंति ॥ १७ ॥
प्रक्षणानो सार चारित्र (सद्धर्तन) छे. अने तेना वढे मोक्ष छे. अने मोक्षनो सार अध्याबाध सुख छे एवं जीनेश्वर देव कहे छे.
हवे श्रुतस्कंध अने पदना नामादि निक्षेपा विगेरे पूर्व माफक कहेवा, अहिंआ भाव निक्षेपानुं काम छे. ते भाव श्रुतस्कंध ब्रह्मचर्य ह्या छे. एथी ब्रह्मचरण ए वे शब्दोना निक्षेपा करवा ते करे छे.

बंभम्मी य चउक् ठवणाए होइ बंभणुष्वती । सत्तग्हं वण्णाणं नवण्ह वण्णंतराणं च ॥ १८ ॥

तेमां ब्रह्म तेना चार निक्षेपा छे. नाम ब्रह्म, ते कोइनुं नाम होय, असदभाव स्थापनामां अक्ष विगेरेमां कल्पना करवी, अने सद्भावना स्थापनामां ब्राह्मणे जनोइ पहेरी होय तेरी आकृति वाळी माटी विगेरे द्रव्यती मूर्ति होय अथवा स्थापनामां कहेवाता सम्बंधमां ब्राह्मणनी उत्पत्ति केवी थह ते बताववी ते प्रसंगने लहने सात वर्ण अने नव वर्णान्तर उत्पत्ति बताववी जोइए ते बतावेछे एक्स मणुस्सजाई रज्जुष्पत्तीइ दो कथा उसमे । तिण्णेव सिष्पवणिए सावग धम्मिम्म चत्तारि ॥१९॥ ज्यां सुधी ऋषभदेव भगवान गादीए वेठा नहोता त्यां सुधी मनुष्य जाती एकज हती. अने राज गादीए वेठा पछी भगवंतने आश्रियी जे रह्या ते क्षत्रियों कहेवाया अने बाकीना स्रोच यरवाथी अने रुदन करवाथी श्रुद्द कहेवाया अने अग्रिनी उत्पत्ति थतां तेमांथी लोहार विगेरेना शिल्प तथा वेपारनी हत्तिए ग्रजरान करवाथी वैक्ष्यों कहेवाया अने भगवानने केवळ्डान थया पछी

सूत्रम

२१ ॥

आचा०

शिक्षा पुत्र भरत महाराजाए काकणी रत्न वहें लांछन करवाथी ते श्रावको अने तेज ब्राह्मणो कहेवाया ते संबंधमां चुर्णिकार मिने मुजब कहें छे. जे राजाने आश्रयी रह्या ते क्षत्रिय कहेवाया अने बीजा गृहपति कहेवाया. ज्यारे अपि उत्पन्न थयो त्यारे प्राप्त (रांधवुं) ने आश्रयी शिल्पीओ अने वेपारी थया, तेमनां शिल्प अने वेपार वहें वैद्यो उत्पन्न थया अने जिनेत्वरे दीक्षा लीधी, अने राजगादी भरतने मळी. त्यारे जेओए श्रावकोनो धर्म स्वीकार्यो तेओ ब्राह्मण कहेवाया. तेओनुं कर्तव्य ए हतुं के लोकोने कहेता 'माहण, माहण,' अर्थात कोई अज्ञान दशाथी जीवोतुं दुःख विमारीने तेने मारे तो तेओ धर्म थिय थहने रहेता के जीवने न मारो, दुःख न दो, आबी माणसोमां धर्म दृत्ति कराववाथी तेओ माहणा, ब्राह्मणो, कहेवाया. अने जेओ शिल्प विनाना तथा धर्म रहित हता ते अमे खल छीए एवं मानीने काम पडतां हिंसा, चोरी विगेरे करतां दुःख आवतां शाचे रुए तेथी श्रद्ध कहेवाया. ए प्रमाणे त्रण जे श्रद्ध जातिओ कही, ते अने बीजी जातिओ एकवीशमी गाथा वहें बतावशे. हवे वर्ण अने वर्णान्तरथी थयेल के संख्या बतावे छे.

संजोगे सोलसगं सत्त य वण्णा उ नव य अंतरिणो । ए ए दोवि विगप्पा ठवणा बंभस्स णायद्या ॥२०॥ संयोग वढे सोळ वर्ष थइ, तेमां सात वर्ष अने नव वर्णांतर जाणवी. आ वर्ण अने वर्णान्तर एवा वे भेद स्थापना ब्रह्म जाणवा, इवे पूर्वे फहेली त्रण वर्णने अथवा पूर्वे कहेली सात वर्णने बतावे छे.

पगर्ड चउक्तगाणं तरे य ते हुंति सत्त वण्णाउ । आणंतरेसु चरमो वण्णो खल्ल होइ णायदो ॥ २१ ॥

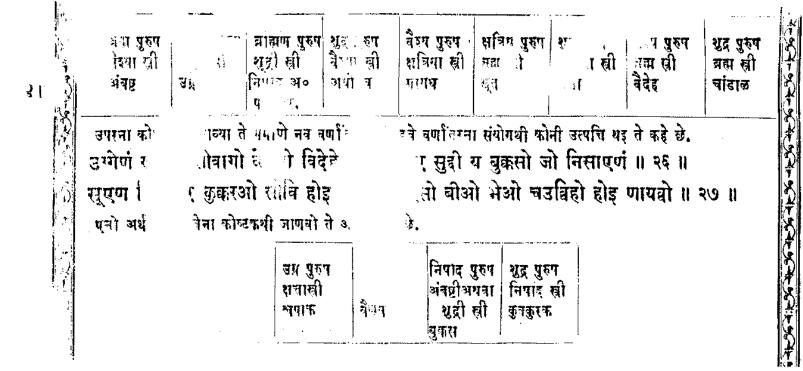
आचा०
॥ २३॥
ते योगोमां चरम वर्णनो व्यपदेश थाय छे जेमके ब्राह्मण पुरुषथी क्षत्रिय थाय विगेरे अने ते स्वस्थानमां प्रधान थि। २१॥

थाय छे. इवे नव वार्णान्तरनां नामो बतावे छे॥ २१॥

अंबद्धग्गनिसाया य अजोगवं मागहा य सूया य । खत्ता(य) विदेहाविय चंडाला नवमगा हुंति ॥ २२ ॥ अंबष्ट, उग्र, निशाद, अयोगव, मागध, सूत, क्षत्ता, विदेह, अने चांडाल ए केवी रीते, ते बतावे छे. ॥ २२ ॥ एगं अंतरिए इणमो अंबद्दो चेत्र होइ उग्गो य । बिइयंतरिअ निसाओ परासरं तंच पुण वेगे ॥ २३ ॥ पडिलोमे सुदाई अजोगवं मागहो य सूओ अ। एगंतरिए खत्ता वेदेहा चेव नायबा॥ २४॥ बितियंतरे नियमा चंडालो सोवि होइ णायद्यो । अणुलोमे पडिलोमे एवं एए भवे भेया ॥ २५ ॥ आ गाथाओनो अर्थ नीचेना लखाण उपरथी जाणवो ते आ ममाणे छे-

सूत्रभ

11 88 11



For Private and Personal Use Only

। २५ ।

स्थापना ब्रह्म पुरो थया. इवे द्रव्य ब्रह्म बतावे छे.

दव्वं सरीरभविओ अञ्चाणी विश्वसंजमो चेव । भावे उ विश्वसंजम णायद्वो संजमो चेव ॥ २८॥

इ शरीर, भन्यशरीर, शिवाय शाक्य, परित्राजक, विगेरे अन्य दर्शनीय साधुओना शरीर मात्र एटले स्नी संग त्याग पण तत्त्र वोध विनानुं ब्रह्मचर्य त्रत तथा विधवा अथवा परदेश गयेला पिताळी, अथवा पतिए दृर करेली जे स्नी इच्छा विना पण क्रूजनी मर्यादाए ब्रह्मचर्य पाळे छतां कुशील सेवनारने सहायता करे तथा कुशील बीजा पासे करावे ते द्रव्य ब्रह्म जाणानुं भाव ब्रह्म ते साधुओं सर्वथा अहार भेदे जे संयम पाळे अने इन्द्रिय निरोध करे ते. आ सत्तर भेदे जे संयम छो अंशे मळतुं छे. उपर जे अहार भेद कहा ते आ प्रमाणे. मन, वचन, कायावहे करचुं अने करावनुं अने अनुमोदनुं ए देवता संबंधी वैक्रिय शरीरथी अने मनुष्य तिर्यचीनुं आदारिक शरीर ते संबंधी एटले श्रण करण श्रण योग अने वे शरीर ए श्रणेनो गुणाकार करतां अहार भेद थाय ते देवीनी साथे काम रित सुख न भोगवे तेम मनुष्य तथा तीर्यच स्त्री साथे पण न भोगवे ते त्रण करण सहित पाळे ते ब्रह्मचर्य अहार भेदे भाव ब्रह्म जाणानुं. हवे चरणना निक्षेपा कहे छे.

चरणंमि होइ छक्कं गइमाहारो गुणो व चरणं च। खित्तंमि जंमि खित्ते काले कालो जिहें जाओ(जो उ)॥२९॥ हैं ते चरणना नाम विगेरे छ निक्षेपा छे. ते सुगम नाम स्थापना छोडीने, इ शरीर, भव्य शरीर विना द्रव्य निक्षेपे चरण त्रण प्रकारे छे. गति, भक्षण अने गुण, तेमां गति घरण ते गमन जाणवुं. आहार चरण के छाडु विगेरे खावानु छे.

सूत्रम्

॥ २५ ॥

सुण चरण वे मकारे तेमां छोकिक ते द्रव्या मार्ट हाथी गोहा विगरेनी शिक्षा छे अथवा नैयकी निगरे शिखववी अने छोको-यामं साधुओं उपयोग निना चारित्र पाळे अथा हो उगवा माटे उपरथी चारित्र पाळे, जेन उदावी तृपने मारवा माटे निनय राज साधुए बार वर्ग चारित्र पाळपूं. क्षेत्र चरा हो १ पति आहार विगरे चराण (उपयोगमां छेवाय) ते. अथवा जे क्षेत्रमां व्याख्यान कराण अने शब्दण सामान्य रीणे विचि विची क्षेत्र विगरेमां जबुं ते क्षेत्र चरण छे. अने काळ चरणां पण ते गमाणे जाणवुं. एटळे जे काळे व्याख्यान नाळे ते काळचरण माणवुं. इवे भाव चरण कहे छे. भावे गहमाहारो सुणो सुणवाओ पसरथमपसरथा। सुभाचरणे पसरथेण बंभचेरा नव हवंति ॥ ३० ॥ शाव गइमाहारा ग्रुणा ग्रुणवं आं पसंत्थमपसंत्था। ग्रु ।चरणे पसंत्थेण बंभचेरा नव हवंति॥ ३०॥
भाव वरण पण गति भाहार अने ग्रुण भेदे त्रण पकारतुं छे. गति चरणमां साधु उपयोग पणे युग मात्र (साडा त्रण हाथ)
रिश्वी देखीने भाले ते, भक्षण चरण पण शुद्ध विंड (येगाळीक दोप रहित) आहार गोचरी विगेरेमां वापरे, ग्रुण चरण ते
अम्बक्ष्मणं ि कि अने सम्पक् दृष्टिभोनो कोइपण के अभिकाप (िपाणुं) करीने चारित्र पाळे ते. अने प्रशस्तमां
नी जिना मोक्षने माटेन आह कर्म ६ तो पाटे जना समूहवालुं जे चारित्र पाळवामां आते ते.

गा वारित्रथीन अधिकार छे लेकि स्थान अने उत्तर ग्रुण स्थापनारा छे ते निर्वराने अनुकुळ अर्थ बतान ां ५ छ नं ६ तह महापरिणणा

11 09 1

अद्वमण् य विमोक्त्रोट उंवहाणसुयं९ च नवमगं भणियं। इच्चेसो आयारो आयारगाणि सेसाणि॥ ३२॥ हैं आ गाधानो अर्थ स्पष्ट छे पण एम समजवुं के आ नव अध्ययन रुप आचार छे अने बाकी जे बीजा श्रुतस्कंधनां अध्ययन छे ते अग्राणि एटले आचारने सहायता करनारां छे. हवे उपक्रममां रहेलो अर्थ अधिकार वे मकारे छे (१) अध्ययननो अर्थाधिकार, तथा उद्देशाना अर्थाधिकार छे तेमां पहेलानुं वर्णन करे छे.

जिअसंजमो^र अ लोगो जह बज्झइ जह य तं पजिह यव्वं^२। सुह दुक्ख तितिक्लाविय^३सम्मत्तं^४ लोगसारो^५ य निस्संगया^६ य छट्टे मोह समुत्था परीसहुवसग्गा^७। निजाणं^८ अट्टमए नवमे य जिणेण एवंति^९॥ ३४॥

ते शस्त परिज्ञामां आ अर्थाधिकार छे. जीव संयम एटले जीवोने दुःख न देवुं तथा हिंसा न करवी. ते वात जीवोनुं अस्तित्व समजाये छते थाय छे. तेथी जीवोनुं अस्तित्व तथा पापनी विरित्त बतावनारा अहीं अर्थ अधिकार छे. लोक विजयमां लोक जे बंधाय छे ते त्यजबुं एटले विजित भाव लोकबढे एटले संयममां रहिने साधुए अज्ञान लोक जेम कर्मथी बंधाय तेम तेणे न बंधावुं ते जाणबुं. ते आहं अर्थ अधिकार छे. त्रीजामां संयममां रहेल साधुए कसाय जीतवा वढे एटले अनुकूल अथवा मितकूल उपसर्ग आवी पडतां सुल दुःखमां मध्यस्थ भाव राखवो, चोथामां पूर्वे कहेला अध्ययनना विषयने जाणनारा साधुए तापस विगेरेना कष्ट अने तपश्चर्याना मतापे तेने आठ गुणवालुं अर्थ (अष्ट्रसिद्धि) माप्त थाय तेने देखीने पण पोताना निर्मल भावमां खलना न

सूत्रम

॥ २७ ॥

आचा०
आचा०
शास्तां दृढ सम्यक्त्वपणे रहेवुं. अने पांचमामां चार अध्ययन वहे स्थिरता करीने असार परित्यागवा वहे एटले संसारनी सुंदर वस्तुओनो मोह छोडीने त्रण रत्नरूप ज्ञान, दर्शन, चारित्र जे लोकसार छे तेमां उद्यमवाळा थवुं. छहामां पूर्वे कहेला सुणवाळा साधु निःस्वार्थ बनीने अमितवद्ध स्वरुपे थवुं. सातमामां संयमादि सुणयुक्त साधुने पूर्वना पापना उदयथी मोह उत्पन्न करनारा पिराप्त अथवा उपसमे थाय तो सम्यक् भकारे सहन करवा. आठमामां निर्याण छे. ते अंतिक्रिया सर्व सुणयुक्त साधुए सारी रीते करवी. नवमामां पूर्वे कहेला आठ अध्ययनमां जे जे अर्थ छे ते शासन नायक वर्द्धमान स्वामीए बरोवर पाळ्यो छे. अने ते बीजा साधुओ बरोवर उत्साहथी पाळे तेथीं बताच्यो छे. ते कह्युं छे के—

तित्थयरो चउणाणी सुरमहिऔं सिज्झियबयधु वंमि । अणिगूहियबलविरिओ सबत्थामेसु उज्जमइ ॥ १ ॥ किं पुण अवसेसेहि दुःवलक्षयकारणा सुविहिएहिं। होति न उज्जमियव्वं सपचवायंमि माणुस्से ॥ २॥ कि पुण अवस्ताह दुन्तलनलननगरना द्वानाव निर्माण कर कर तो विश्व करीने मोसमां जनार छे छतां पण शक्ति प्रमाणे बळ अने विश्व करवाने वाकीना सुविहित पुरुषोए लाजीवाळा मोस मार्ग माटे विद्यवाळा मनुष्य जन्ममां उद्यम करे हो तो दुःखोना सय करवाने वाकीना सुविहित पुरुषोए लाजीवाळा मोस मार्ग माटे विद्यवाळा मनुष्य जन्ममां उद्यम केम न करवो; (आ वे गाथानो परमार्थ ए छे के तीर्थकर ज्ञानथी जाणनारा अने देवोथी पूजित छतां मोझने माटे उद्यम करे तो बीजा डाह्या पुरुषे मनुष्य जन्ममां सुखने बदछे अनेक दुःख आवनारां जाणीने शा माटे

For Private and Personal Use Only

मीक्ष आपनारा चारित्र पर्ममां पोतानी संपूर्ण शक्तिथी उद्यम न करवो ?) हवे उद्देशानो अर्थाधिकार शस्त्र परिज्ञानो आममाणे छे. जीवो छक्कायपरुत्रणाय तेसिं वहे य बंधोत्ति । विरईए अहिगारो सत्थपरिण्णाएँ णायद्यो ॥ ३५ ॥ तेमां पहेला उद्देशामां सामान्यपणे जीवनुं अस्तित्व सिद्ध करवुं. अने बाकीना उद्देशामां विशेष मकारे पृथिवीकाय विगेरेनुं अ- स्तित्व बताववुं. अने बधाओने छेडे जे कर्मनु बंधन छे तेनी विरित्त बताववी. आ छेडे मुकेल होवाथी मत्येक उद्देशाना विषयमां जोडवुं. पहेला उद्देशामां जीवनुं वर्णन, तेना वधथी बंधन, अने तेनाथी पाछा हठवुं ते विरित्त छे. अहि शस्त्र परिक्षा ए नाममां वे पद छे. तेमां पहेला शस्त्र पदना निक्षेषा बतावे छे. दव्वं सत्थिगिविसन्नेहंविलखारलोणमाईयं । भावो य दुप्पउत्तो वायाकाओ अविरई या ॥ ३६ ॥

शस्त्रना निक्षेपा नाम विगेरे चार प्रकारे छे. व्यतिरिक्त द्रव्य शस्त्र ते तलवार विगेरे अप्नि, विष, स्नेह, (धी तेल विगेरे) अम्ल क्षार, लवण, (मीठुं विगेरे) छे. भावशस्त्र ते दुष्ट ध्यान छे एटले अंतःकरण तथा वचन अने कायामां जे अविरित छे. ते जी-बोने घात करनारी होवाथी दुष्ट छत्ति छे ते भावशस्त्र जाणवुं हवे परिज्ञाना पण चार निक्षेपा कहे छे.

द्व्य जाणण पश्चक्खाण दावए सरीर उवगरणे। भावपरिणणा जाणण पश्चक्खाणं च भावेणं॥ ३७॥ द्वय परिज्ञा वे मकारे छे. तेमां इ परिज्ञा अने मत्याख्यान परिज्ञा छे. इ परिज्ञाना वे भेद छे. आगमथी अने नो आगमथी। आगमथी आगमथी ज्ञाता पण तेनो उपयोग न होय, नो आगमथी प्रण प्रकारे छे. तेमां इ शरीर अने भव्य शरीर शिवाय व्यतिरिक्त द्रव्य दव्वं जाणण पश्चक्खाणे द्विए सरीर उवगरणे । भावपरिण्णा जाणण पश्चक्खाणं च भावेणं ॥ ३७ ॥

अश्चाः

शिक्षा जे कंइ द्रव्यने जाणे तेमां सचित्त आदिनुं ज्ञान थाय तेथी ते परिच्छेय द्रव्यना प्रधानपणाथी द्रव्य परिज्ञा छे. तेज प्रमाणे परियाख्यान परिज्ञा पण जाणवी. तेमां व्यतिरिक्त द्रव्य परिज्ञामां पण ने प्रकार छे. ज्ञ परिज्ञा अने उपकरण ते हैं स्वाहरण निगेरे छेवां. कारण के ते साधकतम पणे छे. अने भाव परिज्ञामां पण ने प्रकार छे. ज्ञ परिज्ञा अने परिवाख्यान परिज्ञा छे. तेमां आगमथी ज्ञाता अने उपयोग राखवावाळो जाणवी अने नो आगममां आज्ञान क्रियाख्य अध्ययन छे. तो शब्दनो अर्थ शिक्ष अने ज्ञान ए मिश्रपणुं बोळनार अर्थ छे. तेज प्रमाणे पत्याख्यान भाव परिज्ञाने पण जाणवी. आगमथी पूर्व प्रमाणे छे. क्रिया अने ज्ञान ए मिश्रपणुं बोळनार अर्थ छे. तेज प्रमाणे पत्याख्यान भाव परिज्ञाने पण जाणवी. आगमथी पूर्व प्रमाणे छे. क्रियाखं अध्यात्वावां, ज्ञान प्रमाणे प्रत्याख्या प्राप्ते व्यव्य प्रत्याख्या प्राप्ते व्यव्यक्त हुप जाणवी. ते मन वचन अने कायाए वण योग अने कृत. कारित अने अनुपति (करवुं क्रियाखं) अरो हे स्वाह्म प्राप्ते व्यव्यक्त हुप जाणवी. ते मन वचन अने कायाए वण योग अने कृत. कारित अने अनुपति (करवुं क्रियाखं) अरो हे स्वाह्म प्राप्ते व्यव्यक्त हुप जाणवी. ते मन वचन अने कायाए वण योग अने कृत. कारित अने अनुपति (करवुं क्रियाखं) अरो हे स्वाह्म प्राप्ते व्यव्यक्त हुप जाणवी. ते मन वचन अने कायाए वण योग अने कृत. कारित अने अनुपति (करवुं क्रियाखं) अरो हिस्त करे से अने ते सहेलथी समजाय माटे द्रष्टांत बतावी विधि कहे छे.

जैम कोह राजाए पोतानुं नवुं नगर स्थापवानी इच्छाथी जमीनना भागो करीने सरखे भागे मधानोने आप्या. तेज ममाणे क्रि कचरो दुर करवा श्रुख (कांटा विगेरे) दूर करवा तथा जमीन सरखी करवा पाकी इंटोना चोतरावाळो महेल बनाववा तथा रत्न क्र विगेरे ग्रहण करवा उपदेश आप्यो. तेथी ते मधानोए राजाना उपदेश ममाणे पोतानुं कार्य करीने राजानी महेरबानीथी इच्छित भोगोने भोगव्या. आ दृष्टांत छे. तेना उपस्थी एम समजबुं के राजा समान आचार्य प्रधान समान शिष्य गणोने भूखंडरूप संयम के तेने बरोबर समजावीने मिध्यात्वादि कचरो दूर करी सर्व उपाधिथी शुद्धने दीक्षा आरोपीने सामायिक संयममां द्रढ करीने पाकी

'सुयं मे आउसं तेणं भगवया एव मक्खायं-इहमेगेसिं णो सण्णा भवइ' (सू० १)

सूत्रना गुणो बताच्या पछी पहेलुं सूत्र उपर बतान्युं छे 'सुयंमें 'इत्यादि आ सूत्रनी संहितादि क्रमवडे न्याख्या करे छे. तेमां 📡

(१) संहिता ते आखं शुद्ध सूत्र उचारवुं जोइए ते बताब्युं. हवे (२) पदच्छेद करे छे. श्रुतं, मया, आयुष्मन्! तेन भगवता, एवं अष्ट्यातम्, इह. एकेषां, नोसंज्ञा, भवति, आमां छेवटनुं पद क्रियापद छे. बाकीनां नाम, सर्वनाम, विशेषण, विगेरे छे. पदच्छेद सूत्र अनुगम कहा पछी हवे सूत्रना पदार्थ कहे छे. एटले मूळ ग्रंथकर्ता भगवान सुधर्मस्वामी पोताना मुख्य शिष्प जंबू-

खामीने आ ममाणे कहे छे. में भगवान महावीर पासे आ ममाणे सांभळखं छे (तेम कहेवाथी ग्रंथकारे पोतानी बुद्धिवडे कहेवानो निषेध करेंग छे. पण सर्वज्ञ महावीरे जे कहां ते पोते कहे छे.)

॥ ३२ ॥

है आयुष्पन्! (जाति विगेरे उत्तम गुण होय छतां पण शिष्यनुं आउलुं जो छांबु होय तो पोते सारी रीते भणीने बीजाने भणावी सके माटे आ शिष्यने आशिर्वादनुं वचन छे) में सांभळ्युं छे पण परंपराए निह.

अहिआं आचार सूत्र कहेवानी इच्छाथी तेनो अर्थ तीर्थिकरे कह्यो होवाथी 'तेन ' सन्दवहे आयुष्पन् विशेषण तीर्थिकरने पण छातु पहे, अथवा 'आमृश्वता' शन्दवहे सुप्तांस्वामी पोते पण समजाय, एटले भगवानना चरणने स्पर्श करता एवा में सांभळयुं तेथी ग्रहनो विनय वतान्यो तथा 'आवसता' सन्दवहे ग्रह पासे रहीं में सांभळयुं तेम तमारे पण ग्रहकुळ वास सेववो एम स्वन्युं. अर्थी जाणवा भगवत् शन्द ऐत्वर्थ आदि छ उत्तम ग्रणो युक्त भगवान छे एम सूचन्युं. अने कह विधिए कह्युं ते 'तेन' सन्द बहे जाणवुं. आख्या ताणवा भगवत् शन्द वहे कृतकत्व (कर्चा पणुं) द्र करवा वहे आगमृतुं अर्थथी नित्यपणुं कह्युं. 'इह' शन्द वहे आ क्षेत्र, 'प्रांत करवा स्वास्त साम्म परिवाणों संस्त है स्वास वहे आगमृतुं अर्थथी नित्यपणुं कह्युं. 'इह' सन्द वहे आ क्षेत्र, मवचन, आचारमां, अथवा शक्ष परिज्ञामां संबंध छे अथवा आ संसारमां केटला जीवो जे ज्ञानआवरणीय आदि आठ कर्म युक्त छे तेमने संज्ञा (समृति) यती नथी. आ पदार्थ बताच्यो छे इवे पदिवासहमां समास न होवाथी बताच्यो नथी. इवे चालना एटले शंका थाय ते कहे छे.

शका याय त कह छ.
अकार विगेरे निषेध करनारा लघु शब्दनो संभव अहि थाय छतां शा माटे नो शब्द निषेध माटे वापर्यो ? इवे मित अवस्था क्रिं (समाधान) करे छे. तमारुं कहेबुं ठीक छे. पण अहि नो शब्द वापरवामां भेक्षापूर्वकारिता (विशेष हेतु) छे ते वतावे छे. जो

अकार विगेरे लड्ए तो सर्व िषेष थाय जेम घट निंद ते अघट तथी घटनो बिलकुल निषेष थयो पण तेवो अर्थ छेवो नथी कार-णके मज्ञापना सुत्रमां दन्न संज्ञा सर्व माणीओने बतावी छे ते वधानो अकार शब्दथी निषेष थाय हवे दन्न संज्ञा बतावे छे. गौतम स्वामीना मश्नमां महावीर भगवान उत्तर आपे छे. दन्न संज्ञा छे. सांभळो-(१) आहार (२) भय (३) मैथुन (४) परिग्रह (५) कोष (६) मान (७) मापा (८) लोभ (९) ओघ (१०) लोकसंज्ञा. आ दन्ने संज्ञानो सर्वथा निषेष थाय छे ते न थाय माटे 'नो' शब्द वापर्थों, 'नो' शब्दनो अर्थ सर्व निषेषवाची पण छे. तेम थोडो निषेष पण बतावनार छे. जेमके 'नो' घट बोलतां घटनो अभाव समजाय तेम मकरणादि मसकतनुं विधान पण थाय ते विधीय मान करतां मितपेध्य अवयव ब्रीवादि निषेध करवाथी बीजो समजाय अथवा घटने बदले पट विगेरेनी मतीति थाय.

प्रतिषेधयति समस्तं प्रसक्तमर्थे च जगति नोशब्दः । स पुनस्तद्वयवो वा तस्मादर्थान्तरं वा स्याद् ॥ १ ॥ आ श्लोकनो भावार्थ उपर आबी गयो छे. अहिआं पण सर्व संज्ञानो निषेत्र फरवो नयी पण जे विश्विष्ट संज्ञा एटले जेनावडे 🦨 आत्मादि पदार्थनुं स्वरूप जेमां जीवोनुं एक गतिमांथी यीजी गतिमां गमन केवी रीते थाय छे तेनी संद्रा (ज्ञान) केटलाक जीवोने नथी एम 'नो' शब्दवडे बतावतुं छे. हवे निर्युक्तिकार सूत्रना अवयवोना निक्षेपानो अर्थ बतावे छे.

दव्वे सचित्ताई भावेऽणु भवणजाणणा सण्णा । मित होइ जाणणा पुण अणुभवणा कम्मसंजुत्ता ॥ ३८ ॥ र्रे संज्ञा शब्द नामादि भेदथी चार मकारे छे. नामस्थापना सुगम छे अने द्रव्यमां ज्ञन्नरीर भव्य श्वरीर छोडीने व्यतिरिक्तमां सचित्र

सूत्रम्

For Private and Personal Use Only

अवित्त अने पिथ्र एम अण भेद छे. सचित्त ते हाथ विगेरे द्रव्यथी पान भोजन विगेरेनी संझा कराय ते, अवित्त ते ध्वजादिशी, अने मिश्रयी ते दीवा विगेरेथी जे संझानों बोध थाय ते जाणवी.
भाव संझामां अनुभव अने झान संझा छे. तेमां थोड़ कहेवानुं होवाथी झान संझा बतावे छे. मनन एटले मित ते अवबोध छे.
ते मित्रज्ञान विगेरे पांच भेदे छे. एटले झानना पांच भेदमां केवल्रज्ञान सायिक भावमां छे. अने मित, श्रुत, अवित्त, अने मत्तवर्यय ए चार झान सय जयशम भावमां छे. ते सायिकी अने सायजयशमिकी संझाओ जाणवी अने अनुभव संझामां पोताना करेला कर्तव्योधी तेनां फल भोगवतां जीवोने जे बोध थाय छे ते अनुभव संझा जाणवी. तेना सोळ भेद छे ते बतावे छे.
आहार भय परिग्गह मेहुण सुख दुकख मोह वितिगिच्छा। कोह माण माय लोहे सोगे लोगे य धममोहे ॥३९॥
आहारनी इच्छा ते आहार संझा, आ संझा तेजस झरीर नामना कर्मना जदयथी अने असाता वेदनी थतां सर्वे संसारी जीवोने
ओछा वधता ममाणमां श्रुत्व लागे छे ते जाणवी, भय संझा ते आसरुप जाणवी. परिग्रहसंझा ते मुर्छांच्य जाणवी. मेथुन संझा ते
श्री पुरुषने परस्पर भेम थाय ते पुरुष वेद विगेरे जाणवा. आ मोहनीय कर्मना जदयथी थाय छे. सुख दुःख ए वे संझाओ साता
क्रिया क्रिया विविक्तित्सा संझा ते

आहारना इच्छा त आहार सज्ञा, आ सज्ञा तजस शरार नामना कमना उदयथा अन असाता बदना यता सब ससारा जावान अोछा बधता ममाणमां भ्रुख छागे छे ते जाणबी, भय संज्ञा ते न्नासरुप जाणबी. परिग्रहसंज्ञा ते मुर्छोरुप जाणबी. मैथुन संज्ञा ते स्थि पुरुषने परस्पर मेम थाय ते पुरुष वेद विगेरे जाणबा. आ मोहनीय कर्मना उदयथी थाय छे. मुख दुःख ए वे संज्ञाओं साता अने असातारुपे अनुभवतां वेदनीय कर्मना उदयथी छे. मोह संज्ञा ते मिथ्या दर्शनरुप मोहना उदयथी छे विचिकित्सा संज्ञा ते चिचनी विष्कुति (भ्रमणा)थी मोहना उदयथी तथा ज्ञानावरणीयना उदयथी छे. क्रोभ संज्ञा अभीतिरुप, मान संज्ञा गर्थरुप, माया संज्ञा वक्ततारुप, अने छोभ संज्ञा युद्धरूप छे. श्लोक संज्ञा विमछाप तथा वैमनस्परुप छे. आ वथी मोहना उदयथी जाणबी. छोक

॥ ३५॥

संज्ञा पोतानी इच्छाथी गमे तेम विकल्प करीने लोकोमां आचरण थाय छे ते, जेमके पुत्र विनाना पाणीने लोक (स्वर्गनी पाति)
निथी. क्वतरा छे ते यक्ष छे. विम देवो छे. कागडा दादाओं छे. मोरोना पींछाना वापरवाथी गर्भ रहे इत्यादि केटलीक वातो ज्ञान आवरणना क्षय उपश्चमथी तथा स्वार्थरूप मोहना उद्यथी संज्ञा थाय छे.

धर्म संज्ञा श्रमा राखनी विगेरे उत्तम छे ते मोहनीय कर्मना क्षय उपञ्चमथी थाय छे, ए सामान्यपणे लेवाथी पंचेन्द्रिय सम्यक्ष्टि तथा मिध्यादिष्ठिओंने पण होय छे. पण ओघ संज्ञा ते अन्यक्त उपयोग रूप छे. ते वेलाना समृहनुं उपर चडवापणुं विगेरे चिन्ह रूप छे. ते ज्ञानावरणीय कर्मनुं थोडुं क्षय उपञ्चम थतां आ संज्ञा थाय छे तेम जाणवुं पण आपणे तो पहेलां कहेली ज्ञान संज्ञानी जरुर होवाथी तेनो अधिकार छे. अने तेनो निषेध पर्यो जाणवो के केटलाक जीवोने गति आगतिनुं ज्ञान नथी. हवे निषेध संज्ञानोवोध थवा माटे सूत्र कहे छे—

तंजहा-पुरित्थमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, पचित्थि माओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, अहोदिसाओ वा आगओ अहमंसि, अण्णयरीओ वा दिसाओ अणुदिसाओ वा आ-गओ अहमंसि, एवमेगेसिं णो णायं भवति (सू० २)

माम, स्थापना द्रव्य क्षेत्र, ताप, मजापक, भाव, एम सात रुपे दिशानो निक्षेपो जाणवो, सचित्त आदि कोइ वस्तुनुं दिशा एउं नाम, ते नाम दिशा. चित्रमां छखेछ जंबूढीप विगेरेना नकशामां दिशाना विभाग स्थापवा ते स्थापना दिशा छे. हवे द्रव्य दिशानो निक्षेपो कहे छे. तेरसपएसियं खळु तावइएसुं भवे पएसेसुं। जं दब्वं ओगाढं जहण्णयं तं दसदिसागं॥ ४१॥ तरसपए।सय खलु ताबइएसु सव पएससु । ज ५०व आगाढ जरुण्यम त ५ता५ताम ॥ ०० ॥ द्रव्यदिशा आगमथी अने नो आगमथी एम वे प्रकारे छे. आगमथी दिशानो जाणनारो पण उपयोग न राखे, अने नो आगमथी श्री श्री श्री भन्य श्रीर छोडीने न्यतिरिक्त तेर प्रदेश बाद्धं द्रव्य तेने आश्रयी निश्चे आ प्रवर्ते छे ते, तेर प्रदेशमां रहेलुंज. ते द्रव्य दिशा

अाचा०
भिक्त पर दश दिशावाळ केटलाके कहेल छे ते न छेबुं.
भदेश पर छे परमाणुं तेमना वढे उत्पन्न थयेल कार्य द्रव्य तेटला मदेशो एटले क्षेत्रना तेटला मदेशोमां रहेलुं सौधी नातुं द्रव्य अश्रयीने दश दिशानो विभागनी परिकल्पनाथी द्रव्य दिशा जाणवी. तेनी स्थापना आ ममाणे छे. जण बाहुकवाळा नव मदेश विजीने चारे दिशामां एक एक प्रहानी दृद्धि करवी. हवे क्षेत्र दिशा कहे छे.
अड पएसो रूपगो तिरियं लोयस्स मज्झयारंमि । एस पभवो दिसाणं एसेव भवे अणुदिसाणं ॥ ४२ ॥

तिर्पक् स्रोकना मध्य भागमां रत्नवभा पृथिवीना उपर बहुमध्य देशमां मेरु पर्वतना अंतरमां वे सौथी नाना प्रतर छे. एना उपर चार मदेश गायना स्तनना आकारे अने निचे पण तेतीज रीते चार एम आठ मदेशनो चोखुणो रुचक नामनो भाग छे. त्यांथी है दिशा अने अनुदिशाओनी महत्ति यह छे तेनी स्थापना आ ममाणे छे. तेओनां नामो कहे छे.

इंदरगेई जम्मा य नेरुती वारुणी य वायद्या। सोमा ईसाणावि य विमला य तमा य बोखवा ॥ ४३ ॥ एमां इंद्रना विजय द्वारने अनुसरीने पूर्व दिशा जाणवी. बाकीनी मदक्षिणाथी सात जाणवी, उंची ते विमळा अने नीची ते तमा जाणवी. एमनं स्वरूप बतावे छे.

दुपएसाइ दुरुत्तर एगपएसा अणुत्तरा चेव। चउरो चउरो य दिसा चउराइ अणुत्तरा दुण्णि ॥ ४४ ॥
चार महा दिशा में बन्ने मदेश भावि बने मदेश उत्तरे वये ही भने चार विदिशा मो एक मदेश रचनारुप एमां उत्तर हृद्धि नथी।

अने उंची नीची दिशानुं जोडकुं ते अहुत्तर छे ते चार भदेश विगेरे रचनावाछं जाणवुं वळी—
आचा०
अाचा०
असो साईआओ बाहिरपासे अपज्ञवसिआओ। सवाणंतपप्सा सवा य भवंति कडजुम्मा ॥ ४५ ॥
ए वधी ए मध्यमां सादिक छे, कारण के रुचकने लीधे छे. अने वहारथी अलोकने आश्रमी रहेवाथी अपर्य वसित (अनन्त) छे, देशे पण दिशाओं अनन्त भदेशात्मिका याय छे. अने वधी दिशाओमां जे मदेशों छे. ते चारे भागे भागतां चार चार शेगवाळा याय छे ते वसा मदेशरूप दिशाओं आगमनी संद्राए कह जुम्मा शब्दवडे बोलाय छे आगममां आ ममाणे छे. "कइ णं भंते! जुम्मा पण्णता? गोयमा! चत्तारि जुम्मा पण्णता तंजहा कडजुम्मे तेउए दावरजुम्मे किलोए से केणहेणं भंते! एवं बुचइ? गोयमा! जे णं रासी चउक्तगावहारेणं अवहीरमाणे अवहीर-माणे चउपज्जवसिए सिया से णं कडजुम्मे एवं तिपज्जवसिए तेउए दुपज्जवसिए दावरजुम्मे एगपज्जव-

गीतमस्वामी पूछे छे हे भगवन! फेटला युग्म कहा छे? उत्तर-हे गीतम चार युग्म कहा छे (१) कृत युग्म (२) त्र्योज (३) है द्वापर युग्म (४) कल्योम युग्म. पश्च. क्षा माटे एम कहो छो? उत्तर. हे गीतम-जे राशीमांथी चार चार लड्डए तेमां जेटला चार सार कोच रहे ते कृत युग्म जाणवो, क्षण मदेश क्षेत्र तो त्र्योम, वे वधे तो द्वापर, अने एक वधे तो कल्योम, युग्म एम जाणवुं. हवे

For Private and Personal Use Only

सगडुद्धीसंठिआओ महादिसाओ हवंति चतारि । मुत्तावली य चउरो दो चेव हवंति रुपगनिभा ॥४६॥ पूर्व विगेरे चार मोटी दिशाओ शकट उद्धी (गाडाना उंटडाना आकार) संस्थान बाळी छे. अने विदिशाओ मुक्तावळीना आ-कारे छे. अने उंची नीची वसे दिशाओ रुपक आकारे छे. इवे ताप दिशाओ वतावे छे. जस्स जओ आइचो उदेइ सा तस्स होइ पूद्यदिसा । जत्तो अ अत्थमेइ उ अवरदिसा सा उ णायदा ॥४७॥

दाहिणपासंमिय दाहिणा दिसा उत्तरा उ वामेणं। एया चत्तारि दिसा ताविवत्ते उ अक्लाया ॥ ४८ ॥ इवे जो दिशामां मूर्य उदय थड़ने ताप आपे तेने पूर्व दिशा अथवा ताप दिशा कहेवी. अने ज्यां मूर्व आथमे ते पश्चिम दिशा. पूर्व तरफ मीं फरीने उभा रहीए तो जमणी बाजुनी दक्षिण अने डाबी बाजुनी उत्तर दिशा जाणवी. आ वधा व्यपदेशों छे. कारण के एक बीजाने आश्रयी आपूर्व विगेरे दिशाओं छे. तेवा बीजा पण व्यपदेशों छे. ते मसंगने लीधे बतावे छे.

जे मंद्रस्स पुरुवेण मणुस्सा दाहिणेणं अवरेण। जे आवि उत्तरेणं सब्वेसिं उत्तरो मेरू ॥ ४९ ॥ सन्वेसिं उत्तरेणं मेरू लक्ष्णो य होइ दाहिणओ । पुन्वेणं उद्देई अवरेणं अत्थमइ सूरो ॥ ५० ॥ मेरुपर्वतना पूर्वथी जे मनुष्यो क्षेत्र दिशाने अंगीकार करे छे. ते रुचकनी अपेक्षाए जाणबी. तेओना उत्तरमां मेरु अने दक्षिणमां

अवा समुद्र जाणवो, आ ममाणे ताप दिशा स्वीकारी छे (अहंआं समजवानुं छे के आपणे जंब्रीपना दक्षिणमां भरतक्षेत्रमां छुर्ए एटछे आपणी अपेक्षाए ऐरहत क्षेत्र उत्तरमां छे. पण एज मेरूनी अपेक्षाए आपणो तेनी उत्तरमां छीए कारण के सूर्य गोळा-कारे फरतां आपणी जे पश्चिम तेज तेमनी पूर्व दिशा थाय छे विगेरे गुरु गमथी जाणवुं) हवे मज्ञापक दिशा कहे छे.

जरथ य जो पणणवओं कस्सवि साहइ दिसासु य णिमित्तं। जत्तोमुहो य ठाई सा पुद्रा पच्छओं अवरा ॥ ५१ ॥

प्रजापक (बोलनारो) कोइपण जगाए उभेलो होय ते दिशाओंना बळथी कंइपण निमित्त कहे ते जे दिशामां सन्मुख बेसे ते

पूर्व अने पाछळनी अपर (पश्चिम) जाणत्री. निमित्तनो कहेनारो आ उपलक्षणथी अन्य पण कोइ बीजो व्याख्यान करे ते पण तेमां गणवो. इवे बीजी दिशाओं साथवाने कहे छे. दाहिणपासंमि उ दाहिणा दिसा उत्तरा उ वामेणं । एयासिमन्तरेणं अण्णा चत्तारि विदिसाओ ॥५२॥ एयासिं चेव अडण्हमंतरा अड हुंति अण्णाओ । सोलस सरीरउस्तय बाहला सन्वतिरियदिसा ॥५३॥ हेटा पायतलाणं अहोदिसा सीसउविरमा उड्ढा । एया अट्टारसवी पण्णवगदिसा मुणेयव्वा ॥५४॥ एवं पक्षिपआणं दसण्ह अट्टाण्ह चेव य दिसाणं। नामाइं बुच्छामि जहकमं आणुपुव्वीए ॥५५॥ पूटवा य पुटवदक्षिलणदिक्षिण तह दिक्लिणावरा चेव । अवराय अवरउत्तर उत्तर पुट्युत्तरा चेव ॥५६॥

সাৰা৹

सामुत्थाणी कविला खेलिजा खलु तहेव आहिधममा। परियाधम्मा य तहा सावित्ती पण्णवित्ती य ॥५७॥ हेट्टा नेरइयाणं अहोदिसा उवरिमा उ देवाणं। एयाई नामाई पण्णवगस्सा दिसाणं तु ॥ ५८॥ ए सात गाथाओ सरल छे छतां अर्थ बताबीए छीए (पण टीका करी नथी) पूर्व दिशा तरफ मोढुं करीने उमा रहीए तो जमणे हाथे दिश्वण दिशा अने डाबे हाथे उत्तर दिशा जाणवी. दरेक बे दिशानी बचमां चार विदिशा (खुणाओ) जाणवा ॥ ५२॥ ए अवनी बचमां बीजी आढ दिशाओं छे. ते मळीने सोळ जाणवी. शरीरनी उंचाइना ममाणमां सर्वे तिर्थक्र दिशाओं जाणवी. ५२. छोकनुं स्वरुप मनुष्याकारे छे. पम पहोळा करीने उमा रहेतां वे पमनी बच्चेनो भाग ते अथा (नीची) दिशा जाणवी. अने मायाना उपरती उर्ध्व (उंची) दिशा जाणवी तेनुं बीजुं नाम विमळा छे. आ अहार दिशाओ मज्ञापना दिशाओ जाणवी. ५४. आ विपाणे कि किल्यत दश अने आठ मळी अहार दिशाओ छे. तेना नाम अनुक्रमें कहुं छुं. ५५. पूर्व, पूर्व दक्षिण, दक्षिण पश्चिम, पश्चिम पश्चिमों त्तर, उत्तर, उत्तरपूर्व, समुत्थाणी, कपिला, खेलिजा, अहिधर्मा, पर्याधर्मा, सावित्री, मज्ञावित्री, नरकनी हेटे अथोदिशा छे अने देवलोकनी उपर उर्ध्व दिशा छे. आ नाम मज्ञापना दिशानां छे ५६. ५७. ५८. इवे एमनां संस्थान (आकार बतावे छे) सोलस तिरियदिसाओ सगडुद्धीसंठिआ मुणेयद्या । दो मछगग्रूलाओ उड्ढे अ अहेवि य दिसाओ ॥५९॥
सोले तिर्वेक् दिशाओ शकट उद्धि (गाडाना उंटडा) ना आकारे जाणवी. एटले महापकना मदेशमां सांकडी अने बहार पढ़ोली
छे, नारकी अने देवलोकनी नीचली अने उपली दिशाओ करावला (चपणीआ)ना आकारे जाणवी. कारण के माथाना मूळमां अने

सूत्रम्

1 88 1

पगना मूळमां नानी होवाथी महन्द अने बुद्दन, (तळीआ) ना आकारे जती विशाळ थाय छे. आ बचानुं तात्पर्य यंत्रथी माणवुं क (यंत्र मळ्युं नथीं) हवे भाग दिशा बतावे छे.

मणुया तिरिया काया तह उगा श्रीया च उक्का च उरो। देवा नेर इया वा अहरस होति भाविदसा॥ ६०॥
मणुया तिरिया काया तह उगा श्रीया च उक्का च उरो। देवा नेर इया वा अहरस होति भाविदसा॥ ६०॥
मनुष्यना चार भेद थाय छे (१) संपूर्छन (प्रश्पादिकना मळ मूज्शी जन्मेला) (२) कर्म भूमिना गर्भन (३) अकर्मभूमिना पर्भन (४) अंतर्डिपना गर्भन, ते भमाणे तिर्थनोमां वे इंद्रियनाळा, त्रण इंद्रियनाळा, चार इंद्रियनाळा अने पांच इंद्रियनाळा ए चार भेदे छे. अने पृथिनी, पाणी, अग्नि, वायु, ए चार काया छे. तथा वनस्पतिकायमां, अग्नि, मूळ, स्कंघ अने पर्ने, ए चारमां ज्यां बीज होय ते नीज प्रमाणे चार भेद थया. तेमां नारकीय अने देवने उमेरतां अहार भेदे जीवनां ज्यापे के (आ अहार भेदे जीव वतां विवास के प्रमाण विवास के तथी तेने नार्युक्तिकार साम्रात् वतां वे छे. कारणके भाविदशाथी अविनाभावी (साथेज रहेनारी) प्रसंगना साप्रध्येथी अधिकृतज छे तथी तेने माटेज बीजी दिशां-

ओ चितवीए छीए. पण्णवगदिसद्वारस भाव दिसाओऽवि तत्तिया चेव । इकिकं विधेजा हवन्ति अद्वारसऽद्वारा ॥ ६१ ॥ पण्णवमित्साए पुण अहिगारो एत्थ होइ णायदो । जीवाण पुग्गलाण य एयासु गया गई अत्थि।६२।

पद्मापकनी अपेक्षाए अदार मेदे दिशा छे. अने अहं भावदिशा पण तेज प्रमाणे पत्येक संभवे छे. एथी एकेक महापक दिशाने मावदिशाना अदार अंक वहे गुणवा. तेनी संख्या १८×१८=३२४ एमां उपलक्षणथी तापितशा विगेरेमां पण यथा संभव योभ्याने कला करवी. क्षेत्र दिशामां पण चार महादिशाओनों संभव छे पण विदिशा विगेरेनों संभव नथी कारणके तेओमां फक्त एक पर्वे देशपणुं होवाथी तथा चार प्रदेशपणुं होवाथी संभव नथी. ॥ ६१-६२ ॥ आदिशा संगोगनों समृह ते पूर्वे 'अण्ण यरिओ दिसाओ आगओं अद्यंसि, 'कहेल वचनथी लीघों छे. सुत्रनों अवववार्थ आ प्रमाणे छे. अहिं दिशा शब्दथी प्रशापकदिशा पूर्विद चार अने उर्ध्व अधो मळीने छ ग्रहण करी छे अने भाव दिशा तो अदारे पण छे, अनुदिक ग्रहण करवाथी प्रशापकनी वार विदिशा गणावी. (उपाना चार खुणा तथा नीचली पूर्वे कहेली चार दिशा तथा खुणा मळीने वार जाणवा) तेमां अप्रंशीओने आयो योध नथी तथा संज्ञीओने पण केटलाकने होय अने केटलाकने न होय, के, हुं अमुक दिशामांथी आव्यों छं (जन्म लीघों छे.) एव मेगेसि णोणायं भवहत्ति 'ए प्रमाणे पितिविशिष्ट दिशा अने विदिशामांथी माह आवर्षु थयुं एवुं केटलाक जीगो नथी जाणता. अभिष्ठाय माणाणे 'भविस्तामि 'शब्द वहे पर्वत उपसंहार वाज्य छे, भवित साथे तंत्रहा एटलं अधिक वाक्य छे. इवे निर्धिकिकार तेज कहे छे-केसिंचि नाणसण्णा अत्थि केसिंचि नित्थि जीवाणं। कोऽहं परंमि लोए आसी कयरा दिसाओ वा ॥

अश्वाठ केटलाक जीवो जेमने झानावरणीय कर्मनो (वधारे) क्षय उपश्चम होय तेमने ज्ञानसंज्ञा छे. केटलाकने ते आवरण वधारे होवाथी ज्ञान संज्ञा नथी जेवी संज्ञा नथी ते बतावे छे के हुं परणोक्तमां एटले पूर्व जन्ममां मनुष्यादि कह गतिमां हतो ? एनावढे भावदिशा लीवीं, अथवा कह दिशाथी हुं आव्यो ? एनावढे तो मज्ञापक दिशा लीवी, जेमके कोइ दाहना निसामां लोचन वेरायलो जेतेने धेर कोइ लावे तोपण नसामां शुं वन्युं ते नसो उतर्या पछी जाणतो नथी के हुं क्यांथी आव्यो छुं तेवीरीते बीजी गतिमांथी
आवेलो विशिष्ट झानरहित मनुष्य विगेरे पण जाणतो नथी हवे उपलीज संज्ञा नथी पण तेने बीजी संज्ञाओ पण नथी ते सुबका-बतावे छे.

अत्थि मे आया उववाइए, नित्ध मे आया उववाइए, केहं आसी? के वा इओ चूए इह पेचा भवि-

अस्ति 'ते मारो आत्मा विद्यमान छे छडी विभक्ति अंते होवाथी 'मम 'साथे शरीरनो सस्वध बताव्यो के शरीरनो मालीक अंदर रहेलो आत्मा ते निरन्तर गतिमां महत थयेलो ते पोते जीव छे. हवे ते केवो छे? आपपातिक छे. फरी फरीने एक जन्म मांथी बीजा जन्ममां जबुं ते उपपित छे तेमां थवुं ते औपपातिक छे, आ सूबवडे संसारीनुं स्वरूप बतावे छे . ते मारोआत्मा आ मुकारे छे के निर्दं तेबुं ज्ञान केटलाक अज्ञानी जीवोने नथी होतुं अने हुं कोण छुं पूर्व जन्ममां नारकीय, पशु, मनुष्यादि के देव

हतो, अने त्यांथी आ मनुष्य जन्ममां आवेछो छुं. अने परण पछी फरी बखत हुं क्यां पेदा थहश ए ममाणे कोइ जातन हान कि नथी होतुं. जो के अहिं क्यी नगीपर भाव दिशावढे अधिकार अने महापक दिशावढे छे. तोपण पूर्व सूत्रमां साक्षात् महापक दिशा छीथी छे अने अहिं तो भाव दिशा छे एम जाणबुं. वादीनी शंका, अहिंआं संसारीओने दिशा विदिशामांथी आववा विगेरेनी विशिष्ट संहा निषेध थाय पण सामान्य संहानो नहिं. आ बात संज्ञी, जे धर्मी आत्मा छे तेने सिद्ध कर्या पछी थाय छे. कह्नुं छे के धर्मी सिद्ध थाय तो धर्मनुं चितवन थाय छे. हवे तमारो मानेलो आत्मा मत्यक्ष आदि प्रमाण गोचरथी, दूर होवाथी तेनी सिद्ध है नहिं थाप अने ते प्रमाणे विचारीए तो आत्मा पत्यक्षयी अर्थ (आत्मा) साक्षात्कारीथी विषयी पतो नथी (नजरो नजर देखातो नथी) कारण के ते इंद्रियोना ज्ञानथी दूर छे. अने अतीन्द्रियपणुं स्वभावथी प्रकृष्ट पणे छे. अने अतीन्द्रियपणाथीन तेतुं अव्य-भिचारी कार्य विगेरेतुं चिन्ह तेनो संवंध ग्रहण करवानो असंभव छे. (अतीन्द्रिय ते सर्वज्ञ छे. अने ते जाणे, पण बीनां सामान्य माणस न जाणे तो केवी रीते माने) जेवी रीते मत्यक्ष सिद्ध थतो नथी, तेवी रीते अनुमान पणे पण सिद्ध थतो नथी, कारण के आत्माना अमत्यक्षपणाथी तेनी सामान्य ग्रहण ज्ञाक्तिनी उत्पत्ति न थाय तथा त्यां बुद्धि पूर्वक अनुमान पण केवी रीते थाय, जेम आ वे प्रमाण छाग्न पढे तेम आगम प्रमाणनी विविक्षाना प्रतिपाद्यमानमां अनुमानना अंतनो भाव छे अने बीजी जगोए बाह्य कि अर्थमां संबंधनो अभाव दोवाथी अप्रमाण छे. अथवा प्रमाण एण मानींए. तो परस्पर विरोधी दोवाथी आगम प्रमाण नकाम्नं छे (जुदां जुदां आगमो एटळे जैन अने जैनेतरमां एकज आगम नथी तेथी वधा प्रमाण भृत जैनागमने न माने) अने तेना विना

आचा०
आचा०
आचा०
आचा०
आचा०
आचा०
आसंबंधी छहा ममाणना निषयनो अभाव छे. तो आत्मा सिद्ध थर सकतोज नथी ते प्रयोगथी बतावे छे (१) मितहा—आत्मा क्षिण्या हेतु—कारण ते प्रमाण पंचकना निषयथी दुर छे. दृष्टांत—गर्भेडाना श्लीगडा माफक.
तेना अभावमां विशिष्ट संज्ञाना मित्रिपेशनां अभावना संभव वडे सूत्रनी उत्पत्तिज नथी (बादी कडे छे के. ममाण पंचकथी आत्मा सिद्ध थतो नथी तो पछी सूत्रनी रचना करवानुं कारण थुं) जैनाचार्यनुं समाधान,

तमे जे क्यूं ते सपद्धं गुरुनी सेवा कर्या विना खच्छंदाचारतुं वचन छे सांभळो.

प्रतिहा—(१) आत्मा प्रत्यक्षज छे, तेनो गुण ज्ञान छे हेतु—तेनुं पोताना ज्ञानथीज सिद्धपणुं छे. अने स्तसंवित् निष्टाओं द्रष्टांत—विषयनी व्यवस्थितिओं छे. घट पट विमेरेने पण रुपादि गुण भत्यक्षपणे आंखनी सामेज छे तेथी, मरणना अभावना मसंगथी भूतोनो गुण चैतन्य छे एवी शंका न करवी. कारण के तेओनो तेनी साथे हमेशां सिन्धाननो संभव छे. त्यागदा योग्य, प्रहण करवा योग्य. त्यागदुं छेदुं, ए वधानी प्रष्टितना अनुमान वहे आपणी माफक पारका आत्मानी पण सिद्धि थाय छे. आ प्रमाणे एज दिशाए उपमान आदि प्रमाणने पण पोतानी बुद्धि वहे पोताना विषयमां हाह्या माणसे यथा संभव योजवां केवळ मौनीन्द्र (जिनेश्वर) ना आ आगम वहेज विशिष्ट संज्ञा निषेधना हार वहे हुं छुं एम आत्माना उल्लेख वहे आत्मानो सद्भाव सिद्ध कर्यों छे. अने जैनागम शिवायना बीजा आगमो अनाम पुरुपना बनावेलां होवाथी अपमाणज छे.

अहं आत्मा छे. एनाज वहे कियावादिओना बथा भेदो समाया अने आत्मा नथी, ए वचनवहे अ क्रियावादीओना मतोनो अनी अंदर समावेश करेळो छे. अने अज्ञानी तथा वैनियकना बधा भेदो तेमां समाता होवाधी समाव्या छे. जैनेतरना भेदो आ प्रमाणे छे. असिय सयं किरियाणं अकिरियवाईण होइ चुलसीई। अञ्चाणिय सत्तही वेणइआणं च बत्तीसा ॥ १ ॥ १८०) भेद क्रियावादीओना छे अने अक्रियावादीना ८४) भेद छे अने अज्ञानीना ६७) भेद छे. तथा विनयवादीओना

तेमां जीव, अजीव, आश्रव, बन्ध, पुन्य, पाप, संवर, निर्जरा, अने मोल ए नव पदार्थ छे ते स्व, पर, ए वे भेदधी तथा नित्य अने अनित्य ए वे विकल्प वडे तथा काळ नियति स्वभाव, इश्वर, अने आत्मा, ए पांच वधा साथे गुणतां ९×२×२×५=१८० भेद क्रियाबादीना थया आजु अस्तित्व माननारा आ प्रयाणे कहे छे.

(१) जीव स्वथी अने काळथी नित्य छे, (२) जीव स्वथी अने काळथी अनित्य छे (३) जीव परधी अने काळथी नित्य छे (४) कीवपरधी अने काळथी अनित्य छे, ए भमाणे काळना चार भेद थया, ए प्रवाणे नियति, स्वभाव, इश्वर, आत्मा विगेरेना चार की चार विकल्प थाय, ते पांच चोकडां गणतां २०) थाय. आ जीव साथे थया. आ प्रवाणे अनीवादी आठना भेदो छेवा एटछे १८०) भेद थया. तेमां स्वथी एटछे पोतानाज रुपवडे जीव छे पण परनी उपाधिवडे हस्त्रपणा के दीर्घपणानी माफक नथी ते नित्य अने

आचा०
॥ ४८॥

शास्त्र छे, पण सणिक नथी कारण के ते वर्तमाननी माफक भूत अते मिक्यमां पण छे. काळ्यी एटछे काळन आ दुनियानी स्थिति अने उत्पत्ति तथा मलयनुं कारण छे. कहुं छे के:—
कालः पचित भृतानि कालः संहरते प्रजाः । कालः सुतेषु जागिति कालो हि दुरितक्रमः ॥ १ ॥

काळन भूतोने परिपक्ष करे छे. अने तेज सर्व मजानो नाश करे छे. क्या सुतेखा होप तोपण काळ येती कियाथी जणाय छे. हीम, प्रमी, वर्षा, विगेरेनी व्यवस्थानो हेतु छे. तथा क्षण, लव, सुहुर्त, महर, अहोरात्र, मास, कतु, अयन, संवत्सर, युग, कल्प, पत्यो-प्रमी, वर्षा, विगेरेनी व्यवस्थानो हेतु छे. तथा क्षण, लव, सुहुर्त, महर, अहोरात्र, मास, कतु, अयन, संवत्सर, युग, कल्प, पत्यो-प्रमी, सागरोपम, जत्सिर्पणी, अवसर्पणी, पुदगळ परावर्त, अतीत, अनागत, वर्तमान, सर्व, अद्धा विगेरेनो व्यवहारक्ष छे. तथा क्षण विकल्पमां काळ्यीन आत्मासुं अस्तित्व स्वीकार्यु छे. पण पहेला अने बीजा विकल्पमां मेद एटलो छे के आ अनित्य छे के पूर्वनो नित्य हतो. त्रिजा विकल्पमां पर आत्माथीन स्व आत्मानी सिद्धि स्वीकारी छे.

पण केवी रीते परथी आत्मानुं अस्तित्व स्वीकारी शकाय ? उत्तर आतो मसिद्धन छे के सर्वे पदार्थ पर पदार्थना स्वरूपनी अपेक्षा ए, पोताना रुपनो परिच्छेदक छे. जेमके दीर्घनी अपेक्षाए इस्वपणानु ज्ञान छे अने इस्वनी अपेक्षाए दीर्घपणानु ज्ञान छे. एमज भारमा शिवायना स्तंभ, कुंभ, विमेरे देखीने तेनाथी जुदो जे पदार्थ तेमां आत्मपणानी बुद्धि प्रवर्ते छे. तेथी आत्मानुं स्वरूप ते परिथीज निश्चय थाय छे. पण पोतानी मेळे निर्दे. एम त्रीजो विकल्प सिद्ध थयो, चोथा विकल्पमां पहेळानी माफकज छे ए चार

आचा०

11 88 11

विकल्प छे. ते प्रमाणे बीजा नियतिथीन आत्मानुं खरूप निश्चय करे छे. आ नियति शुं छे ? उत्तर पदार्थोनुं जेवीरीते अवश्यपणे घवापणुं होय तेने योजनारी नियति छे.— प्राप्तव्यो नियतिबल्लाश्चयेण योऽष्यः सोऽवद्यं भवति नृणां शुभोऽशुभो वा । भृतानां महति कृतेऽपि हि प्रयत्ने नाभाव्यं भवति न भाविनोऽस्ति नाहाः ॥ १ ॥

नियति बळना आश्रयथी जे पदार्थ मेळववानो होय छे ते च्हाय श्रम होय के अश्वम पण ते माणसोने अवस्य मळे छे. इवे ते अटकाववा के फेरफार करवा माणसो पयत्न करे तोपण भावीनो नाश न थाय अने अभाव्यनी पाप्ति न थाय.

आ मस्करी नामना परिवादना मतने त्रायः अनुसरनारी छे. बीजा केटलाक स्वभावनेज संसारनी व्यवस्थामां जोडे छे. पश्च--

ए स्वभाव थुं छे ? उत्तर-वस्तुने पोतानोज तेवो परिणति भाव ते स्वभाव छे. कहुं छे के-

कः कंटकानां प्रकरोति तैक्ष्ण्यं विचित्रभावं मृगपक्षिणां च।

स्वभावतः सर्विमिदं प्रवृत्तं न कामचारोऽस्ति कुतः प्रयत्नः ॥ १ ॥

कांटाओनी तीक्ष्ण अणीने कोण बनावे छे? अने मृग तथा पक्षीओमां विचित्र भाव कोण उत्पन्न करे छे? खरीरीते ते बधुं स्वभावधीन थाय छे. तेमां कोइ खास महेनत छेतुं नथी. त्यारे पयत्न शामाटे मुख्य गणवो ? सूत्रम

11 88 11

स्वभावतः प्रवृत्तानां निवृत्तानां स्वभावतः । न हि कत्तेंति भूतानां यः पर्यति स पर्यति ॥ ्स्वभावथी मवर्तेला छे. अने स्वभावथी निष्टत थयेला छे तेवा पाणीओतुं हुं कंइपण करनारो नथी एम जे माने छे तेन देखे

केनांजितानि नयनानि मृगाङ्गनानाम् । कोऽलङ्करोति रुचिराङ्गरुहान् मयूरान् ।

कश्चोत्पलेषु दलसंनिचयं करोति । को वा दधाति विनयं कुलजेषु पुंस्सु ॥ ३ ॥

गृगलीओनी आंखो कोण आंजवा गयुं छे, तेमन मयुर वगेरेना पीछामां क्षोभा कोण करवा गयुं छे. अने कमलनी पांखडीओने
सारी सुंदर रीते कोण गोठववा जाय छे तथा कुलवान पुरुपना इदयमां विनय कोण मुकवा जाय छे? (कोइ निह, ते वधुं स्वभावशीज थाय छे एवं स्वभाववादी माने छे.)

हवे बीजा कहे छे के आ बधुं जीव विमेरे जे कंड छे ते इश्वरथींज उत्पन्न ययुं छे. अने तेथीज स्वरुपमां रहे छे. प्रश्न आ इश्वर कोण छे ? उत्तर-अणिमादि ऐश्वर्ष योगथी ते इश्वर छे. कहां छे के:---

अज्ञो जन्तुरनीशः स्यादास्मनः सुखदुःखयोः । ईश्वरप्रेरितो गच्छेत् श्वभ्रं वा स्वर्गमेव वा ॥ १ ॥ अज्ञा जन्तुरनाशः स्यादारमनः सुखदुःखयाः । इश्वरप्रारता गच्छत् श्वस्त्र वा स्वगमव वा ॥ १ ॥
अज्ञज्जन्तु आत्माना सुख दुःखना कारणमां असमर्थ छे एण इश्वरनो मेरायलो स्वर्ग अगर नर्कमां नाय छे. तथा वीजाओ कहे छे
के जीवादि पदार्थ कालादिथी स्वरूपने पामता नथी त्यारे केवी रीते छे ? उत्तर आत्माथीन छे. पक्ष ए आत्मा कोण छे ? उत्तर-

आचा०

11 48 11

आत्माथी बीजं निह एवं अद्वेत माननारा विश्वनी परिणति रूप आत्मान माने छे कहेल छे के—
एक एविह भृतारमा भृते भृते व्यवस्थितः । एकधा बहुधा चेव द्रश्यते जलचन्द्रवत् ॥ ५॥
निश्वये एकज भृतारमा सर्व भृतोमां रहेलो छे, अने ते एकलो छतां जेम चन्द्र पागीमां जुदो जुदो देखाय छे, तेम ते आत्मा
भृत भृतमां देखाय छे. वंद्री कहेल छे के—

पुरुष एवेदं सर्वे यद्भृतं यद्य भाव्यम् 'इति

जे आ अगतमां वधुं धयुं छे अने थवानुं छे ते सघछुं एक पुरुषत छे विगेरे ए प्रमाणे अजीव पण पोताथी अने काळथी हैं नित्य छे इत्यादि उपर प्रमाणे वधुं योजवुं. तेवीजरीते अक्रियावादीओना पण भेद छे. ते नास्तित्ववादी छे. तेओमां पण जीव, अजीव, आश्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, तथा मोक्ष ए सात पदार्थ छे. ते स्व अने पर ए

तेओमां पण जीव, अजीव, आश्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, तथा मोक्ष ए सात पदार्थ छे. ते स्व अने पर ए के मेदवढे तथा काळ, यहच्छा, नियति, स्वभाव, इन्बर, अने आत्मा, ए छ भेदोवढे चिंतवतां-८४) विकल्प याय छे ते आ प्रमाणे छे. जीव स्वतः एटले पोतानाथी अने काळथी नथी तेमज जीव, परधी अने काळथी (सिद्ध थतो) नथी. आ प्रमाणे काळ साथे लेतां वे भेद थया, तेज प्रमाणे यहच्छा तथा नियति विगेरेमां पण सर्वे जीव पदार्थमां वार थाय ए प्रमाणे अजीवमां पण वार लेवा. ते बार सप्तक एटले ८४) थयां तेनो अर्थ आ छे. जीव पोताना काळथी नथी. अहि पदार्थीना लक्षणवढे सत्ता कि विश्वय कराय छे. अने आत्मानुं तेनुं कंइ पण लक्षण नथी के जेना वढे अमे तेनी सत्ता क्रि

सूत्रम्

11 48 11

स्वीकारीए ? तेम अणुओथी पर्वत विगेरेनो संभव थाय तेम पण नथी. बळी छक्षण अने कार्यवहे वस्तु न मेळवीए तो ते विद्य-भान नथी जेम आकाशनुं कमळ विद्यमान नथी तेम, तेटला माटे आत्मा नथी। वीजो विकल्प पण जे आत्माने पोताथी नथी स्वीकारतो ते आकाशना कमळनी माफक परथी पण नथी। अथवा सर्व परार्थीनाज पर भागमांना अदर्शनथींन सर्व अवांक (?) भाग मुश्मपणाथी अने उभय (ते बन्ने) ना अन उपलिचिथी, सर्व अनुपलिचिथी, नास्तित्वने स्वीकारीए छीए कहेल छे के— यावद् दृइयं परतस्तावद् भागः स च न दृश्यते. इत्यादि

जेटलुं देखाय छे तेटलोज भाग पछवाडे छे. अने ते देखातो नथी विगेरे तथा यहच्छाथी आत्मानुं अस्तित्व नथी [ना-

अतर्कितो पस्थितमेव सर्वं चित्रं जनानां सुखदुःख जातम्। काकस्य तालेन यथाभिघातो न बुद्धिपूर्वोऽत्र वृथाभिमानः ॥१॥ सत्यं पिशाचारम वने वसामो, भेरिं कराग्रेरपि न स्पृशामः। यहच्छया सिष्ध्यति लोकयात्रा भेरी विशाचाः परिताडयन्ति ॥२॥

आचा०
आचा०
शिक्षा विचारनुं आ माणसोनुं आश्चर्यकारक सुख दुःखनुं धवुं ते उपस्थित धयेछंज छे. जेभ कामहाना बेसवाधी ताइन पहतुं सूत्रम थाय ते जेम कामहाण पाइयुं नथी तेम जगत्मां जे कांइ थाय छे, ते बुद्धिपूर्वक नथी. पण तेमां लोकोनुं खोडुं अभिमान छे के में आ कर्युं) १ अमे वनना पिशाचो छीए ते खरुं छे. अमे हाथधी भेरीने अडकता पण नथी तो पण यहच्छाए लोको एकटा थाय छे अने कहे छेके पिशाचो भेरीने वगाडे छे. १ (पंच तन्त्रमां आने मळतुं एक दृष्टांत छे. कोइ छक्करमांथी छुटो पढेलो भेरी- वाळो सिंहना मारथी मरी गयो अने तेनी भेरी बांदराना हाथमां आबी ते कोइवखत बगाडे अने ते पहाडमां जाय ते लोकोने संभळाय तेथी आजुवाजुना लोको गभराया के पहाडनी अंदर पिशाचो भेरी वगाडी हरावे छे. तेथो लोको हरीने नासवा लाग्या. तेमां कोइ हिंमतवाने फल लइ बांदराओने एकटां करी तेमनी पासेथी भेरी लइ लीधी अने लोकोनो बहेम मटाडयो ? जेम का-गहाना बेसवाथी ताडनुं झाड पढे तो पण तेमा फागडानी बुद्धि नथी के मारा उपर ताड पडशे, तेम ताडनो अभिमाय नथी के कागड़ा उपर पहुं. छतां ते बेड थाय छे. ए प्रमाणे, बाकीनुं पण विना विचारनुं, अजा कृपाणी, आतुर भेषज, अंध कंटक वि-गेरे द्रव्टांतो पण जाणी छेवां ए प्रमाणे बधा प्राणीओनां, जन्म, जरा, परण विगेरे छोकमां जे कांइ थाय ते बधुं काकताछीय न्याय माफक जाणबुं, एवीजरीते, नियति स्वभाव, इश्वर, आत्मा विगेरेथी पण आ आत्माने, असिद्ध करवो, (एटछे आत्मानी दरेक रीते असिद्धि बताववी) क्रियावादीना ८४ भेद थया. इवे अज्ञानीओना ६७ भेद बतावे छे, ते आ प्रमाणे— पूर्वे जीवादि नव पदार्थ कही गया, तेनी साथे उत्पत्ति दशमी छेवी ते दशेने सत्, असत्, सदसत्, अव्यक्तव्य, सद् वक्तव्य

For Private and Personal Use Only

असद्रक्षच्य, अने सदसद्रक्षच्य, आ सात भेदवढे जाणवाने शक्तिमान नथी तेमज जाणवाथी शुं प्रयोजन छे ? तेनी भावना नि-चे मुजब, जीव विद्यमान छे एम कोण जाछे? अथवा जाणवाथी शुं छाभ ? अथवा जीव अविद्यमान छे अथवा जाणवाथी शुं छाभ? ए प्रमाणे अजीवादिकमां पण सात विकल्प, ते प्रमाणे सात सात गणतां ६३ भाग थया तेमां चार बीजा उमेरवा ते आ छे. विद्यमान (छती) भावनी उत्पत्ति कोण जाणे छे? अथवा जाणवाथी शुं प्रयोजन? बाकीना जण विकल्प उत्पत्तिना, उत्तरकाळ प्रदार्थना अवयवनी अपेक्षाए छे. तेनो संभव थतो नथी तथी ते त्रण नथी कह्या एटळे चार भांगा संभवे. ते उमेरतां क्रूळ ६७ विद्यमान अपेक्षाए छे ते कोण जाणे छे. तेनो अर्थ आ छे के—

कोइने विशिष्ट ज्ञान नथी के जे इन्द्रिओथी अतीत जीवादि पहाथेोंने जाणी शके अने तेमना जाणवाथी कंड पण फळ नथी जेमके जीव नित्य, सर्वगत मूर्त ज्ञानादिगुण उपेत अथवा उपरना गुणोथी व्यतिरिक्त छे. अने तेथी कया पुरुषार्थनी सिद्धि थाय? तेथी अज्ञानन श्रेय छे. वळी तुल्य अपराधमां, अज्ञानताथी करवामां लोकोमां स्वल्प दोप छे. अने, तेज ममाणे लोकोचरमां पण आकुट्टिक (मनथी पाप करनार) अनाभोग (अजाण्युं) सहज्ञाकार (जलदी) विगेरे कार्य थाय तेमां श्रुलक (नानो) भिश्च तथा स्थिवर, उपाध्याय, आचार्य ने अनुक्रमे वधारे वधारे मायिश्वत्त छे, तेवुं वीजा विकल्पमां पण योजवुं.

स्थितर, उपाध्याय, आचाय न अनुक्रम वयार नयार नायान्य के एउ नाया प्राप्ता राजा है। उत्तर विनयवादीना १२ भेद आ ममाणे छे—देवता, हाना, यित, जिति, स्थितर, अथम, माता पिता, ए आठमां मन, वचन, दिनाया, अने मदान, ए चार मकारे विनय करवो ते आ ममाणे, आ देवताओनो मन, वचन, काया, अने देशकाळनी उत्पत्ति क्षिमाणे दान देवा वढे विनय करवो. आ विनयथीज स्वर्ग, अपवर्गना मार्गने तेओ स्वीकारे छे. अने नी चैव चि तिचे नमवुं)अने क्षि

आचा०

नम्रता बताववी ते विनय छे. बधी जमोए आ ममाणे विनयवडे देव विमेरेमां लीन थयेला. स्वर्ग मोक्षनो मेळवनारो धाय छे

विणया णाणं णाणाओ दंसणं दंसणाहि चरणं च । चरणाहिं तो मोक्खो मोक्खे सोक्खं अणाबाहं ॥१॥ विनयथी ज्ञान, ज्ञानथी दर्शन, दर्शनथी चारिव, चारिवथी मोझ अने मोक्षथी अध्यावाध सुख छे. अहिं कियावादीओमां अ-स्तित्व छे. छतां तेमां पण केटलाकमां आत्माने नित्य, अनित्य, कर्ता, अकर्ता, मूर्त, अमूर्त, झ्यामाक तंद्रल मात्र, अंगुठाना पर्व जेटलो दीवानी शीखा समान, हृदयमां रहेलो, विगेरे पण ते औषपातिक छे. तथा अक्रियावादीओमां आत्मान नथी तो क्यांथी भीषपातिक (उत्पन्न थनार) पणुं सिद्ध थाय? अने अज्ञानीओ आत्माने विषे अप्रतिपत्ति नथी करता पण तेओ ज्ञानने नकाग्नुं हैं माने छे. विनयवादीओने पण आत्माना अस्तित्वमां अस्त्रीकार नथी पण विनय विना बीजुं मोक्ष साधनम नथी पत्रुं माने छे. दे तेमां सामान्य आत्माना अस्तित्व स्त्रीकारथी अक्रियावादीओने दुर कर्या (तेमना मानवाने खोद्धं कर्यु) अने आत्मानुं न मानवुं तेमां आ पण तेमणे विचारतुं जोइए.

शास्ता शास्त्रं शिष्यप्रयोजनं वचनहेतुदृष्टान्तः। सन्ति न शून्यं ब्रुवतः तदभावाद्याप्रमाणं स्यात् ॥ १ ॥ प्रतिषद्ध प्रतिषेधो स्तश्चेच्छून्यं कथं भवेत्सर्वम् । तदभावेनतु सिद्धा अप्रतिसिद्धा जगत्यर्थाः ॥ २ ॥ र्रे उपदेश, शास्त्र, शिष्य, प्रयोजन, वचन, हेतु अने द्रष्टांत छे ते बधां बोखनारथी श्रून्य नथी. तेना अभावथी ते अपमाण छे.

सूत्रम्

भवमां जनार आत्माने स्पष्ट स्वीकार. ते संज्ञा उपयोगी पणाथी सामान्य संज्ञाना कारणना मितपादनने छोडीने फक्त विज्ञिष्ट संज्ञाना कारणोने सूत्रकार बतावे छे.--

सेजं पुण जाणेजा सह संमइयाए परवागरणेण अण्णेसिं अंति एवा सोचा तंजहा-पुरित्थ माओ, 🧗 वादिसाओ, आगओ अहमंसि, जाव अण्णयरिओ, दिसाओ अणु दिसाओ वा आगओ अहमंसि, एव-मेगेसिं जं णायं भवति अत्थि में आया, उववाइए जोडमाओ (दिसाओ) अणुदिसाओ वा, अणुसंचरइ, सवाओ दिसाओ अणु दिसाओ सोऽहं (सू. ४)

প্রাবাণ

1 401

ते जाणे ते हुं, आमां 'से' शब्द मामधी शैली ममाणे मथमाना एक वचनमां छे. 'रा' शब्दवढे जाणवुं के जे पूर्वे कहेलो जा-णनारो एटछे जेने वधारे क्षय उपक्षम होय ते विचारे छे के पूर्वे कहेली दिशा अने विदिशामांथी मारुं आगमन थयुं छे. तथा हुं पूर्व जन्ममां कोण हतो देवता, नारकीय, के तिर्येच, अथवा मनुष्य हतो अथवा स्त्री, पुरुष के नपुंसक हतो? अथवा भविष्यमां हुं आ मनुष्य जन्मथी मरीने देवादि शरीरमां जइश एवं विचारे अने समजे आधी एम समजवुं के कोइणण अनादि संसारमां अमण करतो माणी दिशामांथी आगमनने न जाणे (दरेक न जाणे) पण जे विशिष्ठ संज्ञावाळो होय ते जाणे ते मति ज्ञानवाळो एट छे जेनी युद्धि खीछेली होय तेनो भावार्थ ए छे के आत्मानी साथे जेनी सुबुद्धि होय ते सुबुद्धिवडे कोइक भव्यात्मा जाणे छे हैं। स्वमां ' सह सम्मइआए ' ति शब्दथी एम स्चन्युं के मतिनुं आत्मस्वभावपणुं हमेशां छे पण वैशेषिक मतवाळा मितने आत्माथी जुरी माने छे. अने आत्माथी समवाय द्विए जोडायली छे. तेवुं निहं जो सम्मइ ए'िन एटले पोतानी बुद्धिवडे तेमां भिन्न पण अश्वादिक पोतानां माने छे तेथी मित पण जुदी थइ जाप तेवी शंका न थाय माटे स शब्द विशेषणमां छे. अने सह (साथै) श्व-ब्द बधे लागु न पढे अने आत्मानी साथे इंमेशां रह्या छतां मयलक्षान आवरणवडे ढंकावाथी सदा विकिष्ट बोध नथी. इवे ते म-ति सन्मति अथवा स्वमति, ते अवधि, मनःपर्याप, अने केवळज्ञान, जातिस्मरण, ए चार भेदे जाणवी. तेमां अवधि, मनःपर्याप, अने केवळ ज्ञानहुं स्वरुप, बीजा स्थानमां विस्तारथी कहुं छे. अने जातिस्मरण ज्ञान ते मितज्ञाननो विशेष बोधज छे. तेथी आ पमाणे आत्मानी चार पकारनी मित वहें कोक विशिष्ट दिशानी गित आगित जाणे छे. अने कोक पर (श्रेष्ठ) ते तीर्थकृत स- कि छे. परमार्थथी तेनेज परश्रन्दनुं वाच्यपणुं होवाथी परपणुं होवाथी परपणुं आपे छे तेनावहे व्याकरण ते उपदेश ते उपदेशयी

सूत्रम

11071

जीबोने तथा तेना मेदो पृथ्वी बिगेरे तथा तेनी गित आ गितने बीजो पण जाणे छे. बीजा जीवो तीर्थंकर शिवाय अतिशय ज्ञानी एवा केवळी विगेरे पासे सांभळीने जाणे छे अने जे जाणे छे ते सूत्र अवयवढे बतावे छे. के हुं पूर्व दिशायी आव्यो छुं के द- क्षिण, पश्चिम, उत्तर, उंची, नीची के बीजी कोई दिशा विदिशामांथी आव्यो छुं. एवं विशिष्ट अय उपत्रम आदिवाळाने तीर्थंकर तथा अन्य अतिशय हानी एवा पुरुपोए जेमने बोध आपेळो छे तेमने आज्ञान होय छे, तथा पित विश्विष्ट दिशामांथी आगमनना परिज्ञान शिवाय बीजुं पण आवुं ज्ञान तेने थाय छे के जेम हुं पूर्वे हतो तेम जाणुं छुं अने हवे पछी मारा आ शरीरनो अधिष्टा- ता (आत्मा) ज्ञान दर्शन, उपयोग लक्षणवाळो उपपादुक (भवांतरमां जनारों) अने असर्व गत (शरीर मात्र ममाण वाळों) भोक्ता मृति रहित, अविनाशी, शरीर व्यापी, इत्यादि गुणवाळी मारो आत्मा छे. ते आत्माना आठ भेद छे द्रव्य, कषाय, योग, उपयोग हान, दर्शन, चारित्र, वीर्य आत्मा, एम आठ पकारे छे. तेमां अहिं आ मुख्यत्वे उपयोग आत्मावडे अधिकार छे. अने बाकीना

भेदो तेना अंग्र तरीके उपयोगमां छेवाय छे, तेथी बताव्या छे. ते ममाणे मारो आत्मा छे. जे अमुक दिशामांथी के विदिशामांथी गति मायोग्य कर्मना उपादानथी तेने अनुसारे चाछे छे. पाठान्तरमां अनुसंचरतीने बदले अनुसंसरह पाठ छे. तेनो अर्थ आ ममाणे छे के दिशा विदिशाओनुं गमन अथवा भावदिशामांथी आगमन, तेने याद आवे छे, हवे सूत्र अवयव वढे पूर्वना सूत्रना कहेला अर्थने उपसंहरे छे. (बतावे छे.)

पाठान्तरमा अनुसचरतान बदल अनुससरह पाठ छ. तना अय आ मनाण छ क विशा जिपसान हु जना उन्या निवास अगान आगमन, तेने पाद आवे छे, इवे सूत्र अवयव वढे पूर्वना सूत्रना कहेला अर्थने उपसंहरे छे. (बतावे छे.)

वधी दिशाओ अने अनुदिशाओमांथी जे आवेलो छे अने अनुसंबरे छे. अथवा अनुसरे छे. ते हुं एवो उल्लेख करवावडे आतमानो भाव सिद्ध थाय छे. अने पूर्व विगेरे प्रज्ञापक दिशाओ वधी ग्रहण करी छे. अने भाव दिशाओ पण लीधी छे आ कहेला



For Private and Personal Use Only

गंभीर भर्थने निर्युक्तिकार खुलो बताववा माटे निर्युक्तिकार त्रण गाथाने साथे कहे छे. जाणई सयं मईए अन्नेसिं वावि अन्तिए सोच्चा । जाणग जण पण्णविओ जीवं तह जीव काएवा ॥ इत्थ य सह संमइ अत्ति जं एअं तत्थ जाणणा होई ।ओही मण पज्जव नाण केवले जाइ सरणे य ॥६५॥ परवड्वागरणं पुण जिणवागरणं जिणा परं नित्थ । अण्णेसिं सोचंतिय जिणेहिं सद्यो परो अण्णो ॥६६॥ कोइ माणी संसारमां भ्रमण करतो अवधि विगेरे उपर कहेली चार प्रकारनी पोतानी मती वडे जाणे छे अनजुपूर्वी न्याय मगट

करवा माटे पछवाडे लीधेलुं अन्योतुं आ पद पहेलुं कहे छे. अधवा अन्येपां, आ पदवहे अतिपय ज्ञानिओनी पासे सांभळीने ज्ञाणे छे तथा 'जाणा जलपल्णविओ ' आ वाक्यवहे पर व्याकरण पण ग्रहण कर्युं तेना वहे आ अर्थ छे. ज्ञापक एटले तीर्थक-रनो भ्रापित (बोधेले) पण जाणे छे. जे विषयने जाणे छे ते पोतेज बतावे छे. सामान्यथी जीवने आ पदवहे अधिकृत उदेशानो अर्थाधिकार कहे छे. तथा जीव अने कायाने ते पदवहे पृथिवीकायादिने बताववा वहे बाकीना हवे पछीना छए उदेशाना करवा माट पछवाड लिधल अन्यानु आ पद पहलु कह छ. अथवा अन्यपा, आ पदवह आतपय ज्ञानभाना पास सामळान पूर्ण लाणे छे तथा 'जाणम जणपण्णविशों ' आ वाक्यवहें पर व्याकरण पण ग्रहण कर्युं तेना वहें आ अर्थ छे. ज्ञापक एटले तीर्थक- रनो प्रज्ञापित (बोधेलो) पण जाणे छे. जे विषयने जाणे छे ते पोतेज बतावे छे. सामान्यथी जीवने आ पदवहें अथिकृत उदेशाना नो अर्थाधिकार कहें छे. तथा जीव अने कायाने ते पदवहें पृथिवीदायादिने बताववा वहें बाकीना हवे पृथिना छए उदेशाना अधिकार अर्थने अनुक्रमें कहें छे. अहिं 'सहसम्मइएति आ पद सुन्नमां छे. तेमां 'ज्ञाणण' पदवहें ज्ञानने उत्पन्न करेलुं छे 'मन ' धातु जाणवाना अर्थमां छे. कारण के मनन तेज मित (बुद्धि छे माटे) अने ते ज्ञान केषुं छे. ते बतावे छे. अविष, मनपर्य केवळ अने जातिस्मरण, रुपवाछं छे. तेमां अविषज्ञानी होय ते संख्याता अने असंख्याता भवने जाणे छे ए ममाणे मनः पर्यायक्वानी पण जाणे छे. पण केवळी तो

आचा०

|| Qo ||

नियमथी अनन्ता (तमाम) जाणे छे. तथा जातिस्मरणवाळी नियमथी संख्याता भवने जाणे छे. याहीदी याद 🚓 छे.

हिका निहं छतां छासउमी गाथानो अर्थ थोडो बताबीए छीए. 'परवह बागरणं' ते जिनव्याकरण जाणवुं जिनेश्वरथी पर बीजो हिन्यी, तथा बीजाओनी पासे सांभळीने, तथा जिनेश्वरथी सर्व पर अन्य छे. नीचेनी कथाओथी जणाशे के कोइ भन्यात्माने धर्म- क्चीनी माफक स्वयं जातिस्मरण प्रगट थाय छे. कोइने जिनेश्वर पासेथी सांभळीने थाय छे जेम महाबीरस्वामी पासे गौतमस्वामीने थयुं तथा अन्य पासे एटले मिलाथ भगवानना मित्रोने मिल्कुमारीए युवावस्थामां बोध करतां (मित्रोने) जातिस्मरण ज्ञान थयुं. ए नीचेनी कथाथी समजाशे. अहिं सहसम्मति विगेरे परिज्ञानमां सुखेथी समजाय माटे त्रण दृष्टांतो बतावे छे.

बसंतपुर नगरमां जितशतु नामे राजा छे. तेनी धारणी नामनी महादेवी (पट्टराणी) छे. तेने धर्मरुची नामनो पुत्र थयो, ते राजा एक दिवस तापसपणे अत छेवानी इच्छावालो धर्मरुचीने राज्य सोंपवानी तैयारी करवा लाग्यो. ते जोइने धर्मरुचिए पोतानी हा-ताने पूछ्युं के मारो पिता राज्य शा माटे तजे छे? माए वहुं बेटा! आ नारकी विगरेना सकल दुःखना मेतुभूत तथा स्वर्ग अने मोक्षमार्गमां विद्यन करनार अर्थला (आंगळी) समान तथा अवद्य दुःख देनारी छह्मीवढे शुं मयोजन छे? परमार्थशी आ लोकमां पूर्ण अभिमान मात्र फल देवावाळी छे. तथी तेने छोडीनेज सकल मुख्युं साधन जे धर्म तेज करवाने तारो पिता उद्यम करे छे. भूमंदिच ते सांभळी गोल्यों के जो छह्मी आवीज छे तो मारा पिताने हुं अनिष्ठ छुं के जे आवी सकल दोपने धारनारी लह्मी मने

सूत्रम

1 60 1

भवमां दीक्षा लड़ने देवलोकना मुखने अनुभवी अहिं आच्यो छुं. ते प्रमाणे तेणे विशिष्ट दिशाओनुं आगमन पोतानी मित एटले जातिस्मरणहुप ज्ञानवडे जाण्युं. अने मत्येक मुद्ध (गुरु विना पोतानी मेळे दीक्षा लेनार) थयो ए प्रमाणे बोजा पण वलकल चिरी, श्रेयांसकुमार विगेरे अहीं जाणता. हवे पर व्याकरणनुं उदाहरण कहे छे. गीतमस्वामीए महाबीर पश्चने पूछयुं के हे भगवन ! मने केवळज्ञान श्वामाटे उत्पन्न थतुं 🖟

॥ ६२ ॥

नथी ! भगवाने कहां. हे गै।तम तमारो मारा उपर घणो स्मेह छे तेथी. तेणे कहां हे भगवन ! ज्ञामाटे मने तमारा उपर आटलो से वधो स्मेह छे ! त्यारे भगवाने कहां के पूर्वमां घणा भवधी तारे अने मारे आबो संबंध हतो तेथी.

चिरस्रसिष्टोसि में, परिचियोसि में गोयमे त्येवमादि !

हे गै।तम ! तुं मारी साथे घणो काल रहेलो छे. तथा घणा कालमो मारी साथे परिचित छे इत्यादि. आ अधिकारने तीर्थकरे कहेलो सांभलीने पण विशिष्ट दिशानुं आगमन विगेरेनुं ज्ञान थयुं. वीजानी पासे सांभलेलुं तेनुं उदाहरण हवे कहे छे.

मिल्लकुमारीने ल राज्य पुत्रो जे जाणीता हता ते परणवाने माटे आवेला, तैमने पोताना अवधि ज्ञानवहे वोध करवा माटे जेवुं पूर्वमां साथे रहीने दीक्षा लिश्नेली, अने धर्मना फळथी जयन्त नामना अनुत्तर विभानमां जे सुख भोगवेलुं ते कही बताव्युं अने ते सांभळीने छए मित्रो जे, ओछा पापवाळा हता तेमने बोध थयो अने विशिष्ठ दिशाना आगमननुं ज्ञान थयुं. तेज संवंधे आ गाथा छे. आ गाथा छे.

किं थतयं पम्हुडं, जं च तया भो! जयंतपवरंमि। बुच्छासमयनिवऊं, देवा तं संभरह जातिं ॥१॥ है मिल्लो! आपणे जयंत विमानमां रहेला अने त्यां घणा काळ सुधी सुख भोगवेल्डं ते भूली गया? तेने याद तो करो. आ क्रिंचण गाथानो तात्पर्य अर्थ छे.

हवे आपणी चालु वातने कहीए छीए. के निश्चें जे छे ते हुं आ पद वडे अहंकार झान वडे आत्माना उल्लेख वडे पूर्व विगेरे

सूत्रम

For Private and Personal Use Only

दिशाओमांथी पोताना आत्माने आवेलो अने जरापण रोकाण विना भव भ्रमणमां पहेलो पोतान द्रव्यार्थपणे नित्य अने पर्याप अर्थपणे अनित्य छुं एम जे जाणे छे, तेज खरी रीते आत्मवाही छे. एवं स्वकार बतावे छे. से आयावादी लोयावादी कम्मावादी किरियावादी (सू०५)

ते एटछे जे पूर्वे नारक, तिर्थंच, मनुष्य, देवता विगेरे भाव दिश्चामां अने पूर्व दिश्चा विगेरे मन्नापक दिश्चामां भमेछो पोते पोताना क्रिक्याने. अक्षणीक, अमूर्त, विगेरे छक्षणवाळो जाणे छे. ते आत्मवादी, एटछे आत्माने बोलवाना स्वभाववाळो छे. अने जे पूर्व कि कहेला मगाणे आत्माने न स्वीकारे ते अनात्म वादी (नास्तिक) जाणवा. वळी जे आत्माने सर्व व्यापी, नित्य, अने क्षणीक क्रिक्य मगो छे, ते पण अनात्म वादी छे. कारण के सर्व व्यापी आत्माने निष्क्रिय पणुं होवाथी बीजा भवमां संक्रान्ति न थाय, अने सर्वथा नित्चवणे पण, अभच्युत, अनुत्पन्न, स्थिर, एक खानाव, ए नित्यनुं लक्षण होवाथी, भरणनो अभाव थाय, अने भव संक्रान्ति पण नज थाय, सर्वथा क्षणिक मानवामां पण निम् व्यविनाञ्चयी, तेज हुं, आवुं पूर्व तथा उत्तरनुं अनुसंधान (जोडाण) न थाय. जे आत्मवादी छे. तेज परमार्थथी लीक वादी छे. कारण के अवलोके (जुए) छे ते 'लोक' एटले माणी गण, तेने बोलवानो जेनो स्वभाव छे ते आ वचनवडे जेओ आत्माने अहैत माने छे, तेनुं खंडन करवा आत्मानुं बहुत्व कहुं. अथवा के लोयावादीने चदले 'लोका पाती' ए शब्द लड्ए तो लोक चौदरज्ज प्रमाण छे. ते अथवा पाणीगण तेमां आववाना स्वभाववाळो आ बचन वडे विशिष्ट आकाश खंडनी 'लोकसंझा' बतावी अने तेमां जीवास्तिकाय (जीवसमूह)ना संभवयी जीवोनुं गमन आ-

आचा०
॥ ६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥
१६४ ॥

जावं णं भंते! एस जीवे सया सिमयं एयइ वेयइ चलति फंदति घटति तिप्पति जाव तं तं भावं परिणमति तावं चणं अद्विहवंधए वा सत्तिवहवंधए वा छिब्रहवंधए वा एगविहवंधए वा णोणं अवंधएति ॥

हे भगवन् ! आ जीव इमेशां समान वर्षे छे के वधारे वर्षे छे, चाले छे, फरके छे. अथवा तिषे छे (गति करे छे) ते ते हैं भावने ज्यांसुधी परिणमे छे त्यांसुधी आठ पकारनो कर्ष बंध के, सात पकारनो, छ प्रकारनो, के एक प्रकारनो, के वंध विनानो छे ?

For Private and Personal Use Only

अचि।

अहिं उत्तर नथी पण ज्यांसुधी तेरमा गुणस्थान सुधी जीव संसारमां होय त्यांसुधी योगी क्रिया करनार होय ए आठना, सातना इंग्लान अने एकना वंधनवालो अनुक्रमें होय छे. ते प्रत्यांतरथी जाणवुं. ए प्रमाणे बीनाओनी शंका निवारण करवा गीतमस्वामीए पूछ्युं अने महावीर प्रभुए उत्तर आध्यो तेथी एम बताब्युं जे कर्मवादी छे तेन क्रियावादी जाणवा. आ वचनथी सांख्य मतवाला जे अात्माने क्रिया विनानो माने छे तेम तुं खंडन कर्युं ॥ ५ ॥

हवे पूर्वे कहेली आत्मपरिणतरुप क्रियाने विशिष्ट काळ बतावनार 'तिड' मत्ययवडे कहेतां 'अहं' नाम हुं पत्यय साधवा योग्य आत्माने तेन भवमां अविष, मनः पर्याय, केवलज्ञान, जातिस्मरण, ए चार विशिष्ट संज्ञा शिवाय पण त्रणे काळमां फरसनार मित- ज्ञानवडे सद्भावनो अवगम (जाणपणुं) बताववाने माटे कहे छे.

अकरिस्सं चऽहं कारवेसु चऽहं, करओ आवि समणुन्ने भविस्सामि (सू०६)

अहिं आ सुत्रमां भूत, वर्तमान अने भविष्य काळनी अपेक्षाए अण तथा ते अण साथे करतुं. करावतुं अने अनुमोद्युं गणतां नव विकल्प थाय छे. ते आ प्रमाणे छे. में कर्षुं; कराव्युं अने कर्ताने भलो जाण्यो, हुं करुं छुं करातुं छुं, अने करावनारने अनुमोदुं छुं, हुं करीश्च, करावीश्च, अने कर्ताने भलो जाणीश्च, एमां पहेलो अने छेलो ए बे भांगा सूत्रमांथीज लीधा छे तेथी करीने बाकीना मध्यमां आवी गया तथी नवे भागानुं ग्रहण थयुं (लीधा) एज अर्थने मगट करवा बीजो विकल्प छे के हुं करावीश ए सुत्रवडे लीधो छे. आ नवे भागा सुत्रमां चे चकार होवाथी तथा अपिशब्द लेवाथी ते नव साथे मन, वचन, काया वितावतां २७) भेदो हुं

आचा०
आचा०
आत्मा बताव्यो छे. ते नो आ भावार्थ छे. तेन हुं के जेनावहे में आ देहादिनी पहेला युवावस्थामां इन्द्रियने बता पहेला विषयक्ष अत्मा बताव्यो छे. तेनो आ भावार्थ छे. तेन हुं के जेनावहे में आ देहादिनी पहेला युवावस्थामां इन्द्रियने बता पढेला विषयक्ष विषयक्ष विषयक्ष के निव बढे मोहित थएला अन्य विचवहे ते ते अकार्यना अनुष्ठानमां तत्पर थइने मारे अनुकूळ कर्युं (मने गम्युं ते कर्युं) कर्युं छे के.

विह्वावले निडिएहिं जाइं कीरंति जोवणमएणं। वयपरिणामे सरियाइ ताइं हियए खुडुकंति ॥ १ ॥
विभवना अहंकार बढे नाचेला (नाटक करेला) ए यौवनना मद बढे जे जे कृत्यो करायां छे. ते वथां बुहु।पामां याद आवीने हृद्र्यमां अल्यनी माफक खटके छे. तथा में कराव्युं एनावहे बीजा माणसने आ कार्यमां मवर्ततो लोइने में महित करावी. तथा करानारने आज्ञा आपी. आ ममाणे कर्युं कराव्युं अने अनुमोद्युं ए स्वकाळ स्वक्यो अनिवयक्ष ख्राव्यो आ त्रण कालमा कराव्या करावाचा वचनवहे देह, इन्द्रिय, थी जुद्रो आत्मा भूत, वर्तमान भविष्य संबंधि काळ परिणाम रुपे आत्मानुं अस्तित्वनुं जाण-पण्डं स्वच्युं छे. अने जाणवणुं ते एकांत सणिकवादीने के एकांत नित्यवादीने न संगवे तथी आ वचनवहे तेमनुं संदन कर्युं. आत्मान क्रियाना परिणामवडे परिणामपणुं स्त्रीकार्युं छे तथी (क्षणिकवादी विगेरेनुं खंडन थयुं छे.) अने तेनाज अनुसारे संभव अनुमानथी अतीत अनागत भावोमां पण आत्मानुं अस्तित्व जाणवुं अथवा आ क्रिया मर्वधना मतिपादनथी कर्मना उपादान हैं हुए हो. जे क्रिया हो तेनुं स्वरूप बतावेलुं जाणवुं. ॥ ६ ॥ इवे शिष्य मक्ष पुछे हो आटलीज क्रिया हो के बीजी कोई हो तेने

आचा०

आचार्य महाराज बतावे छे.

एयावंति सवावंति लोगंसि कम्मसमारंभा परिजाणियवा भवंति (सू०७)
आटलीन विशिष्ट कियाओं जे पूर्वे कहेली छे, ते सर्व लोक एटले माणी समूहमां कर्मनो समारंभ छे ते अतीत, अनागत, वर्तमान, भेद वडे कर्युं, कराच्युं, अने अनुमोयुं ए वडे तमाम क्रियाने अनुसरनार 'करेछे' ए शब्दवडे वधी क्रियानो संप्रह थाय
छे. आटलीन क्रियाओं जाणवी. बीजी निर्हे अने परिज्ञा वे मकारनी छे. जपरिज्ञा अने मत्याख्यान परिज्ञा तेमां इपिरज्ञा (मळेला वोध) वडे आत्मा अने बंधनुं अस्तित्व छे. पूर्वे कहेली कर्म समारंभनी बधी क्रियाओं वडे जाणपणुं थाय छे. अने जाण्या पछी

मत्याख्यान परिज्ञावडे बधा पापाने आववाना हेतुरुप कर्मना समारंभोना पचलाण करवां जोइए (वने त्यांतुधी छोडवां जोइए) आटला सामान्य वचनवडे जीवनुं अस्तित्व साध्युं छे. अने ते आत्मानुं दिशाओनुं जे भ्रमण तेना हेतुओना बताववा साथे 💢 अपायोंने बताववा कहे छे. अथवा जे आत्मा तथा कर्म वादी छे, ते दिशाओंना भ्रमणर्थी छुटशे अने जेओ कर्मबादने नथी मानता

तेओने केवा विषाक भोगववा पडशे ते बतावे छे. अपरिण्णायकम्मा खळु अयं पुरिसे जोइमाओ दिसाओ अणुदिसाओ अणुसंचरइ, सञ्चाओ दिसाओ सबाओ अणुदिसाओ साहेति (सू०८)

जे पुरुष (पुरिशां शयन करनार ते पुरुष) अथवा सुख दुःखोथी पूर्ण ते कोइएण जत अथवा माणस अहिआ पुरुषतुं पथानपणुं 🧗

अगचा०
शिक्षां ते लागा छ. पण पुरुष शब्द उपलक्षणमां चारे गतिमां फरनारो प्राणी छेवो. ते प्राणी अथवा पुरुष दिशा अने विदिशामां संचरे ते कर्मना स्वरूपने जाणतो नथी. तेथी अपरिकात कर्मा छे. (सूत्रमां स्वलु शब्द निश्चपरूप छे.) ते निश्चे दिशा विदिशामां भमे छे. पण कर्मने जाणनारो भमतो नथी आ उपलक्षण छे. पण एम जाणवुं के अपरिकात आत्मा अने अपरिकात कियावालो पण जाणवो अने जे अपरिकात कर्मा छे. ते दरेक दिशा विदिशाओमां पोताना करेला कर्मी साथे बीजी गतिमां संचरे छे.
(मूळ सूत्रमां सर्व शब्द एटला माटे छे के बधी प्रकापक दिशाओ तथा भाव दिशाओनो पण साथे संग्रह करवो) ८ ते आत्मा तथा कर्मने न जाणनारो शुं फळ पामे छे, ते बतावे छे.

अणेगरूवाओ जोणीओ संघेइ, विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ (सू०९)

अनेक संकट विकट विगेरे रुप योनियोमां छे ते योनीमां उत्पन्न थाय छे. योनीनुं खरूप जेमां उदारिक श्रीर वर्गणाना प्रद्राष्ट्रो साथे जीव पोते जोडाय छे ते. एटछे जीवोनुं उत्पत्तिस्थान ते योनीयो छे.

योनीओनुं स्वरूप अनेक मकारनुं छे 'संदृत' एटले ढंकायती 'विदृत' एटले खुली तथा बन्ने मकारनी, तथा शीत, अने उष्ण एम भेदो छे. अथवा चोराश्री छाल भेदो छे नीचे मगाणे.

पुढवीजलजलणमारुय, एकेके सत्त सत्त लक्खाओ। वण पत्तेय अणंते, दस चोइस जोणि लक्खाओ ॥१॥

आचा

॥ ६९ ॥

विंगािंदि एसु दो दो चउरो चउरो य णारयसुरेसुं। तिरिएसु हुंति चउरो चोहस लक्खाय मणुएसु ॥२॥
पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु, ए दरेकनी सात सात लाख योनि छे. पत्येक साधारण वनस्पतिकावनी चौद अने दस लाख योनि छे. विकलेन्द्रिय एटले वे इन्द्रिय, त्रण इन्द्रिय, चार इन्द्रिय, दरेकनी बब्बे लाख छे. अने नारकीय तथा देवलोकनी चार चार लाख छे. तिर्वेच पंचेन्द्रियनी पण चार लाख अने मनुष्यनी चौद लाख छे. तथा शुभ अशुभ भेदवढे योनियोनुं अनेक रूप पणुं छे. ते गाथाओथी बतावे छे.

सीयादी जोणीओ चउरासीती य सयसहस्साइं। असुभाओ य सुभाओ तत्थसुभाओ इमा जाण ॥१॥ शितादि भेदथी चोराज्ञी लाख योनियों छे. तेना श्रम अने अश्रम एवा वे भेद छे. तेमां श्रम योनियों नीचे ममाणे. असंखाउमणुस्सा राईसर संखमादिआऊणं। तित्थगरनामगोत्तं सबसुहं होइ नायव्वं ॥ २ ॥ तत्थिव य जाइसंपन्नतादि सेसाउ हुंति असुभाओ। देवेसु किविसादि सेसाओ हुंति उ सुभाओ ॥ ३ ॥ पंचिंदियतिरिएसुं हयगयरयणे हवंति उ सुभाओ। सेसाओ अ सुभाओ सुभवण्णेगिंदियादीया ॥ ४ ॥ देविंदचक्रविटतणाइं मोतुं च तित्थगरभावं। अणगारभाविताविय सेसा उ अणंतसो पत्ता ॥ ५ ॥ असंख्य अधुवाळा (जुगलीभा मनुष्यों.) अने संख्याता आधुवाळा राजेश्वर विगेरे तथा तीर्थकर नाम गोत्रवाळा जे जीव होय छे.

सूत्रम ॥ ६९ ॥

अाचा०

तिमने बधुं शुभ होय छे. अने तेमां पण जाति स्मरण ज्ञानवाळा विगेरे शुभ होय छे. अने बाकीना अशुभ जाणवा. अने देवपोनिमां पूजा किल्विषया ज्ञिवाय बीजी देवपोनिओ शुभ जाणवी. ॥ २-३ ॥

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनीयोमां घोहा, हाथी, विगेरे जे चक्रद्यत्तिमां रत्नो छे, ते शुभ योनि तथा शुभ वर्णवाळा एकेन्द्रिय विगेरे शुभ होय छे (४) देवेन्द्र तथा चक्रद्यत्तिपणामां तथा तीर्थं कर भावने मूकीने तथा भावित अनगारो (साधु) मुकीने वाकीना है ॥ ७० ।

आ अनेक रुपवाळी योनियोने दिशा विदिशायां पर्यटन करनारों कर्मने न जाणनारों आत्मा पोतानी साथे जोडे छे (योनिमां भमें छे) एटले योनी साथे संधि करे छे. कोइ जगाए 'संघावइ' पाठ छे. तेनो अर्थ आ छे के वारंवार ते योनियोमां जाय छे. अने तेना संधानने अनुभवे छे ते बतावे छे. विरुप एटले विभत्स अमनोक्षरपवाला स्पर्शों जे दुःख देनारा छे ते दुःख समुदने स्पर्श करवाथी पीडाय छे. 'तात् स्थ्यात् 'शब्दथी तेनो न्यपदेश कर्यों छे माटे जाणवुं के दुःखो भोगवे छे. आ तो उपलक्षण मात्र वेदना छे. के एवा स्पर्शोने अनुभवीने दुःख भोगवे तेवी रीते शरीर संबंधी अने मन संबंधी पण दुःखां अनुभवे छे. (नारकीनी अंदर जीवोने ते स्थाननी वेदना शरीरने पीढे छे. तेम मनमां विकल्पोनां पण घणां दुःखो छे. ते वताव्यां छे.)

अंदर जीवान त स्थानना बदना भरारन पाड छे. तम मनमा विकल्पना पर परा पुरस्त छैं । तथा संसारमां रहेनारा सर्व जीवोनो समुद्द दुःख क्रिं भोमचे छे. एम बताबवा माटे स्पर्श लीघो छे. वळी अहिं आ पण कहेबुं के खराव एवा रूप, रस, गंघ, अने शब्द तेने पण अनुभवे हिं छे. स्पर्शीतुं विरुप रूप थवानुं कारण पूर्वे करेलां जो पापो ते उदयमां आवतां कारणहप थइने कार्यमां स्पर्शपणे अनुभवावे छे.

पम जाणवुं. विचित्र कर्मना उदयथी कर्मनुं सहप न जाणनारो संसारी स्पर्शादि विरुप रूप अनेक जुदी जुदी योनियोमां विपाकथी क्रिं पटले फलरूपे भोगवे छे. कर्णुं छे के—

॥ ७१॥

तैः कर्मीभः स जीवो विवदाः संसार चक्रमुपयाति । द्रव्यक्षेत्राद्धाभावभिन्न मावर्तते बहुदाः ॥ १॥

नरकेषु देवयोनिषु तिर्थग्योनिषु च मनुष्ययोनिषु च । पर्यटित घटियन्त्रवदात्मा विश्रव्छरीराणि ॥२॥ सततानुबद्धमुक्तं दुःखं नरकेषु तीवपरिणामम् । तिर्यक्षु भयक्षुनृड्वधादि दुःखं सुखं चाल्पम् ॥ ३ ॥ सुख दुःखे मनुजानां मनः शरीराश्रये बहु विकल्पे। सुखमेव हि देवानां दुःखं स्वल्पं च मनसि भवम् ॥४॥ कर्मानुभावदुःखित एवं मोहान्धकार गहनवति । अन्ध इव दुर्गमार्गे भ्रमति हि संसारकान्तारे ॥ ५॥ दुःखप्रतिकियार्थे सुखाभिलाषाच पुनरि तु जीवः। प्राणिवधादीन् दोषानिधितिष्टति मोहसंछन्नः ॥ ६॥ बधाति ततो बहुविधमन्यत्पुनरपि नवं सुबहु कर्म । तेनाथ पच्यते पुनरग्नेरिंग प्रविद्येव ॥ ७ ॥ एवं कर्माणि पुनः पुनः स बध्नंस्तथेव मुश्चंश्च । सुखकामो बहुदुःखं-संसारमनादिकं श्रमति ॥ ८ ॥ एवं भ्रमतः संसारसागरे दुर्लभं मनुष्यत्वम् । संसारमहत्त्वाधार्मिक-त्वदुष्कर्म बाहुल्यैः ॥ ९ ॥

आचा०

11 199 11

आयों देशः कुल्रह्रपसंपदायुश्च दीर्घमारोग्यम् । यतिसंसर्गः श्रद्धा धर्म श्रवणं च मतितेक्ष्ण्यम् ॥ १० ॥ एतानि दुर्लभानि प्राप्तवतोपि दृढमोहनीयस्य। कुपथाकुलेऽर्हदुक्तोऽति दुर्लभो जगति सन्मार्गः ॥ ६१ ॥

ते कर्मोथी जीव परवश थहने संसार चक्रने पामे छे. अने द्रन्य, क्षेत्र, काळ, अने भाव, ए चारेमां घणीवार वदलाय छे ॥ १ ॥ नरकमां देवयोनि तिर्यंच योनि अने मनुष्य योनिमां घटी बंतनी माफक नवां नवां शरीर करीने आत्मा भमे छे ॥ २ ॥ इंमेशा बांबेखां पूर्वे कहेलां तीव परिणामवालां नरकना दुःखो भोगवे छे. तथा तिर्यंच योनिमां, भय, भूख, तस्श, वध तथा मार विगेरे घणां दुःखो अने थोडां छखने भोगवे छे ॥ ३ ॥ मनुष्यना छख दुःखमां मन अने शरीर आश्रयी वह विकल्पो छे. एटले तेमां 💢 मुख दु:खनो निश्चय नथी एटले देवोने मुख तो छे पण तैमने मन संबंधी थोडुं दु:ख छे ॥ ४ ॥ कर्मना अनुभवधी दु:खी ययेलो आत्मा अंधनी माफक मोहान्धकारे गहन अने कठण मार्गवाळा संसाररूप वनमां जीव निश्रये भमे छे ॥ ५ ॥ (पण नीकळी शकतो 🦠 आत्मा अथना भाषक माहान्यकार गहन जन कथ्य मागवाळा सतारएप बनमा नाव निवस नव छ । राम राम निवस कथि। दार्यने दार्था (धर्मने नामे अथर्म) करे छे ॥ ६ ॥ ते अज्ञानी जीव तेथी घणे मकारे घणां पाप अने तेथी एकवार अग्निमांथी नीकळेळो बीजी वस्तत अग्निमांज मवेश करे तेनी माफक दुःख्यी बळे छे ॥७॥ आ ममाणे ते जीव कर्मोने फरी फरीने बांधतो अने भोगवीने मुक्त थतो अनादि काळथी सुखनी इच्छाबाळो बहु दुःखवाळा संसारमां भमे छे ॥ ८ ॥ ए ममाणे संसार सागरमां भमतां भमतां दुर्छम मनुष्पपणुं पामीने

सूत्रम

। ५२ ॥

11 93 11 1

विशाळ संसारमां विश्वरूप अधार्षिकत्व दुष्कर्म प्राय होवाथी जीवो धर्म करी शकता नथी ॥ ९॥ आर्थ देश, उत्तमकुळ, रूप, दें संपदा आयुः, अने छांवा काळ सुधी आरोग्यता तथा यित (साधु) संसर्ग तथा तेमना वचन उपर श्रद्धा तथा धर्मनुं सांभळवुं अने तेनी बुद्धिमां विचार करवानी शक्ति आववी ए वधुं दुर्छम छे ॥ १०॥ ते मळे ते बधुं थाय छतां पण चीकणा मोहनीय कर्मथी कि शुप्यमां पडेछा जीवोने आ जन्तमां जीनेश्वरे कहेछो सन्मांग पामवो वहुज सुक्केळ छे. ॥ ११॥ अथवा जे पुरुष वधी दिशा हिन्दी ॥ ७३॥ विदिश्वामां अनुसंबरे छे. तथा अनेक रूपवाळी घोनियोमां दोडे छे. अने विरूष रूपवाळा स्वश्नोंने अनुभवे छे. ते मनुष्य कर्म बंध-ननी कियाथी अजाण्यो होवाथी, मन, वचन, अने कायावडे कर्म करे छे. पोते जाणतो नथी के में पूर्वे करेलां छे. कर्छ छुं अने जे करीश ते बंधां कमों जीवोने दुःख देवा रूप होवाथी ते सावध छे अने ते बंधननां हेतु छे. अने तेथी अज्ञान दशापांज ते जीवोने पीडा करनारां इत्योमां तैयार याय छे अने तेनाथी आठ मकारनां कर्म वंध थाय छे. अने तेना उदयथी अनेक रूपवाळी योनिमां अनुक्रमे अवतरे छे अने विरुप रुपवाळा स्पर्शनो अनुभव करे छे. ॥ ९ ॥ जो आज प्रपाणे छे. तो शुं करवुं ते बतावे छे.

्तत्थ खळ्ळ भगवता परिषणा पवेड्या (स्. १०)

उपर कहेंछा व्यापारने में क्यों करुं छुं अने करीश, एवी आत्मानी जे परिणति छे, ते स्वभावपणे मन, वचन, अने कायाना व्यापार रुपमां परिज्ञान ते परिज्ञा छे. अने ते मकर्षथी मशस्त छे. एम श्रीमहावीर मग्रुए वताव्युं छे. एम सुधर्मा स्वामी जंबूस्वामीने कि कहे छे ते परिज्ञा वे पकारनी छे. जपि श्री मन्याख्यान परिज्ञा तेमां भगवान कहे छे के सावाय व्यापारथी बंध थाय छे. एम

🔊 जाबबुं ते इपरिक्षा छे अने त्यागवुं ते ने मत्याख्यान परिक्षा छे. निर्वृक्तिकार तेज अर्थने कहे छे. जावार्ष ते क्रपरका छ अने त्यागवु ते ने मत्याख्यान परिक्षा छ. नियुक्तिकार तेज अर्थन कह छ.

तत्थ अकारि करिस्संति बंध चिंता कया पुणो होइ । सहसम्मइआ जाणइ कोइ पुण हेतुजुत्तीए ॥६०॥
तेमां पटले कियाथी वंधाता कर्ममां शुं थयुं ते कहे छे. कर्युं अने करीक आ भिवष्य अने भूतकाल लेवाथी वचमां रहेल वर्तमान काल पण आवी जाय छे तथा करवा साथे करावर्ष अने कर्ताने अनुमोद्युं ए दरेकना वण वण भेदो गणतां नय थया ते
आत्म परिणाम घणे योग (व्यापार रुपे लिधेला जाणवा तेमां आ आत्म परिणाम रुप किया विशेषवडे बंधनी चिंता करी छे एटिले बंधनुं उपादान लीधुं छे. कारण जे जैन काल्यमां कत्नुं छे के 'योग निमिन्ते कर्म बंधाय छे ' अने आ कोइक पुरुप जाणे छे हो सन्मित्त अथवा स्वमित आत्मानी साथे छे. ते अवधि मनःपर्याय केवलकान तथा जातिसाएण रुप कान छे तेना वडे जाणे छे.
अने कोइतो पक्ष धर्म, अन्वयन्यतिरेक लक्षण वाळी हेतुनी युक्ति वढे जाणे छे. हवे अक्वानी जीव शामाटे आवा कदवा विपाकबाला कर्मना आश्चव रुप हेतुभूत क्रिया विशेषमां पवर्ते छे ? आ शिष्यना मश्ननो उत्तर आपे छे.

इमस्स चेव जीवियस्य परिवंदणमाणण प्रयणाए। जाईमरण मायणाए दुक्खपिडघायहेउं (सू. ११) तेमां जेनावडे जीवे छे ते जीवित एनाथी आयुःकर्भ बढे माणतुं धारण करतुं छे. अने ते दरेक माणीने जाणीतुं छे. तेथी रित्यक्ष आसन्त वाची 'इदम ' शब्दवढे मयोग कर्णों से (स्वास्त्राम्यक्ष आसन्त वाची 'इदम ' शब्दवढे मयोग कर्णे से (स्वास्त्राम्यक्ष क्षेत्राम्यक्ष क्षेत्र क भत्यक्ष आसम्भ वाची 'इदम्' शब्दवढे भयोग कर्यो छे (गुजरातीमां आ जीवित माटे वपराय छे) चकार हवे पठी कहेवानी

आचा

छे तथा वीजळीना जेवुं चंचळ छे. जेमां बहु विध्न छे, ते जीवितना लांबा सुखने माटे क्रियाओमां मवर्ते छे. ते आ ममाणे.
हुं रोग विना जीवीश, सुखधी भोगो भोगवीश. वळी व्याधि दूर करवा माटे स्नेहपान (मिंदरा विनेरे पीवुं) तथा लावक पिश्चित (तितरतुं मांस) भक्षण विगेरे क्रियामां वर्ते छे. तथा अल्प सुखने माटे अभिमान ग्रहवडे आहुळ चित्तवाळो थइ घणा क्रियामां परिग्रहवडे घहु अशुभ कर्मो उपार्जन करे छे. कहेल छे के—

द्वे वाससी प्रवरयोषिद्पायशुद्धा, शय्यासनं करिवरस्तुरगो रथो वा ।
काले भिषग्नियमिताशनपानमात्रा, राज्ञः पराक्यमिव सर्वमवेहि शेषम् ॥ १ ॥
सुंदर वे मकारनां वस्रो, युवान स्त्री, सुख उपजावे पत्री सुंदर शय्या, आसन, हाथी, योहा, रथवाळा राजाने पण काळ आवी पहेंचे छे. ते वस्रते वैद्ये कहेळा नियमथी बांधी आपेळा खानपान शिवाय बीजुं वधुं पारका जेवुंज यह जाय छे एम समजो. ॥१॥
पुष्ट्यर्थमन्नमहियत्प्रणिधिप्रयोगैः संत्रासदोषकळुषो नृपतिस्तु भुङ्क्ते ।

यित्रभेयः प्रशामसोख्यरितश्च मैक्षम् तस्त्रादुतां भृशमुपैति न पार्थिवान्नम् ॥ २ ॥
नोकर चाकर द्वाराना त्रासथी पीडावलो राजा पोतानी पुष्टिने माटे जे अत्र खाय छे. पण भय विनानो अने शांतीना सुख्यां
भीतीवालो साधु भिक्षामां जे आनंद माने छे तेवो आनंद अने स्वाद राजानुं अस आपतुं नथी. ॥ २ ॥

सूत्रम् ॥ ७५॥ आचा०

11 95 11

भृत्येषु मन्त्रिषु सुतेषु मनोरमेषु कान्तासु वा मधु मदांकुरितेक्षणासु । विश्वम्भमेति न कदाचिद्षि क्षितीशः । सर्वाभिशंकितमतेः कतरत्तु सीख्यम् ॥ ३ ॥

नोकरोमां, मधानोमां, वधी रीते सुन्दर एवा पुत्रोमां, अने सुंदर नयनवाळी पोतानी स्त्रीयोमां पण राजा कोइ दिवस विश्वास राखी शकतो नथी. तो वधी जमे पर शंका बाळाने तो सुख क्यांथीज होय ! ॥ ३ ॥

तथी आ ममाणे न जाणतो एवो तरुण कोमळ खाखराना फुलनी माफक चंचळ जीवितमां आनंद माननार अने जीवोने इणवा विगेरे कृत्योमां आनंद मानवाथी तेमां प्रवर्ते छे. अने ते वधुं जीवितना, परिवंदन, मान, पूजनने माटे करे छे. (अहिं परिवंदननो 🌓 अर्थ संस्तव अने मशंसा छे.) एटले पशंसा माटे पाप करे छे. जेमके हुं मोर विगेरेना गांस पक्षणथी, बळवान, तेजथी देदीव्य-मान देवकुमार जेवो लोकोमां मर्शसा पात्र थइश, तथा मानन, (उभा थवुं, आसन आपवुं, हाय जोडी पमे लागवुं) विमेरेमां 🕇 योग्य थइस एवी इच्छाथी तेमें माटे चेहा करीने कर्ष एकडां करे छे. तथा पूजन एटले द्रविण, (धन), वस्न, अन्न, पान, सत्कार, मणाम तथा सेवा विगेरे रूपवाळी छं ते अथवा तेने माटे क्रियाओमां कर्माश्रवीवडे आत्माने दोरवे छे. तेन प्रमाणे वीर भोग्या वसुंधरा मानीने खढाइओ करे छे, अने दंढना भगशी पत्रा दरे एम धारी दंढे छे. जेवी रीते पशंसा मान अने पूजाना भुख्या राजाओ अधर्म करे छे. ते ममाणे बीजा जीवोने आश्रयी पण जाणी छेतुं (परोपकार माटे तन मन तथा धन आपतां जो के प्राप्तिकियाओ छागे छे, अने तेनाथी मशंसा विगेरे पण धाय छे. होनो निषेध आ जगोए नथी, परंतु जेओ खास राजा

सूत्रम् ॥ ७६ ॥

जगोए बताबेला होवाथी अहिआं निह बताबीए अने पृथितीना जे निक्षेषा विगेरे संभवे ते निर्धुक्तिकार बताबे छे.

पुढवीएनिवरखेवो, परूवणालकखणं परीमाणं। उन भोगो सत्थं वेयणा य नहणा निनित्ती य ॥ ६८॥

पूर्वे जीवना उद्देशमां जीवनी परुपणा केम न करी? एवी शंका न करवी कारणके जीवात्मा सामान्य छे. तेनो विशेष अधारपणे पृथ्व्यादिरुपपणे होवाथी सामान्य जीवनुं उपभोग विगेरेनुं थवुं. असंभव छे. जीव जे खाय छे. अथवा जे जे जीवनो विनाश करे छे. ते जीवनो निह पण जीव संबंधी कायानो छे. माटे जीवने बदले पृथिवी विगेरेनी चर्चाथी जीवनी जितवना फरी छे तेमां पृथिवीनो नामादि निक्षेषो कहेवो अने मरुपणामां तेना सक्ष्म, बादर विगेरे भेदो कहेवा, अने छक्षण ते साकार अने अनाकार उपयोग सामान्य देखवुं ते अनाकार अने विशेष देखवुं ते साकार, तथा काय योग विगेरे छे. परिमाण एटछे संवर्तित छोकना प्रतरना असंख्येय भाग मात्र छे. अने उपभोग ते शयन, आसन अने संक्रमण चालवुं विगेरे छे. शस्त्र ते स्नेष्ठ, अम्छ, खाटो रस तथा खार विगेरे छे. वेदना ते पोताना श्वरीरमां अव्यक्त चेतनारूप, ते सुख दु:खनो स्वभाव छे एम जाणवुं. विवस्त ते कर्युं, कराव्युं, अने अनुमोशुं, ए विगेरेथी जोवना उपमर्दन रूप छे. निष्टत्ति एटछे अप्रमत्तपणे साधुना मन, वचन, काय एसिवडे जीवोने दु:ख न देवुं ते आ वधा गाथामां आवेछा शब्दोनो दुंकामां अर्थ छे. पण विशेष तो निर्धुक्तिकार अनुक्रमे कहे छे. वहें जीवोने दुःख न देवुं ते आ वधा गायामां आवेला शब्दोनो हुंकामां अर्थ छे. पण विशेष तो निर्धुक्तिकार अनुक्रमे कहे छे. नामंठवणा पुढवी, दब्वपुढवी य भाव पुढवी य । एसो खलु पुढवीए, निक्खेवो चउबिहो होइ ॥६९॥ नाम स्थापना पृथिवी, तथा द्रव्य भने भाव पृथिवी, एम चार मकारे पृथिवीनो निक्षेपो थाय छे. तेवो अर्थ गायामां छे. हवे नामंठवणा पुढवी, दबपुढवी य भाव पुढवी य। एसी खल्ल पुढवीए, निक्खेवी चउबिही होइ ॥६९॥

आचाः ॥ ८२ ॥ नाम स्थापना सुगम होवाथी तेने छोडीने द्रव्य पृथिवीनो निक्षेषो कहे छे.

दबं शरीर भिवओ, भावेण य होइ पुढिविजीवो उ। जो पुढिविनामगोयं, कम्मं बेएइ सो जीवो ॥७०॥

द्रव्य पृथिवी आगमथी अने नोआगमथी एम वे मकारे छे. आगमथी जाणनारो पण, तेनो तेमां उपयोग नथी, अने
नोआगमथी पृथिवी पदार्थने जाणनारो जीव, शरीर मूकी गयेछो ते. इ शरीर अने भविष्यमां जाणशे ते बालक विगेरे भव्य

शरीर, आ वे शिवाय द्रव्य पृथिवी जीव, एक भिवक, बद्ध आयुष्क, तथा अभिमुख नामगोत्र छे. ए तण भेदो छे. आनं वर्णन
दशवैकालिकमां, दक्षना निक्षेषामां छपायछं छे. पाने ५१ मे जोवुं.

्रभाव पृथिवी जीव, जे पृथिवी नामादिकमें उदयमां आव्युं होय तेने वेदे छे.√निक्षेपद्वार पूरुं थयुं. हवे मरुपणाद्वार कहे छे. दुविहा य पुढवि जीवा, सुहुमा तह बायरा य छोगंमि । सुहुसा य सब्रुछोए, दोचेव य बायर विहाणा ॥ ७१॥

वुनिहा य पुढ़िन जाना, सुहुमा तह बायरा य लोगोम। सुहुया य सन्नलोए, दोन्नेन य बायर निहाणा॥ ७१॥

पृथिनी कायना ने भेद छे. सहम अने नादर. ते आ प्रमाणे, सहम नाम कर्मना उदयवी सहम, अने नादर नामकर्मना उदपश्ची नादर, कर्मीना उदयथी तेम मुं सहम बादर पणुं छे. इन्द्रियोथी न देखाय ते सहम, अने इन्द्रियोथी देखाय ते बादर, ज्यवहारमां नोर अने आमळुं एक नीजानी अपेक्षाए नानां मोटां गणाय पण ते अहिं न छेनुं. दावडामां हांसी हांसीने भरेला गंधना
अवयवोने छुटा फेंक्या होय अने तेमांथी सुगंधी उड़े अने दावटो खाली थई जाय पण देखाय निह, तेनी माफक सर्व छोक
होता होया होया अने तेमांथी सुगंधी उड़े अने वादर, ते मूळ भेदथी ने मकार छे. ते नताने छे.

सुन्नम् ॥ ८२ ॥ आचा० ॥ ८३ ॥ दुविहा बायरपुढवी समासओ सण्हपुढिव खरपुढवी सण्हा य पंचवण्णा अवरा छत्तीसइविहाणा ॥ ७२॥
संक्षेपथी बादर पृथिवी वे मकारनी छे. सुंवाळी बादर पृथिवी, अने खडवचढी बादर पृथिवी, तेमां सुंवाळी बादर पृथिवी छी. अहिंभा गुणना भेदथी गुणीनो भेद जाणवो. हवे खडवचढी पृथिवी ३६ मकारनी छे ते बतावे छे.

पुढ़वी य सकरा वालुगा, य उवले सिला य लोणूसे। अय तंब तउअ, सीसग, रूप सुवण्णे य वहरे य ॥ ७३॥ हिरियाले हिंगुलए, मणोसिला सासगंजण पवाले। अवभवडलव्भवालुअ, बायरकाएमणिविहाणा ॥ ७४॥ गोमेजाए य रुयगे, अंको फलिहे य लोहियक्खे य। मरगय मसारगळे भुयमोयग इंदनिले य॥ ७५॥ चन्दप्पह वेरुलिए, जलकंते चेव सूरकंते य। एएखरपुढ़वीए, नामं छत्तीसयं होइ॥ ७६॥

पहेली गाथामां पृथिवीना चौद भेद छे. चीजीमां हरिताल विगेरे आठ अने त्रीजीमां गोमेदक विगेरे दश अने चोथीमां चंद्र-कान्त विगेरे चार भेद छे. अहिं पहेली वे गाथावडे सामान्य पृथिवीना भेद कह्या ए उत्तरनी वे गाथाओवडे मणिना भेद बताय्या. आ गाथाओ स्पष्ट होवाथी टीकाकारे वधारे खुलासो कर्यो नथी. पण सामान्य बुद्धिवाळा माटे वधा भेदो लखीए छीए (१) पृथीवी (२) शर्करा (३) वालुका (४) उपल (५) शीला (६) छण (७) उस (८) लोहुं (९) तांबु (१०) तरवुं (११) सीसुं (१२) रुपुं

सूत्रम् ॥ ८३ ॥

आचा०

(१३) सोतुं (१४) वज (१५) इस्ताल (१६) हिंगलोक (१७) मणशील (१८) सासक (१९) धुरमी (२०) परवाल (२८) अञ्चल (२५) कोहिताक (२८) मरकत (पातुं) (२९) मसार्गल (३०) भूजमोचक (३१) इन्द्रनील नीचेनी टिप्पणी अपकाय के के चंदन गेरुं इंसग, आ विगरे रन्ननाज भेदो के, ते वश्रीसमुं जाणवुं (३३) च्राप्य (३४) वैहुर्व (३५) जलकात (३६) सुर्यकात मूक्ष्म वादर भेदोने अ ममाणे चतावीने हवे वर्ण विगरेना भेदवडे पृथिवीना भेदा वताने के. वण्णरसगंधकासे, जोणिप्यमुहा भवंति संखेजा। णेगाइ सहस्साइं, हुंति विहाणंमि इक्कि ॥ ७७ ॥

वर्ण ते घोळा विगेरे पांच, अने रस ते तीखा विगेरे पांच अने गंध ते सुगंधी तथा दुर्गधो एवा वे तथा मृदु कक्षी विगेरे आठ स्पर्ध तेमां एकेक वर्णादकमां पण योनी विगेरे घणाज भेद थाय छे, संख्येयतु अनेकहप पणु होवाथी, विशिष्ट संख्याना अर्थने कहे छे. अनेक हजार एक एक वर्णादिकना भेदो थाय छे. कारण के भेदो यानिथी, अने जुदा जुदा सुणोधी थाय छे. अने ते वधा मळी सात छाख योनि ममाण छे. पृथिवीकायनुं स्वरूप महापना सुत्रमां कह्युं छे के—

"तत्थ णं जे ते पजनगा एएसि णं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेण

विहाणाई संखेजाई जोणिपमुहसयसहस्साई पजात्तयणिस्साए अपजात्तया वक्रमंति, तं जत्थेगो

तस्थ नियमा असंखेजा, से सं खरबायरपुढवीकाइया ॥ "
तिमां जे पर्याता छे, ते पोताना वर्ण आदेशयी, गंथ, रस, अने स्पर्श आदेशयी, हजारो मकारना भेदो छे. योनि निमेरे लाखो गणत्रीए छे. अने पर्याप्तानी निश्रांए, अपर्याप्ता च्युत्करे छे. एटले ज्यां एक पर्याप्त होय त्यां असंख्यात अपर्याप्त होय छे आ
पमाणे लर बादर पृथिवीकाय जीव जाणवा, अहिं आ सहत्त योनिवाळा पृथिवीकायिक कहा, अने ते सचित्त, अचित्त, अने
पिश्र, तथा शीत उष्ण अने ते बेड एम भेदो जाणवा, आ योनिना भेद छे. तेज फरीथी मिर्युक्तिकार खुलासावार कहे छे.

वण्णंमिय इकिके, गंधंमि रसम्मि तह य फासम्मि । नाणत्ती कायव्या, विहाणए होइ इकिकं ॥ ७८ ॥

वर्णादिक एकेक भेदमां इनारो मकारे जुदा जुदावणुं जाववुं. जेमके काळो रंग ए सामान्य छे, वण तेमां भगरो, कोयलो, 🖟 कोयल, (गवल) अने कामळ काइमां वधारे अने काइ ओछी काळाश छे. ते भेद छे. तेथी कोइ काछ अने कोइ तेथी काछ र कोइ वधारे काछं ए मनाणे लीला विगेरे वधा रंगामां जाणवुं. ते मनाणे रस, गंध, अने स्वर्शमां पण जाणवुं तथा रंगोमां पण परस्पर मेळववाथी धूसर, केशरी, कर्बुर, काबरिवलें विगेरे बीना रंगनी पण उत्पत्ति थाय छे एन विचारीने कहेबुं. ए ममाणे वर्णादिकना पत्येकमां मकर्ष अने अन्नकर्षपणे परस्पर अनुवेध सरखामणी वढे घणा भेदो थाय छे. एम जाणवुं. इवे फरीथी पर्याप्त विगेरेना भेदो जणावे छे.

जे बायरे विहाणा, पज्जता तत्तिआ अपज्जता । सुहुमावि हुंति दुविहा, पज्जता चेव अपज्जता ॥ ७९ ॥

अाचा० के बादर पृथिवीकायना मेदो बताच्या ते जेटला पर्याप्ताना छे तेटलान अपर्याप्तानां छे. आ सरलापणुं मेदने आश्रयीने अश्रयीने मानबुं जीवोनुं सरलापणुं न मानबुं कारण के एक पर्याप्ताने आश्रयी असंख्यात अपर्याप्ता होय छे. सहम पण पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम बे मेदे जाणवा, पण अपर्याप्तानी निश्राये पर्याप्ता उत्पन्न थाय छे. जेमां एक अपर्याप्तो त्यां तेने आश्रयी असंख्यात पर्याप्ता निश्चे होय छे. हवे पर्याप्तिओ बतावे छे.

आहारसरीरिंदियऊसासवओमणोऽहि निव्वत्तो होति जतो दलियाओ, करणं पइसाउ

आहारसरीरिंदियऊसासवओमणोऽहि निव्वत्तो होति जतो दिलयाओ, करणं पइसाउ पजनती ॥१॥
आहार, श्ररीर, इन्द्रियो, श्वासंश्वास, वचन, मन, एआंनी अभिनिई ति (संपूर्ण रीते माप्ति) थाय छे. जे समूहथी करतुं तेनी ते पर्याप्ति कहेवाय, एटले एक गतिमांथी जनारो बीजी गतिमां उत्पन्न थाय त्यां मथम पुहलने ग्रहण करीने निर्वाह करे छे. ते करण विशेष वहे एटले आहारने लीधे लुदुं खल रस विगेरे भाव वहे परिणाम पमाहे, तेवु करण विशेष एटले आहार तेने पर्याप्ति कहे छे ए ममाणे बीजी पर्याप्तिओ एक जाणवी (आत्मा कर्मने आश्रयी नवी गतिमां उत्पन्न थतां जे शक्ति वहे आहारनां पुद्गलो छह सके ते आहार पर्याप्ति जाणवी. तेज ममाणे आहार छीथाथी शरीररूपे बनावे तेज ममाणे वधी पर्याप्तिओ जाणवी.) तेमां एकेन्द्रिय जीबोने आहार, श्ररीर इन्द्रिय, अने उच्छवास नामनी चार पर्याप्तिओ छे. आ चार पर्याप्तिओने अंतर्ग्रहर्तमां (अहतालीश मीनीटनी अंदर) जीव ग्रहण करे छे. अनाप्त पर्याप्ति एटले पर्याप्त पूरी कर्या विनानो जे जीव होय ते अपर्याप्त कहेवाय, अने जे पर्याप्त पूरी करे ते पर्याप्त कहेवाय, प्रिवीकायनो विग्रह आ ममाणे करतो. पृथिवी तेजकाय जेनी छे ते पृथिवी काय जाणवा

आचा

11 00 11

जेम सूक्ष्म बादर भेदो सिद्ध थाय छे तेमांना मसिद्ध भेदो उदाहरणधी बतावे छे.

रुक्खाणं ग्रुच्छाणं ग्रुम्माण लयाण बिह्नवलयाणं । जह दीसइ नाणत्तं, पुढवीकाए तहा जाण ॥ ८० ॥

जेम वनस्पतिने द्वाह विगेरेना भेदवहे जुदा जुदा पणुं जाणीए तेम पृथिवीकायमां पण नाणो. जेमके द्वास ए आंवा विगेरे ए एच्छा ते वेगण, शब्छकी अने कपास विगेरे छे. सुल्म छे ते नव मिल्छाका कोरंटक विगेरे, छतामां पुत्राम अश्लोक छता विगेरे अने विल्छीमां तुरीजं वालार अने कोशातकी विगेरे छे. वछयमां केतकी अने केळ विगेरे छे. वळी करीथी वनस्पति भेदना हुएांतवहे पृथिवीना भेदी बतावे छे.

ओसहि तण सेवाले, पणगविहाणे य कंद मुले य। जह दीसइ नाणतं, पुढवीकाये तहा जाण ॥ ८९ ॥ जैम वनस्पतिकायना औषि विगेरे भेद छे तेम प्विचीकायना पण जाणवा, औषिमां वाली कमोद विगेरे तृणमां दर्भ विगेरे शेवाळ ते पाणीना चपर मेळ बाजे छे ते, पनकते छाकडा विगेरे चपर चल लीडण फुलण विगेरे पांच वर्णनी होय छे. कंद ते सुरण विगेरे मूळ ते उद्यीरादि सुगंधी बाळो विगेरे आ सूक्ष्म, होवाथी एक, बे, विगरे भेद थता नधी. हवे जेनी संख्या सुर सबे ते बनावे से

्रकस्स दुण्ह तिण्ह व, संखिजाण व न पासिउं सका। दीसंति सरीराई, पुढविजियाणं असंखाणं ॥ ८२॥

स्**त्र**म्

गाथा स्पष्ट छे तेनो अर्थ आ छे के, एक, हे, अण, अने संख्याता जीवो एक एक शरीरमां रहेनारा देखाता नथी. पण असंख्याता जीवोना असंख्याता शरीर साथे मळे त्यारे तेनो समूह आपणी नजरे आवे, एवां तेमनां श्रीणां शरीर छे. आ केवी रि रीते मानवामां आवे के पृथिवीकायमां पण जीव छे? उत्तर-तेमां रहेला शरीरनी उपलब्धीथी शरीरमां रहेनार आत्मानी मतीति छे जेम गाय, घोडा विगेरेनी मतीति थाय छे तेम अहि पण जाणवी ते बतावे छे.

एएहिं सरीरे हिं पद्मवश्वं ते परुविया हुंति । सेसा आणागिज्झा, चक्खुफास न जं इंति ॥ ८३ ॥

असंख्यातपणे मेळवता पृथिवी शर्करा विगेरे जुदा भेदवाळा श्रारीरोवडे ते श्रारिताळा श्रारीरवडे साक्षात् कहेवाय छे. वाकीना

सुक्ष्म जीवो अ। पणी चुद्धिनी वहार होवाथी ते जिनेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे मानवा जाइए कारण के ते चक्षुए देखाता नथी. अहि 'स्वर्त्त' ए श्वन्द मूळमां छे. तेनो अर्थ चक्षुनो विषय एम करवो. महपणा द्वार पुरुं थयुं. हवे लक्षणद्वार कहे छे.

उत्रओगजोगअडझन,साणे मइसुय अचक्खु दंसे य । अडिनिहोदय छे या, सन्तुस्सासे कसाया य ॥ ८४ ॥ तेमां पृथिवीकाय विगेरे स्त्यानधि (एक जातनी उंध) ना उदयथी जे उपयोग शक्ति अव्यक्त छे ते ज्ञान दर्शन क्वाजी छे

एज रुपे उपयोग लक्षण छे. तथा योग ते कायानो एकलोज छे. अने औदारिक तथा औदारिकमिश्र तथा कार्मणरूप हद्ध माणसनी लाकड़ी समान कर्म धारी जीवोने आलंबन माटे बपराय छे. तथा अध्यवसाय ते आत्माना मुक्स परिणाम विशेष छे. अने ते लाकडी समान कम घारा जावान आलवन बाद वरराय छ. एया जन्मवता । जावा वर्ष जावा वर्षा साकार कि लिया क्षेत्रक वैतन्य पुरुषना मनमां उत्पन्न थयेली चिंता विशेषनी माफक ते लक्षमां न आवे तेवा जाणवा तथा साकार

विषोगमां समावेश थाय तेवा मित, धृत अज्ञानयुक्त पृथिवीकायिक जीव जाणवा तथा स्पर्शन इन्द्रिय वहे अवश्च दर्शन पामेला जाणवा तथा ज्ञान आवरणीयादि आठ प्रकारना कर्मना उदयने भजनारा तथा बांधनारा जाणवा. तथा लेडचा ते अध्यवसाय विशेषरूप छे तेमां कृष्ण, नील कापोत, अने तैजस. ए चार लेडचाने तेओ मेळवे छे. तथा दशविध संज्ञा पामेला छे. ते पूर्व आहार विगेरे कही गया छीए. तथा सूक्ष्म उच्छुश्त निश्वास सिंहत छे, कह्युं छे. के—

पुढिविकाइया णं भंते! जीवा आणवन्ति वा पाणवंति वा उत्सस्तन्ति वा नीससंति वा? गोयसा!

अविरहियं सत्यं चेत्र आणवन्ति वा पाणवन्ति वा ऊससंति वा नीससन्ति वा।

गौतम इन्द्रभूति महाराज पूछे छे. हे भगवन ! पृथिवीकायिक जीवो श्वास विगेरे छे छे? त्यारे जिनेश्वर भगवान कहे छे. हे गौतम! जरा पण विसामो लीघा विना पृथिवीकाय उसासो निसासो लीघा करे छे. तथा कषायो क्रोघादि पण सूक्ष्म होय छे. ए ममाणे जीव लक्षण ते उपयोग विगेरेथी लड्ने कषाय सुधीना पृथिवीकायना जीवोमां होय छे. अने ते जीव लक्षण समूहवाली होवाथी मनुष्यनी माफक पृथिवी पण सचित्त जाणवी. शंका-आपनुं कहेवुं ते असिद्धवहे असिद्धव साधवा जेवुं छे. केमके उपयोग विगेरे छक्षणो पृथिवीकायमां मगट देखातां नथी! उत्तर तमारुं कहेबुं सत्य छे के उपयोग विगेरे छक्षणो पृथिवीकायमां मगट देखातां नथी। कारण के ते छक्षणो तेमां अमगटएणे छे. जेम कोइ धाणस घणाज ममाणमां नसो चडे तेबुं मदिरा पान करे अने तेनुं चित्र व्याकुळ यह जाय तेथी तेने मगट भान होतुं नथी पण सूक्ष्म होय छे. तेटला माटे कंइ तेने अचित्र न गणी शकाय

समाधान करवा नीचेनी गाथा कहे छे

अही जहा सरीरंमि, अणुगयं चेयणं खरं दिष्ठं। एवं जीवाणुगयं, पुढिवसरीरं खरं होइ ॥ ८५ ॥ जेम भरीरमां रहेखं हाडकुं कठण छे पण चेतन छे. (कारण के हमेशां वधतु देखाय छे) तेवीन रीते जीववाछं पृथिवी भरीर कि कठण छे. हवे छक्षणद्वार कहीने तुरतन परिमाणद्वार निर्युक्तिकार कहे छे.

जे बायारपज्जत्ता पयरस्स असंखभागमित्ताते, सेसा तिन्निवि रासी, वीसुं स्रोया असंखिजा ॥ ८६ ॥ वृधिवीकाय चार पकारे छे ते आ ममाणे छे-

आचा**०** ॥ ९१ ॥ (१) बादर पर्याप्ता (२) बादर अपर्याप्ता (३) सूक्ष्मअपर्याप्ता (४) सूक्ष्म पूर्याप्ता, तेमां जे बादर पर्याप्ता छे ते संवर्तित होक्समं जे मतर छे तेना असंख्येय भाग मात्रमां रहेनारा प्रदेशनो जे समूह तेनी बरोबर जाणवा, बाकीनी त्रण राश्चीओ प्रत्येक छे. ते असंख्यात छोकाशाना जेटला आकाश प्रदेश तेनी राशी प्रमाणे जणवा आचारे भेदे अनुक्रमे एक एकथी प्रणान जाणवा, कहा छे के सक्ति स्वत्येवा बादरपुढिविकाइया पज्जत्ता, बादरपुढिविकाइया अपज्जत्ता, असंख्वेज्यगुणा, सुहुम पुढिविकाइया, अपज्जत्ता, असंख्वेज्यगुणा सुहुमपुढिविकाइया पज्जत्ता असंख्वेज्यगुणा।

बादर पर्याप्ता सौधी थोडा छे तेना फरतां वादर अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे. तेनाथी सू० अपर्याप्ता असंख्यात गुणा अने तेनाथी सू० पर्याप्ता असंख्यात गुणा छे. इवे बीजी रीते त्रण राज्ञानुं परिमाण बतावे छे.

परथेण व कुडवेण व, जह कोइ मिणिज्ज सब धन्नाई। एवं मविज्ञमाणा, हवंति लोया असंखिज्जा ॥ ८७॥

जैम कोइ माणस पोताना वधा अनाभने प्रथ अथवा कुडव (एक जातना माप) थी मापे छे तेवीज रीते जो कोइपण माणस असद्भाव प्रज्ञापनाने भंगीकार करीने आ जगतनेज कुडव रुप बनावीने मध्यम अवगाइनावाळा पृथिवीकायना जीवोने जो मापवा मांडे तो असंख्यात छोकोने पृथिवीकाथनाजीवो पूरी नाखे, इवे बीजी रीते परिमाण बतावे छे.

लोगागासपएसे इक्किकं निविखने पुढविजीवं । एवं मितिङजमाणा, हवंति लोगा असंखिङजा ॥ ८८ ॥

सूत्रम् ॥ ९१ ॥

आचा०
॥ ९२॥
ममय रुपकाल अर्थय निषुण अर्थात स्थान स्थान

अणुसमयं च पवेसो, निक्खमण चेव पुढविजीवाण ।काये कायदिइया, चउरो लोया असंखिउजा ॥ ९०॥

पृथिवी जीवोनो पृथिवीकायमां दरेक समये प्रवेश अने वहार आवर्त्त थया करे छे. ते एकज समयमां केटलानो मवेश थाय है छे, १. अने केटलातुं बहार निकल्र्युं थाय छे. २. तथा कहेवाता एक समयमां केटला पृथिवीकायना जीवो परिणाम पाम्या संभवे छे. ३. तथा पृथिवीकायनी स्थिति केटली छे. ४ ए ममाणे चार विकल्पो कालथी कहेवाय छे, तेमां घणाज असंख्यात होकाकाश परेश प्रमाणो है लोकाकाश परेशनायाला जीवो एक समय उत्पन्न थाय छे अने नाश पामे छे असंख्येय लोकाकाश परेश प्रमाणो है पृथिवीपणे परिणाम पामेला छे अने शरीरनी स्थिति पण छे, मरी मरीने असंख्यात लोकाकाश परेश परिमाण काल त्यां उत्यन्न

॥ ९३ ॥

थाय छे, ए प्रमाणे क्षेत्र अने काळथी परिमाण प्रतिपादन करीने इवे ते सर्व परस्पर मळीने (सेळभेळ धइने)

रहेला छ त बताव छ, बायर पुढ विकाइ यपजातो अन्नमन्नमोगाढो। सेसा ओगाहंते सुहुमा पुण सबलोगंमि ॥ ९१ ॥ ९१ ॥ बादर पृथिवीकाय पर्याप्तो जे आकाश खंडमां जीव रह्यों छे ते आकाश खंडमां बीजा पृथिवीकाय जीव जुं शरीर अवगाढेलं छे. अने बाकीना अपर्याप्तक जीवो पर्याप्ताने आश्रयीने अंतरा रहितनी प्रक्रियावढे उत्पन्न थाय छे. ते पर्याप्ता पृथिवीकायना अवगाढ आकाश प्रदेशमां अवगाढेला समाइने रहेला छे. अने जेस्स्मो छेते बधा लोकमां अवगाढेला छे. इवे उपभोगद्वार कहे छे — चंकमणे यहाणे, निसीयण तुयहणेय कयकरणे। उच्चारे पासवणे, उवगरणाणं च निक्खिवणे ॥९२॥

आलेवण पहरण भूसणेय कयविकाए किसीएय। भंडाणंपिय करणे, उव भोग विही मणुस्साणं ॥९३॥ चालवुं, उभा थवुं, निचे बेसवुं. सुबु कृतक पुत्रकरण पाटीनां पूतळां बनाववां उच्चार, पेशाव, तथा उपकरण मृकवुं; ॥९२॥ (तथा लीपवुं, ओजार दागीना बनाववां विगेरे लेवा वेचवा, खेती करवी, वासण बनाववां विगेरेमां माणसोने पृथिवीकाय उपभोग प्रवराज) मां आवे छे. जो एम छे तो शुं करवुं ते कहे छे.

एएहिं कारणे हिं हिंसंति पुढविकाइए जीवे। साथ गवेसमाणा परस्स दुक्खं उदीरंति ॥ ९४ ॥

अपचाठ के अने तथा विगरे कारणोमां पृथिवीना जीवोने हणे छे. भा माटे? ते बतावे छे. जे जीवो पोताना सुखने बांछे छे भे अने परनुं दुख भूछे छे अने केटलाक दिवस रमणीय भोगनी आशार्थी जेवनी इन्द्रियो खेचायली छे तेओ विमृद चित्रवाद्यावनेला हो. अने तथी तेओ पृथिवीकायमां रहेला जीवोने दुःख उत्पन्न करे छे. एनावडे पृथिवीकायना दानधी उदय थयेल शुभ फळनो उदय मतियुक्त छे. (आ टीकाकारनुं बचन लोकपां जे भूदानयी शुभ फळनो उदय मनाय छे तथी उलडुं छे. एटले मोश बांछ के पृथिवीकाय जीवोने दुःख न थाय माटे ते दान देवानी अभिलाषा न करवी पण ग्रहस्थे पोताना संसारिक काममां ते बापरतो होय अने तेमांथी परोपकारार्थे थोडी पृथिवीनुं दान आपे तो तेनो निषेध नथी) इवे अखदार कहे छे. जेनावडे क्रिया थाय ते अख वे मकारनुं छे द्वन्य शक्ष अने भावशक्ष. हवे द्रन्य शक्ष पण समास अने विभागवडे वे मकारनुं छे. तेमां पहेलुं समास हिन्द्र अस करे छे.

हस्रकुलियविसकुदालालित्तयिमगिसंगकद्वमग्गी य । उद्यारे पासवणे एयं तु समासओ सत्थं ॥९५॥ इ.स. कोष, क्षेत्र, कोदानो लिवक मृगनुं कींग, लाकडुं, अप्रि, ब्राडो, पेशाव आ संक्षेपथी द्रव्य शक्त छे. हवे विभाग द्रव्य

किंची सकायसत्थं किंची परकाय तदुभयं किंचि। एयं तु दब्वसत्थं, भावे अ असंजमो सत्थं॥ ९६॥ कांइ अंशे पृथिवीनुं सल पृथिवीनुं बने तो ते स्वकाय शल छे. (एटले जुदा जुदा रंगनी माटी विगेरे एकटी थाय तो परस्पर

दवे वधकार कहे छे.

पीडाकार छे.) तथा परकाय शक्ष ते पाणी विनेरे पृथिवीने अचेत घनाचे छे. अने वसे साथे ते पाणीथी भींनापली पृथिवी ते वीजी पृथिवीतुं शक्ष छे. आ वधां द्रव्य शक्ष छे. असंयम एटले मन, वचन, कायाने खराव रीते उपयोगमां लेवां ते भाव शक्ष छे. इवे वेदना द्वार कहे छे.

छे. हवे वेदना द्वार कहे छे.

पायच्छेयण भेयण जंघोरु तहेव अंगुवंगेसु । जह हुंति नरा दुहिया, पुढिविकाए तहा जाण ॥ ९७ ॥

जेम पग विगेरे अंग उपांगमां छेदन भेदन करवाथी माणसोने दुःख थाय छे. तेज ममाणे पृथिवीकायमां पण से जीवोने के वेदना जाणों जो के पिछ्जीकायने पग, माथुं, गाउन विगेरे अंगो नथी तो पण शरीरना छेदनथी वेदना अवश्य छे. ए बतावे छे.

नित्थ य सि अंगुवंगा, तयाणुरूवा य वेयणा तेसिं। केसिंचि उदीरंती केसिंचऽतिवायए पाणे॥ ९८॥

अडधी गाथानी अर्थ उपर कहा छे. पाछलीनो कहे छे. केटलाक पृथिवीकायना जीवोनो आरंभ करनारा ते जीवोने वेदना 🎇 उदीरे छे. अने केटलाकना तो तेथी पाण पण जाप छे. तेबोज दृष्टांत भगवती सुत्रमां आपेलो छे. जेनके चार दिशामां चक्रथी 🤾 आण फेरवनार चक्रवर्तीनी, सुगंप पोसनारी यौवन बंदमाती बळवान दासी काचा आपळा जेटला प्रमाणवाळा सचित्र पृथिवीनी 🙀 गोळीने एकवीश नार गन्धपट्टमां कटण शीला पुत्रक पीसवाना पत्थर वटे पीसे छे. तोपण केटलाक पृथिवीकायना जीवोने फक्त र् तेनो संघट थाय छे. केटलाकने परिताप अने केटलाक मरे पण छे. अने केटलाक जीवोने शिलापुत्रकमो स्पर्ध पण थतो नथी. 🕻

अाचाः

अविश्व अणगारा ण य तेहि गुणेहि जेहिं अणगारा। पुढविं विहिंसभाणा, न हु ते वायाहि अणगारा॥९९॥

अहिं केटलाक जिनेतर साधुवेशने लड़ने कहे छे के अमे अनागर छीए, मत्रजित छीए पण तेथा निर्वय अनुष्टानस्व जे कृत्यो अनागार करे छे, ते तेथा करता नथी. हवे ते अनागार गुणमां केम नथीं वर्तता, ते बतावे छे. तेथा हमेशां मळहार कृत्यो अनागार करे छे, ते तेथा करता नथी. हवे ते अनागार गुणमां केम नथीं वर्तता, ते बतावे छे. तेथा हमेशां मळहार कृत्यो हमेशां पळहार निर्हेष करवाने तथा हुगैंथ रहित करवाने शक्य छे. तेथीं यती गुण कलापथी श्वन्य एवा अनगारोने बोळवा मात्रथीजयुक्ति बिना अनगारणुं मळतुं नथी. आथी एम समजाव्युं के यतीओए पृथिवीकायने पीडा न थाय माटे हाय थोता विगेरेमां माटीनो उपयोग न करवां. अहिं आ पहेली गायाना पहेला अर्थ भागवर्ड मतिज्ञा छे, पाछली अहभी गायाथी हेतु छे तथा उत्तर गायांना अर्थ वटे साधर्म्य अने जे जे पृथिवीनी हिंसामां मवर्ते छे, ते वित्रुणोमां मवर्तता नथी. जेमके एहस्थीओ हवे हण्टांतवाद्धं नियमन कहे छे.

अणगारवाइणो पुढविहिंसगा निग्युणा अगारिसमा। निहोसत्ति य मङ्ला, विरइदुगंछाइ मङ्लतरा ॥ १००॥

अमे यित छीए एम बोलीने पृथिवीकायनी हिंसा करनारा यतिओ ग्रहस्थाश्रमी जेवान छे. सामटो अर्थ कहे छे. सचेतना

होवाथी तेओ मलील इदयवाळा छे. छतां धार्ध्यपणाथी साधुनन आश्रित निर्वेद्य अनुष्ठानवाळी विरतीनी निंदा करे छे. अने विधारे मलीन बने छे. आ साधु निंदाथी अनंत संसारीपणुं बताब्धुं जाणवुं आ वे गाथा सूत्रमां कहेळा अर्थने अनुसरनारी छतां क्षेत्र प्रधारना अवसरमां निर्युक्तिकारे कही छे. ते हुं व्याख्यान पोतेन करवुं ते न्याययुक्त छे कारण के गाथा पोतेन कहेळी छे. ते सूत्र नीचे बतावे छे.

'लजमाणा पुढो पास अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणे त्यादि।

आ वध करवो, करावदो, अने अनुमोदवो एम त्रण मकारे थाय छे ते बतावे छे

केई सर्च वहंति, केई अन्नेहिं उ वहार्विति । केई अणुमन्नंति, पुढविकायं वहेमाणा ॥१०१॥

गाथानो अर्थ स्पष्ट छे. तोपण कहीए छीए. केटलाफ लोको जीवने स्वयं भारे छे. केटलाफ बीजा पासे वध करावे छे. अने केटलाफ वध करताने अनुमोदे छे, इवे तेने आश्रित बीजाओने पण वध याय छे एम बतावे छे,

जो पुढिव समारंभइ, अन्ने वि य सो समारभइ काए। अ नियाए अनियाए, दिस्से य तहा अदिस्से य ॥ १०२ ॥ के पृथिवीकायने हणे छे ते तेने आश्रय करीने रहेछा पाणी तथा चेइन्द्रिय विगेरे घणा दृश्य तथा अदृश्य जीनोने हणे छे. के जेमके (जंबर) तथा बद्दुं फळ विगेरे जे खाय ते फळमां रहेछा बीजा जीवोने पण खाय छे तेम समजबुं कारणने छीचे अथवा

अफारण, मनथी धारीने अथवा अणजाणे पृथिवी जीवोने हणे छे. अने तेने हणतां देखाता जीवो देहका विगेरे, तथा न देखाता की एवा पांचे वर्णना पनक विगेरे जीवोने हणे छे. हवे ते वधारे स्पष्ट करे छे.

पुढि सिमारंभता हणंति तिल्लिसिए य बहुजीवे । सुहुमे य बायरे य पज्जते या अप्पज्जते ॥१०३॥
पृथिवीकायनो समारंभ करतां तेने आश्रयीने रहेला सूक्ष्म अने बादर पर्याप्त अने अपर्याप्त एवा अनेक जीवोने ते हणे छे.
अहिं सूक्ष्मोनो वप खरी रीते यतो नथी. पण परिणामनी अग्रदिथी तेनी निष्टृत्तिनुं पर्चवाण न कर्यु होय त्यां सुधी तेना बधनो दोष लागे छे. हवे विरतिद्वार कहे छे.

एवं वियाणिऊणं पुढवीए निविखवंति जे दंडं। तिविहेण सबकालं मणेण वायाए काएणं

उपर कहेला वचनने अनुसारे पृथिर्वाना जीवोने जाणीने तथा तेनो वध तथा वंध जाणीने पृथिवीकायना जीवोने इणवानी 🖔 वृत्तिथी दूर थाय छे ते हवे पछीनी गाथामां कहेवाता अणगार थाय छे. तेओ मन, वचन, काषावडे पृथिवीना जीवोने कोइ अजगारना लक्षणो हवे कहे छे.

ग्रना ग्रन्तीहिं सबाहिं समिया सिमईहिं संजया। जयमाणगा सुविहिषा एरिसया हुंति अणगारा ॥१०५॥ 🧏

आचा०
आचा०
विगेरे अनुष्ठान जेओनुं सारुं छे ते गुणोवाळा जैन अणगार होय छे. एण पूर्वे बतावेळा मान नामधीन अणगार पृथिवीकायना जी कीनों हणनारा भाक्य मत विगेरेना साधुओं न छेवा. नाम निष्पण निक्षेपों समाप्त थयो. हवे सुत्र अनुगममा अस्यिकितादि प्रियाण युक्त सूत्र उचारवानुं छे. ते आ छे.

अहे लोए परिजुण्णे दुस्संबोहे अविजाणए अस्ति लोए पद्यहिए तत्थ तत्थ पुढो पास आतुरा-परितावेंति [सू० १४]

पूर्वनो संबंध बतावे छे. तेरमा मूत्रमां परिज्ञातकर्मा मुनि होय छे. पण जे कर्मना भेदने जाणतो नथी ते अपरिज्ञात कर्मा के पोते भाव आर्च होय छे. ते बतावे छे. वळी पहेळा सूत्र साथे आ संबंध छे. सुभर्मस्वामी कहे छे के हे जंबू! में सांभळ्युं! ते कि कहे छे. पूर्व उद्देशामां कहे छुं ते अने आ पण सांभळ्युं छे के 'अहे' विगेरे तथा परंपर संबंध आ प्रमाणे छे. 'के इह एगेर्सि णो स्त्रा भवति इति उक्तं' ते केवी रीते ते जीवोने संज्ञा न होय ते बतावे छे, ते जीवो पीढायला छे, तेथी बतावे छे, 'अहे' दिनारे क्या के जीवो पीढायला छे, तेथी बतावे छे, 'अहे' आर्तना निक्षेषा चार मकारे छे, नाम स्थापना सुगम छे. इशारीर, भन्यशारीर अने ते वेथी व्यतिरिक्तनो आगमधी द्रव्यार्त गाडा

विगेरेना चक्रोमां उद्धीमूळमां जे लोढानो पाटो खोळी चडावे छे ते द्रव्यार्त छे, भावार्च पण वे मक्तारे छे, आगमथी नाआम मधी तेमां आगमथी ज्ञात ते आर्त पदार्थने जाणनारो अने उपयोगमां राखनारो अने नो आगमथी औदिपिक भावमां वर्तनारो ते राग द्वेपरुप ग्रहवडे चेरायला अंतरात्मावालो भियना वियोग विगेरे दुःख संकटमां निमन्न भावार्त तरीके गणाय छे, अथवा शब्दादि विषयो जे विषमा विपाक जेवा छे, तेमां तेनी आकांक्षा होवाथी हित अहितना विचारमां शून्य मनवालो होवाथी भावार्त्त छे, तेमां तेनी आकांक्षा होवाथी हित अहितना विचारमां शून्य मनवालो होवाथी भावार्त्त छे, तेभी कह्यं छे के :—

'सोइंदियवसहेणं भंते जीवे किं बंधइ? किं चिणाइ? किं उव चिणाइ? गोयमा! अह कम्म पग-डीओ, सिढिलवंधणवद्धाओ धणियवंधणवद्धाओ पकरेइ? जात अणादियं च णं अणतद्ग्गं दीहमः चाउरन्तसंसारकन्तारमणुपरियद्वडः '

श्रीवीरने पश्र—हे भगवान! कानथी सांभळवानो रसीओ बनी पीढातो जीव श्रुं वांघे छे, श्रुं एकडुं करे छे. श्रुं उपचय करे छे? र्रे उत्तर—हे गीतम, आठ कर्मनी मकृतिओ जे शिथिछ बंघवाळी होय तेने गाढ बंधनवाळी करे छे, ते वयां सुधी के जेम अनादि हैं काळथी रखडतो आवेळो तेम अनंत काळना छांवा पंथना चार गतिवाळा संसार कांतारमां श्रमण करशे, ए प्रमाणे बीजी चार हिन्द्रयोना विषयमां ते स्पर्श इन्द्रिय सुधी समजवुं, एज प्रमाणे क्रोध, मान, माया, छोभ, दर्शन मोहनीय, चारित्र मोहनीय विगेरेथी

आचा०

॥ १०१ ॥

भाव आर्त संसारी जीवो पण चार गतिमां भ्रमण करनारा जाणवा. कहुं छे के :-

रागदोसकसाएहिं इंदिएहि य पश्चिहें। दुहा वा मोहिणजेण अद्दा संसारिणो जिया ॥१॥

राग द्वेष अने कपायों वहें पांच इन्द्रियों तथा वे प्रवारना मोहनीय कर्मथी संसारी जीवो पीडायला छे. अथवा क्षान आव-रणीय विगेरे शुभअशुभ जे आठ प्रकारनां कर्म छे तेनाथी पीडायलों ते कोण छे? तेनो उत्तर कहें छे. अवलोके ते लोक, एक, वे, त्रण, चार, पांच इन्द्रियवाळों जीव समृह ते अहिं लोक जाणवों. लोक शब्दना नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भाव, अने पर्याय ए आठ प्रकार निक्षेपा बताबी तेमां अवशस्त भाव उदय बाळा लोकवहें अहिं अधिकार कहेंचों, करण के जेटलों जन समृह आते छे ते सर्व परिद्यन नाम परिपेलव निःसार छे. औपशमिक विगेरे मशस्त भाव रहित अथवा अव्यभिचारी मोक्ष साधन विनानों छे.

(सम्पवदर्शन ज्ञान चारित्र ते मोक्षनो उपाय तेना विना संसारी जीत मात्र दुष्ट भावोगां रही पाते पीडाय छे. अने बीजाने पीडी नवां चीकणां कर्म बांधी चारे गतिमां अनंत काळ भमे छे.) परियुन शब्द वे मकारे छे. द्रव्यथी अने भावथी तेमां भावथी सचित्र परियुन ते जीर्ण क्स विगेरे अने भाव परियुन ते औदिविक भावनना उदगथी मशस्त्र ज्ञान विगेरेथी रहित केम विकल श्रे अनंत गुणांथी परिहाणीथी कहे छे. पांच, चार, त्रण, वे एक इंद्रियवाळा जीवो क्रमथी ज्ञाने विकल ओछा ज्ञानवाळा छे. तेमां सौथी ओछा ज्ञानवाळा सहम निगोदना अपर्याप्त जीवो

स्त्रम्

1180811

आचा० ॥१०२॥ जे मथम समये उत्पन्न थयेलो होय ते जाणवा. कहुं छे के :— सर्विनिकृष्टो जीवस्य दृष्ट उपयोग एष वीरेण। सूक्ष्मिनिगोदापर्याप्तकानां सच भवति विज्ञेयः ॥१॥ सौथी ओला ज्ञानवाळा जीवनो उपयोग महावीर मसुए निगोदना अपर्याप्ता जीवोनो देख्यो छे. ए जाणवुं.

तस्मात्प्रभृतिज्ञानविद्विद्दिष्टा जिनेन जीवानाम्। लब्धिनिमित्तेः करणैः कायेन्द्रिय वाङ्मनोद्दग्भः ॥२॥ स्पार पछी जीवोनी लिब्धना निमित्त कारण तथा कायेन्द्रिय, मन, वचन, वढे ज्ञाननी दृद्धि थाय छे. एम जीनेश्वरे देखेलुं छे. ॥२॥ इवे ते विषय अने कषायथी पीडायलो मशस्त ज्ञान धन (हीणो) केवी अवस्थावालो थाय छे, ते बतावे छे. 'दुःस्तंबोध' एटले धर्मनी अने चारित्रथी प्राप्ति संबंधी जे बोध तेने धणी मुझ्केलीथी समजाय छे समजबुं दुर्लभ छे. जेम मेतार्य मुनिने सम- जबुं कटण पड्युं इतुं अथवा ब्रह्मद्व चक्रवर्ती माफक तेने बोध आपवो मुझकेल इतो तेना पूर्व भवना भाइए ज्ञानथी जाणी पोते साधु बनीने तेने बोध आप्यो पण घणा मयास छतां न समजायाथी साधु थाकी गयो पण ब्रह्मदत्त न समज्यो अने क्रूर कर्म करी नरकमां गयो. शा माटे आवुं करे? ते कहे छे. विज्ञिष्ट अवबोध रहित ते आ ममाणे अज्ञान बनेलो थुं करे छे? ते कहे छे आ पृथिवीकाय छोकने अतिवाय पीडा करे छे. तेना प्रयोजन माटे खोदवा विगेरेथी पीडा करतां जुदी जुदी जातनां शस्त्रोवडे ते जीवोने डरावी ते खेती करवी खाण खोदवी घर करबुं विगेरे जुदा जुदां कार्योमां जरुर पडतां ते जीवोने पीडा करे छे. तेबुं

सूत्रम् ॥१०२॥

गुरु महाराज शिष्यने कहे छे के तुं जो पृथिवीकायना उपरंज बंधानो आश्रय होवाथी प्रक्षे एटले गुरुवर पीढा पृथिवीकायने अश्राचा० याय, तथा व्यथ धात भय तथा चलनमां पण थाय छे. एटले टीकाकारे व्यथितना वे अर्थ लीघा. पीढा करवी अथवा भय पमा- इवो तथा पश्य शब्दथी एक देशमां एटले थोडाथी बीजुं रहेलुं ते पण लेवाय ते सिद्धांत शैलीवडे पाकृत भाषानी रीती प्रमाणे घणो आदेश लेवाय एटले शिष्यने कहां के. जो, शिष्ये पूल्युं शुं? उत्तर—लोको पोताना मयोजनमां पृथिवीकायने निरंतर पीढे छे. आतुर शब्दवडे मूचव्युं के विषय कथाय विमेरेथी पीडायला जीवो (अहिं पृथिवीकायनो विषय चालतो होवाथी) तेने वार्त्वार पीढे छे. बहु बचननो निर्देश करवानुं कारण ए छे के तेनो आरंभ करनारा घणा छे. अथवा लोक शब्द छे ते दरेकमां संबंध राखे छे. एटले कोई लोक (जीव समूह) विषय कथायथी पीडायेल छे. बीजो कावथी परिजीण छे. कोई दुःल संबोधछे. अने कोइ विशिष्ट झान रहित छे. ए बथाए दुःखी जीवो पोतानी इच्छाओ पूरी करवा तथा मुख मेळववा आ पृथिवीकायना जीबोने अनेक मकारना उपायोवडे परिताप उपजावे छे एटले घणी पीडा करे छे । १४॥

संका-एक देवता विशेषथी आधारवाळी पृथिवी रहेली छे. ते बात मानवी शक्य छे. पण तेमां असंख्यात जीवोनो समृह रहेळो छे. ए बात मानबी कठण छे. जैनाचार्य ते शंका दर करवा कहे छे.

संति पाणा पढो सिया छज्जमाणा पढो पास अणगारा मोत्ति । एगे पवयमाणा जिमणं विरूवरूवेहिं 🥻

आचा० हैं।

सत्थेहिं पुढिविकम्मसमारंभेणं पुढिविस्तरथं समारंभेणाणा अणेगरूवे पाणे विद्या है के पूजिम आश्रामें स्वा अंगुलमा असंख्येय भाग स्वदेहनी अवगाहनावढे पृथिवीकायमें आश्रामें स्वा छे. तथी बालकार कहे छे के पृथिवी ते एकन देवतारूप नथी, पण जीवोन्ने जुदा जुदा खरीर नुं संधान थहने पृथिवी अनेक जीवोनी बनेली छे. तथी सचेतनपणुं अने अनेक जीवोनो तेमां आश्रय छे. एवं पृथिवीन स्वरूप खुल्छं बतान्युं छे. अने ए जाणीने तेमा आरंभथी वर्तेलाने बतावे छे के तभो जो साधुपणुं कहेता होतो ते जीवोनी रक्षा करो निह तो छज्जा पामक्षो. अहिं छज्ञा बे प्रकार छे लोक संबंधी ते वहु ससरानी लाज काढे छे. तथा सुभट विगेरे पोताना अमलदारथी युद्धमां हारतां शरमाय छे, ते को लोकोत्तर छज्जा ते सत्तर प्रकारनो संयम छे, तेथी कहं छे के :—

लजा दया संजम बंभचरे मिरयादि।

हाज, दया, संयम, ब्रह्मचर्य, विगेरे एकार्य छे लाजनो अर्थ ए छे के संयम अनुष्ठानमां रही तेनी मर्यादा पालन करीने बीजा की जीवोने न पीढवुं. अथवा जैनेतर साधु पृथिवीकायना समारंभ रुप असंयम करवाथी लज्जा पामता एवा मत्यक्ष ज्ञानीओधी तथा परोक्ष ज्ञानीओधी छे, तेमने तुं जो तेवुं शिष्यने गुरू कहे छे आ कहेवाथी सचव्युं के शिष्ये कुशल अनुष्ठान मवर्तिना विषयमां रहेवुं के तेने तेओनी माफक लजावुं न पडे, जैनेतर जीव दयानुं स्वरूप जेवुं बोले छे तेवुं करता मर्था ए देखाडवा जैनाचार्य

1140411

कहें छे के जैनेतरों पोताने अमे अगार एटले घर तेनाथी रहित एटले अनगार (यित) छीए एम बोले छे. ते शाक्यमत विगेरेना साधुओं जाणवा. एम बतावे छे ते कहे छे के अमेज जंतु रक्षामां तत्वर छीए तथा अमे कवाय अज्ञानरूप अंधकारने दूर कर्या हो. ए प्रमाणे बोलनारा प्रतिज्ञा मात्र जे अनर्थनुं मूळ ते व्यर्थ बोले छे. जेम कोइ अत्यंत सुचीबोद्र ते बोसट बार माटीथी स्नान करनारों अने गायना महदानी शुचीने दूर करीने पाछों कर्म कर ना कहेवाथी चामडां हाडकां मांस, स्नायु विगेरेने पोताना चप- प्राण माटे तेनो संग्रह करे तेज म्याणे तेणे प्रवित्रतानुं अभिमान घारण कर्या छतां शुं त्याग्युं ? कंइज नहिं ते म्याणे शाक्यमत किंगेरेना साधुओं अनगार वादने वहन करे छे. एण अनगारना गुणोमां जरापण वर्तता नथी अने गृहस्थनी चर्चाने जरा पण उल्लंघता नथी एवं देखाडे छे एतं आ सर्वजन पत्यक्ष एवं कृत्य पृथिवीकायना लांबोने जुदा जुदा प्रकारना इळ कोदाळी, खनित्र विगेरेथी जीवोने हणे छे. अने पृथिवीकायना समारंभमां पृथिवीकायना श्रह्मोवडे पृथिवीकायना जीवोने हणवा साथे तेने आश्र-यीने रहेळा बीजा जीवो पाणी वनस्पति, विगेरेने हणे छे. तेनो भावार्थ आ छे के जीव मात्रने बचाववानी मितिहा करी जीवनु स्वरूप जाणवानी दरकार करता नथी अने गृहस्थ माफक पृथिवीकायनो समारंभ करीने अनेक मकारे पृथिवीना जीवोने तथा तेने आश्रयी रहेळा अनेक जीवोने हणे छे. आ ममाणे शाक्य विगेरेनुं पार्थिव जंतु साथे बैरमाव वतावी तेमनुं अयितपणुं बतावी हमें हुने सुलोना अभिद्याप वदे करवुं कराववुं अनुमोदवुं तथा ते त्रण करण साथे योगनी महत्ति बतावे छे.

आचा

तत्थ खळु भगवया परिण्णा पवेइया इमस्त चेत्र जीतियस्त परिवंदणमाणणपूर्यणाऐ जाइमरण के मोयणाए दुक्खपिडघायहेउं स सयमेव पुढितस्थं समारंभइ अण्णेहिं वा पुढितस्थं समारंभावेइ के अण्णे वा पुढितस्थं समारंभंते समणु जाणइ (सू० १५)

त्यां पृथिवीकायना सभारंभमां श्री वर्षमान स्वामी भगवाने आवुं कहां छे के इवे पछाना कहवाता कारणावड सुखना अभिलाषीओ करवा कराववा अने अनुमोदवावडे पृथिवीकायना समारंभ करे छे, तेनां कारणो बतावे छे. (१) नाञ्चवंत जीव-मना परिवंदनमानन पूजन माटे तथा जन्म मरण अने मुक्ति माटे तथा दुःखोने द्र करवा माटे पोते सुखनो अभिलाषी अने दुःखनो हेषी बनी पोते पोताना वडेज पृथिवी श्रसनो समारंभ करे छे बीजा, जीवो पासे करावे छे. अने करताने अनुमोदे छे. एम अज्ञान दश्चाथी पूर्वकाळमां करी भविष्यमां करको ए ममाणे मनवचन कायाना कर्मवडे योजवुं, आवी जेनी मित छे तेनु श्रं धाय छे ते बतावे छे.

तं से अहिआए तं से अबोहीए से तं संबुद्धमाणे आयाणीयं समुद्वाय सोचा खल्ल भगवओ अण-गाराणं इहमेगेसिं णातं भवति एस खल्ल गंथे एस खल्ल मोहे एस खल्ल मारे एस खल्ल णरए इच्चत्यं गड्डिए लोए जामिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेण पुढविसत्थं समारंभमाणे अण्णे

सुत्रम्

1170811

अणेगरूवे पाणे विहिंसइ से बेमि अप्पेगे अंधमब्से अप्पेगे अंधमब्छे अप्पेगे पायमब्से अप्पेगे पाय- कि सूत्रम् मच्छे अप्पेगे गुप्फमब्से अप्पेगे गुप्फमब्छे अप्पेगे जंधमब्सेश अप्पेगे जाणुमब्सेश अप्पेगे उहमब्से कि सूत्रम् अप्पेगे कि कि अप्पेगे पासिमब्सेश अप्पेगे पासिमब्सेश अप्पेगे पिष्टिमब्सेश कि ॥१०७॥ अप्पेगे उरमञ्मे २ अप्पेगे हियमञ्मे २ अप्पेगे धणमञ्मे २ अप्पेगे खंधमञ्मे २ अप्पेगे बाहुमञ्मे २ अप्पेगे हत्थमदमे २ अप्पेगे अंगुलिमदमे २ अप्पेगे णहमदमे २ अप्पेगे गीवमदमे २ अप्पेगे हणुमदमे २ 🕻 अप्पेगे गण्डमब्से २ अप्पेगे कण्णमब्से २ अप्पेगे णासमन्त्रे २ अप्पेगे अच्छिमन्से २ अप्पेगे समुहमन्से २ अप्पेगे णिडालमन्भे र अप्पेगे सीसमन्भे र अप्पेगे संपसारए अप्पेगे उद्दवए इत्थं इत्थं समारभमाणस्स इचेते आरंभा अपरिण्णाता भवंति (सू॰ १६) उपर कहेला पापना करनो जे पृथिवीकायने दुःख देवारूप छे ते करवा कराववा तथा अनुमोदवाथी तेने भविष्यकाळमां 🗗

अवित माटे थन्ने तेम बोपिलाम सम्यवत्त्रथी विमुक्त करने. कारण के माणी गायना उपमर्दनमां मनीलाभीने थांडो पण दिवनी हो लाभ निर्देश भागाना पासे अथवा तेना शिष्य खरा साधु पासे पृथिवी कायना आरंभने पापकप जाणीने भाने छे ते या खां माने छे. जेणे पृथिवीनुं जीवपणुं जाण्युं छे, ते परमार्थनो जाणनारो साधु पृथिवीकायना सहाना समारंभने अहितपणे सारी तिते लाणनारो पोते सम्यक्दर्शन विगेरे स्वीकारीने वचाने छे. हवे ते केना मत्ययथी याने छे ते वताने छे. कां तो ते भगवान पासे कां तो कोइ साधु पासे समजीने बचाने छे. मतुष्य जन्ममां क्त्वनो मिलाभेष पामेला साधुओप आ जाण्युं छे? ये जाण्युं छे? ये जाण्युं छे? ये वाले छे. आ पृथिवीकायनुं शक्त जेनो समारंभ अष्ट मकारना कर्मनो वंघ छे खल सन्दर्शी निश्चे जाण्युं छे? ये जाण्युं छे? ये वाले छे. वजी मोहनीय कर्मना वंपकप छे. वजी मोहनी हेतु होनाथीं पृथिवीकायनो समारंभ कारण अने आठ कर्म ते वर्ध छे एम मृत्वन्युं रंभ मोहनीय कर्मना वे भेद छे. अने अठावीश मकारनी कर्म महित छे. ते जाणनी. वळी मरणनुं हेतु होनाथी पारकप छे, पटले पृथिवीकायने सारे ते पोताना आयुःकर्मनो क्षय करे छे. अथीत् अकाले मरे छे. तथा नरकनो हेतु होनाथी ते नर्क छे. आपणा रहेवासथी नीचे जे पृथिवी छे तेमां नरक छे, तेमां सीमंत विगेरे दुःखदाइ स्थानोमां नरकना जीनो तरीके रही दुःख भोगने छे. आथी अञ्चाता वेदनीय कर्म बांधवानुं सूचन्युं छे.

आचा०

शंका-एक प्राणीना नाश करवाथी पहिल्यां आठ प्रकारनो कर्मवंध केवी रीते थाए?

हत्तर—मराता जंतुना झानने रोकवाथी झानावरणीय कर्म बंधाय छे. एवी रीते बधा कमें मां योजचं अने पूर्वे कहेला झानी साधुओए बीजुं पण आवुं जाणेलुं छे, ते बतावे छे. के आहार भूपण तथा उपकरणने माटे तथा परिवंदन, मानन, पूजनने माटे अने दुःखना मित्रयात माटे लोक (माणीगण) बेल्लो बनेलो छे. कार्य अकार्यने जाणतो नथी. आ ममाणे अति पापना समुहना विपाकहर फल एवा पृथिवीकायना समारंभमां अझान अझानवश्च मृर्छित थयेलो आनं कार्यो करे छे. ते बतावे छे. आ पृथिवीकायना कार्यान जीवोने हणे छे. अने तेनी साथे पृथिवी शक्षवटे पृथिवीनं निकंदन करे छे. अयवा हळ, कुदाळा विगेरेथी अनेक मकारे समारंभ करे छे. अने तेने हणतां तेने आश्रयीने रहेला वे इन्द्रियादि जीवोने हणे छे. बादीनी शंका आरेका (हदपार) जवाय छे कारण के जे न जुए, न सांभळे, न स्वे, न जाय, ते केवी रीते वेदना अनुभवे अने ते बात अमे मानीए?

आ बाबतमां आचार्य महाराज दृष्टांतथी समाधान करे छे. तमे पूछयुं माटे पृथिवीकायनी वेदना हु कहुं छुं, अपि शस्द वियान स्थाना रूपमां छे. जेम कोइ जन्मथी अंघ बहेरो, मुंगो, कोटीओ पंगु, तथा हाथ पन विगेरे अवयवथी श्रिथील विपाक सूत्रमां कहेळा दु:स्वी मृगापुत्र जेना पूर्वे करेळा पापोथी अश्वभ कर्म उदयमां आवतां हित, अहित, माप्ति तथा त्यागथी विश्वस सर्व पकारे 🛴 दु:स्वी जोतां आपणने तेना उपर अति करुणा आवे तेज पमाणे अंध विगेरे गुण युक्त दु:स्वीने कोइ भाळानी अणीवडे भेदे छेदे 📜

आचा०

अाचा०

अा दाह पीन चेळा थयळा अथना व्यतर निगरिया चळा वनळान जारथा मारता त चलत तम दुन्स हुन पड़ा प्रसाह निया पण की चेतना आवतां तेना मारने पोतेज सारी रीते जाणी शके छे. तथा श्रीशी सुंवाडी डोकटर कापकूप करे छे. ते माछम पडतुं नथी कि पण ते नसा करतां वघारे नार रहे तो पेळो साक्षात् दुःख अनुभवतो देखाय छे. अथना वघारे नार नसो रहे तो दरदीनां पाण कि पण जाय छे. ए प्रमाणे पृथिनीना जीनोनुं पण जाणवुं. हने पृथिनीकायनुं जीनत्व साधीने तथा जुदां जुदां शक्षोना मारवडे पीडा

अश्वाः
आवाः
शासाः

एरथ सत्थं असमारममाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाता भवंति, तं परिण्णाय मेहावी नेव सयं पुढिव सत्थं समारंभेजा णेवण्णेहिं पुढिव सत्थं समारंभवेजा णेवण्णे पुढिव सत्थं समारंभते समण् पुजिता, जस्सेते पुढिव कम्म समारंभा परिण्णाता भवंति से हु मुणी परिण्णातकम्मेत्ति बेमि (सु० १७)॥ इति द्वितीय उदेशकः॥

अहिं आं पृथिवीकायमां द्रव्य अने भावथी भिन्न ने शक्ष छे तथा द्रव्य शक्ष ते स्वकाय अने परकाय तथा वे रुपवार्छ नताव्यु

अनि भाव शक्ष ते असंयम एटछे खराव ध्यान स्था मन, वचन, कावानी खराव उपयोग बताच्यों भा यन्ने पकारत सख चलावा स्थादं कुं, खेती करवी विगेरे सपारंभनां कामों वंघ हेतुपणे जेमणे जाण्यां नथी ते अज्ञात अने जेमणे जाण्या छे ते परिज्ञात छे. ते बतावे छे. अहिं पृथिवीकायमां वन्ने पकारतुं शक्ष न चलावनारा पूर्वे कहेला समारंभने पापरुप जाणीने तेने त्यागेला जे अणगारो ते परिज्ञात जाणता. आ बचनथी ए सच्युं के अहिंआ विरति एटले जीवोने दुःख न देवुं ते वताव्युं. हवे ते विरतिने खुन्ले खुन्ली बतावे छे. पटले पृथिवीकायना समारंभमां वंघ जाणीने मेशावी सुद्धिमान शुं करे? ते बतावे छे. आ पृथिवी शक्ष जे जे दुन्ले खुन्ली बतावे छे. पटले पृथिवीकायना समारंभमां वंघ जाणीने मेशावी सुद्धिमान शुं करे? ते बतावे छे. आ पृथिवी शक्ष जे जे पण चीजा नहिं, हवे आ विषयने संकेलतां कहे छे के जेओए पृथिवी जीवोनी वेदनावुं स्वरूप जाण्युं छे तथा पृथिवी खोदवी खेती करवी तेमां कर्म वंघनो हेतु छे. ते जाण्युं छे. तेथी ज्ञयरिक्षावढे जाणीने मत्याख्यान परिज्ञावढे तेने त्यागे ते सुनि छे. आ प्रमाणे बन्ने पकारती परिज्ञाव जाणे तथा जे त्यागे ते आठ प्रकारना कर्म वंघाय ते सावद्य अनुष्ठान त्यागवाथी ते परिज्ञात कर्मा सुनि जाणवी. पण न त्यागनारो भावपादि सुनि न जाणवी.

कमा मुन आणवा. पण न त्यापनार। सायपाद छात्र न जायपार 'ब्रवीमि' शब्दनो अर्थ पूर्व माफकज छे. शक्षपरिक्रानो बीजो उद्देशो पुरो थयो. पृथिवीनो उद्देशो पुरो थयो. इवे अपकायनो हे हे हो तेनो संबंध आ ममाणे छे. नया उद्देशामां अने तेमां पृथिवीकायना जीव सिद्ध कर्या वैना वधमां कर्म बंध बताच्यो

आचा० हैं अने छेवटे प्रोक्ष माटे विस्ति धर्म बताच्यों, तेज ममाणे हवे अनुक्रमें आवेलुं अपकायनुं लीवत्व अने तेना वधमां वंध अने करवी हैं जोइती विस्ति बतावे छे. आ ममाणे वीजा अने बीजा अदेशानों संबंध छे. तेना चार अनुयोग हार कहेवा तेमां नाम निष्पन्न निक्षेणामां अपकायनों उदेशों छे. अने जेवुं पूर्वे पृथिषीकाय जीवनुं स्वरूप समजाववाने माटे निक्षेणा विगेरे जे नव हार कहां हतां ते अहि समानपणे होवाथां तेज कायम राखी बहुक वधारे बतायवानी इच्छाथी उद्धार करी निर्धुक्तिकार कहे छे.
आउस्सवि दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए । नाणत्ती उ विहाणे परिमाणु बभोग सत्थे य ॥ १०६ ॥

अवकायना पृथिवीकायमां वताच्या ममाणे नदहारों छे. फक्त भेद एटलोन छे के विधान महत्वणा परिमाण, उपभोग, शास, संवंधमां ते पृथिवीथी जुदी रीते छे एम नाणवुं. च शब्दथी छक्षण विषय छे. तु शब्द निथय वाचक छे. एटले पृथिवीकाय अने अपकाय फक्त विधान विगेरेगांन जुदा छे बीकामां निह एम नणावुं हवे विधान एटले महत्वणा ते संवंधी जुदावणुं बतावे छे. दुविहा उआउजीवा सहमा तह छामगण कोर्याण । जनक न

दुविहा उआउजीवा सुहुमा तह बायराय लोगंमि । सुहुमा य सब्वलोए, पंचेव य बायर विहाणा ॥१०७॥

अपकायना जीव लोकमां सूक्ष्म अने बादर एम वे मकारे छे. तेमां सूक्ष्म चथा लोकमां छे. पण वादरना पांच भेद छे. इवे तेनी महत्त्वा करे छे.

सुद्धोद् य उस्सा, हिमे य महिया य हरतणूचेव । बायर आउविहाणा, पंचविहा विणया एए ॥१०८॥

1166311

शुद्धोदक ते तळाव, नदी, समुद्र, कुंड, अवट विगेरेमां रहेखं पण ते ओससिवायनुं जाणधुं, अने रातमां अथवा परोडीए जे का वास्त्रा पढ़े छे जेने गुजरातमां झाकळ कहे छे. ते अवश्याय (ओस) छे, अने शियाळामां टंडा पुहलना समुहना संपर्कथी जळ वरफीना वोसला जेनुं कठण थाय छे ते हिम छे. अने गर्भ महिनामां सांज सवार जे धुमाडा जेनुं पढ़े छे ते धुमस अथवा महीका कहेवाय छे अने शरद तथा वर्षाना काळमां लीली वनस्पतिना उपर पाणीनां विंदु पढ़े छे, ते जमीनना स्नेहना संपर्कथी उत्पन्न थयेलो हस्तनुं कहेवाय छे. आ मुख्य पांच भेद बादर अपकायना छे.

शंका-पन्नवणा सूत्रमां वादर अपकायना घणा भेदो बताव्या छे जेमके करा, थंडो उनो खारसत्र, कर्ड, अम्ल, लवण, वरुण; कालोद, उष्कर, श्लीर, घृत, इक्षुरस, विमेरे भेदो बताव्या छे, ते शा माटे? उत्तर-आ वधा भेद बादर अपकायना छे खरा, पण क्षेत्र भेदोनो पांच भेदमांन समावेश थाय छे जेमके करा कठण होवाथी हिममां तेनो समावेश थाय छे अने वाकीनाओनो शुद्धोदकमां समावेश थाय छे, फक्त तेओतुं भिन्नपणुं स्पर्ध, रस, स्थान, वर्ण, तिगेरेमांत छे, (जेम के समुद्रतुं पाणी मात्र जुदा जुदा पाणीना क्षेत्रां हो पाणीना क्षेत्रां स्थाने समावेश थतो होय तो पश्चवणा सूत्रमां बीना भेदोनो वाठ केम आप्यो?

उत्तर-स्त्री, बाळ, अने मंद्र बुद्धिवाळाने सहेलथी समजाय ते माटे भेद पाड्या छे. मक्ष-त्यारे अहि निर्मुक्तिकारे केम भेद न बताव्या?

उत्तर-प्रज्ञापना अध्ययन ते उपांग छे अने आर्ष वचन छे. तेमां बधा भेदो छेवा योग्य छे. अने न्यां बधा भेदो बताववाथी ही विगेरेने वधारे छाभ धाय, अने निर्मुक्तिओं तो सूत्रना अर्थ साथे एकता करे छे, तेथी लीधा नथी, तेथी अदोष छे. उपा कहे जा बाद अपकायना संक्षेपथी वे भेद छे. पर्याप्ता अने अपर्याप्ता तेमां अपर्याप्ता ते वर्ण विगेरेने न पामेळा अने पर्याप्ता ते वर्ण, गंध, रस, अने स्पर्भना आदेशोवडे हजारों भेदवाळा छे. अने तेथी संख्येय योनी प्रमुख लाखों भेदे थाय छे ते जाणवुं. आ बधानी संद्रत योनि जाणवी अने ते योनि सचित्त, अचित्त, मिश्र एम त्रण भेदे छे. तथा ज्ञीत उच्चा, अने मिश्र एम ज्ञण भेदे छे. व प्रमाणे गणतां अपकायनी सात लाख योनी थाय छे. इने प्रस्पणा पछी परिमाण द्वार कहे छे.

जे बायरपज्जता पयरस्स असंखभाग मित्ताते। सेसा तिन्निति रासी वीसुं छोगा असंखिजा ॥ १०९ ॥

जे बादर अपकाय पर्याप्ता छे ते संवर्तित लोक मतरना असंख्यातमां भागमां जे मदेश राशी छे तेना बरोबर छे. अने बाकीना 💢 जे त्रव रहा ते प्रथम असंख्यात लोकाकाश पदेश राशी प्रमाण नाण्या एण तेवां आटलं विशेष ले के बादर पृथिवीकाय पर्या-साथी बादर अपकाय पर्याप्ता असंख्यात सुणा ले, अने बादर पृथिवीकाय अपर्याप्ताथी बादर अपकाय अपर्याप्ता असंख्यात सुणा हे ले, तेवज सह्म पृथिवीकाय अपर्याप्ताथी सहम अपकाय अपर्याप्ता विशेष अधिक ले अने सहम पृथिवीकाय पर्याप्ताथी सहम अप-काय पर्याप्ता विशेष अधिक ले. इवे परिमाण द्वार कहां. पत्नी च शब्दथी सचवेलं लक्षणद्वार कहे ले. जह हरिथस्स सरीरं कललावरथस्स अहुणोववल्लस्स होइ उद्गंडगस्स य एसुवमा सवजीवाणं ॥ ११०॥

संका-अपकाय जीवनथी तेनुं छक्षण समजातुं नथी जेम पेशांव विगेरे द्रव्य छे तेम पाणी पण अजाव छ, आचार्यनुं ते संबंधी दृष्टांत साथे समाधान-जेम हाथणीना पेटमां गर्भ उत्पन्न थवा साथे द्रव छतां ते चेतन छे तेवीज रीते अपकायनुं पण सचेतन पणुं जाणानुं. अथवा पक्षीना तुर्त उत्पन्न थयेला इंडामां ज्यांसुधी कठण माग चांच विगेरे वंधाया नथी त्यांसुधी घणुं पाणी होय छतां ते चेतन छे तेम अपकाय पण चेतन छे एम जाणानुं. हाथणीनो सर्भ तथा इंडानुं पाणी छेवानी अकर एटलीज के तेमां वधारे पाणी होवाथी सारी रीते दृष्टांत समजाय छे. तुर्त उत्पन्न थयेला एम कहेवाथी सात दिवस सुधीनुं होनुं त्यां सुधीज, कलल रहे छे पछी तो ते गर्भनो माग कठण थह जाय छे. हवे अपकायनी सचेतनता उपर अनुगान करे छे ते नीचे मगाणे.

शस्त्रथी न हणायुं होय त्यां सुधी द्रवषणुं छे तेटला माटे पाणी हाथणीना गर्भ कललनी मापक चेतन छे. अहि विशेषण लेवाथी मश्रवण विगेरेनो निषेध जाणवो. तेज ममाणे बीजुं अनुमान मयोगथी बतावे छे.

इंडामां रहेला कललनी माफ्य भाषीनुं द्रविष्णुं नाश नथी थयुं तथी ते पाणी सचेतन छे. तथा पाणी जीव शरीर छे. कारण हैं, छेदी शकाय छे, भेदी शकाय छे, उराडी शकाय छे, पी शकाय छे, भोगवाय छे, संघाय छे, स्वाद छेवाय छे, स्वर्श कराय छे देखाय छे अने द्रव्यपणे छे. आ बधा शरीरना धर्मो पाणीमां छे माटे ते चेतन छे, (आ बधो संबंध बतावीने पाणी ए जीवोनुं श्रीर छे एम बताव्युं.) अने आकाश वर्जिने भूतोना जे धर्म ते रुप आकार विगेरे पण छेवा. सर्व जगाये आ दृष्टांत छे. सास्ना-विशाण ना समृहनी माफक जाणवुं.

1188७॥

भंका—रुपपणुं, आकारपणुं, विगेरे धर्मी परमाणुओमां पण छे. तथी तमारी हेतु अनेकांत दोषवाळी छे. उत्तर—एम नथी कारण के अहि छे; छेद्यत्व विगेरे हेतु पण साथे लीधेला छे अने ते बंधु इन्द्रियना व्यवहारने अनुपाती साथे रहेनारा छे. ते प्रमाणे परमाणु नथी. आ प्रकरणथी अतीन्द्रिय परमाणुना व्यवच्छेद कर्यो.

अथवा विपक्षन नथी कारण के सर्व पुद्गल द्रव्यों द्रव्यशारीरनी स्वीकार कर्यों छे, अने जीव सहित अने नजीव सहित अाटलुं विशेष छे. कहां छे के :--

तणवोऽणब्मातिविगार मुत्त जाइत्त ओऽणिलंता उ सत्थासत्थहयाओ निजीवसजीवरूवाओ ॥ १॥

अणु अभ्र विगेरे विकारवाळां मूर्त जातिपणाथी, पृथिवीथी वायु सुधी एटले पृथिवी, पाणी, अग्नि अने वायु ए चारनां 🕎 शरीर शख्यी हणायला ते निर्जीव छे. अने शख्यी न हणायला ते सजीव छे ए प्रमाणे शरीरपणुं सिद्ध थतां प्रमाण थाय छे

- (१) हीम कोइ जगोपर पाणी पणे होवाथी बीजा पाणीनी माफक सचेतन छे.
- (२) अने पाणी सचेतन छे कारण के कोइ जगोपर भूमि खोदतां देडकांनी माफक उछळी आवे छे. (३) अथवा आकाशमांथी पडतुं पाणी सचेतन छे. कारण के ते आकाशमां स्वाभाविक रीते उत्पन्न थतां माछछानी माफक उछळी पडे छे.

उपर कहेला बधा लक्षणो अपकायने मळता भावता होवाथी अपकाय सचेतन छे.

अवार्क हवे उपभोग द्वार कहे छे —
आचार्क एहाणे वियणे तह धोयणे य, भत्तकरणे असे ए अ। आउस्स उ परिभोगो गमणागमणे य जीवाणं ॥१११॥ प्राप्त नहाबुं, पींबुं, धोबुं, रांधवुं, सींचवुं, तथा नाव विगेरेथी जबुं आवबुं तेमां पाणी काम लागे छे. तेथी तेना भोगना अभिलाशी जीवो आ कारणोने उद्देशीने अपकायना वधमां मवर्ते छे, ते बतावे छे.

एएहिं कारणेहिं हिंसंती आउकाइए जीवे। सायं गवेसमाणा परस्स दुवखं उदीरंति ॥ ११२॥

स्नान, अवगाहन विगेरे कारणो आवतां इन्द्रियोना विषयना विषयां मोहित थयेला जीवो निर्देषपणे अपकायना जीवोने हणे छे. कारण के पोताना मुखनी इच्छा होवाथी पारकाना हित अहितना विचारथी शून्य होवाथी केटलाक दिवसना स्थायी मनोहर जुवानीना मदथी तपेल चित्तवालानी सारासार विवेक रहित, तथा विवेकी पुरुपना संसर्ग रहित रहीने पाणी विगेरे की जीवोना दु:खने उदीरीने पीडा करे छे. कह्युं छे के.:—

एकं हि चक्षु रमलं सहजो विवेकस्तद्वितिरेव सह संवसितिर्दितीयम् एतदृद्वयं भुवि न यस्य स तस्वताऽन्धस्तस्यापमार्गचलने खल्ल कोऽपराधः?

एतद्द्रय भुवि न यस्य स तत्वताऽन्धस्तस्यापमागचलन खलु काऽपराधः?
जेने स्वभाविक निर्मल विवेक छे, ते एक चक्षुवाळो कहेवाय छे. अने विवेकवाला पुरुपनो संग ते मनुष्यने बीजी आंख

गणाय छे. ते येजथी जे रहित छे ते खरेखरी रीते जोतां तो आंखवाळो होय छतां आंघळोज छे तो तेवो पुरुष कदी खराब रस्ते जाय हैं तो तेमां ते विचारानो श्रं गुनो छे ? विवेक तथा विवेकी पुरुषनी संगत विनानो आदमी जरुर आडे रस्ते जाय छे. हवे शक्ष-

उर्हिसचणगालणधोवणे य उवगरणमत्तमंडे य । बायरआउकाए एयं तु समासओ संस्थं ॥१९३॥

द्रव्य अने भाव ए वे शस्त्र छे. अने द्रव्य शस्त्र एण समास अने विभाग ए वे भेदे छे, तेमां समासधी द्रव्य शस्त्र आ छे. कुवामांथी कोश विगेरेवडे पाणी उन्ने चडावन्नं ते उर्ध्व सिंचन छे. अने घन (घट) मस्रण (कोमळ) वस्त्रथी गाळवुं तथा वस्त्र विगेरे उपकरण चर्म कोश, कडायुं, विगेरे वासण धोवा विगेरेमां आ ममाणे अनेक रीते वादर अपकायनां शस्त्रो जाणवा एटछे आ कारणने जीवोने पीडा धाय छे. गाधामां 'तु' शब्द विभागनी अपेक्षाए विशेषण अर्थ छे. हवे ते विभागधी बतावे छे.

किंची सकाय सत्थं किंची परकाय तदुभयं किंचि। एयं तु दहस्तत्थं भावेय असंजमो सत्थं ॥११८॥
किंचित स्वकाय प्रस्न ते बळवानुं पाणी नदीना पाणीने दुःख दे अने किंचित परकाय ग्रह्म ते, माटी, स्नेह (तेल बिगेरे) स्वार विगेरे, पाणीना जीवोने हणे छे. किंचित उभय एटले पाणीमां मळेली माटी विगेरे बीजा पाणीना जीवोने हणे छे. पण भावशास्त्रमां तो पूर्वे कह्या मुजब ममादीनो, खराव ध्यानवाळानो मन, बचन, कायाए पाळेलो असंयम छे. बाकीनां द्वारो पृथिवी- कायनी माफक जाणवां ते कहे छे.

आचा० मिसाइं दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। एवं आउदेसे निज्जुक्ती किश्विया एसा [हाइ] ११८८। भूत्रम् निक्षेप, वेदना, वध, अने निष्ठित जेम पृथिवीकायमां वताव्यां तेवी रीते अपकायना उद्देशामां पण निर्वृक्ति एटळे निश्चयथी अर्थ घटना वतावी छे. एटळे एम जाणवुं के अपकायना जीवोनो वध करवाथी वध थाय छे. अने ते समजीबुद्धिमाने अपकायना कीवोनो वध करवाथी वध थाय छे. अने ते समजीबुद्धिमाने अपकायना कीवोनो दुःख न देवुं एवो सर्व विरति धर्म स्वीकारवो. इवे सूत्र अनुगममां अस्खळित विगेरे गुणयुक्त सत्र उच्चारण करवुं,

से बेमि जहा अणगारे उज्जुकडे नियायपडिवण्णे अमायं कुवमाणे वियाहिए (सू०, १८)

पूर्व सूत्र साथे आ सूत्रनो एम संबंध छे के गया उद्देशामां छेल्ला सूत्रमां पृथितीकायनो समारंभ त्यामे ते मुनी एम कहा हुतं, पण तेटलाथीन संपूर्ण मुनी न थवाय ते वतावे छे, सुधर्मस्वामी कहे छे के "में भगवान पासे पूर्व सांभल्यं तेमां आ पण जाणवुं." एटले पूर्वना सूत्र साथे आ सूत्रनो संबंध जोडायो. मूलमां 'से' शब्द छे तेनो अर्थ गुजरातीमां 'ते' थाय छे. एटले पृथिवीकायनो समारंभ त्यागे अने तेनी साथे बीजुं शुं त्यागे तो संपूर्ण अणगार थाय. अथवा केवो अणगार न थाय ते हुं कहुं छुं,

" अणगारा मो ति एगे पत्रयमाणेत्यादि "

"अणगारा मा ति एग पवयमाणत्याद "
जेमने घर नशी ते 'अणगार' छे. अहींया यति विगेरे भ्रब्द छोडीने अणगार शब्द लीधो तेनुं कारण बतावे छे. घरनुं

त्यागवुं ते मुनिपणामां प्रथम गणाय छे कारण के घरनो आश्रय करें तो घर संबंधी पाप कृत्यों करवां पढे अने मुनि तो निर्देश अनुष्ठान करवावाळा होय छे ते बतावे छे. ऋज ते अक्कृटिल संयम एटले मनवचन कायानी स्वराव चेलानो निरोध करीने सर्व माणीना रक्षण माटे पहिल करवाथी दथानुं एक रूपन छे. अने वधी क्षगाए तेनी अक्कृटिल (सरळ) गति छे अथवा मोक्ष स्थानमां गमन करवा सरळ श्रेणी जे ऋज श्रेणी गति कहेवाय छे ते मेळववा सर्व मकारे संवरवाळ संयम पाळवाथी मोक्ष मळे. अहींआं कारणमां कार्यनो उपचार करीने संयम ते सत्तर प्रकारनो बतावेलो सरळ साधु मार्ग तेने करे (आराधे) ते ऋजकारी छे, एनाथी एम स्वन्धुं के संपूर्ण संयम अनुष्ठान करनार संपूर्ण अणगार छे आवो मुनि श्रं फळ पामे ते बतावे छे. यजन ते याग, नियित एटले निश्चित ए वे मळीने नियाग एटले मोक्ष मार्ग, अहींआ संगत अर्थपणाथी धातुओनुं सम्यण ज्ञान दर्शन चारित्रहण नियित एटले निश्चित ए ने मळीने नियाग एटले मोझ माने, अहीं आ संगत अथेपणाथी घातुआनु सम्पण् ज्ञान दशन चारित्रथम एणे संगत छे. ते नियाग प्रतिपन्न ज्ञाणनो. पाठान्तरमां निकाय प्रतिपन्न छे. एटले निर्मत काय ते आदारिक विगेरे शरीर जेनाथी अथवा जेमां छे. ते निकाय तेने पामेली तेनुं कारण सम्पण्दक्ष न विगेरे पोतानी शक्ति प्रमाणे अनुष्टान करवाथी अने निष्कपटिएणे आचरवाथी ते अमायावी थाय छे ते बतावे छे, अहिं पाया एटले वधां धर्म कार्यमां पोताना वीर्यने उपयोगमां न लेते; तेथी एम स्वट्युं के अमायावी एटले उपर कहेला वीर्यने उपयोगमां ले ते अने अगृहित, बल, वीर्य एटले संप्म अनुष्टानमां पराक्रम बतावनारों अणगार कहां. आ वचनथी तेना संबंधी प्रा कथायोनो एण अपगम (द्र करवुं) जाणवो. चघा कवायोनी पण अपगम (दृर करबुं) जाणवी.

॥ १२२ ॥

आ आता सूत्रनो सार ए छे के हे नंवृ! प्रभु पासे में सांभळ्युं छे के जेशो सत्तर प्रकारनो निर्देश संयम पाळे तम्यवदर्शन कामनारित्रनी आराधना करे तथा पोतानी शक्ति गोपने निर्दे तथा नधा कपाय निगेरे दुर्शणोने छोडे तेमनेज साधु जाणना. कहुं छे के. सोही य उज्जयभृयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्टइ 'ति, मायश्चित्त ते निष्कपटी नुं छे, अने धर्म पिन्त्र भावनाळानो छे. तो आ नधी माया नेळडीने दूर करी शुं करे ! ते कहे छे. जाए सद्धाए निक्खंतो तमेन अणुपाळिजा नियहित्ता निसोत्तियं (सू० १९)

वधता संयम स्थान कंडक रुपवाळी श्रद्धावडे दिक्षा लीघेली ते आखी जींदगी सुधी पोतानी निर्मळ श्रद्धा पाळे कारण के श्रायः एवो नियम छे के परिणाम उच्च भावमां चडेला होय त्यारेज दिक्षा ले छे, अने पाछळथी संयम श्रेणीने पामेलो तेने परिणाम वश्रे घटे, अथवा बरोबर रहे तेमां दृद्धिकाळ के हानिकाळ एक समयथी मानीने उत्कर्षथी अंतर्मु हूर्त जाणवो पण एथी वधारे काळ संकलेश के विश्रद्धि न होय. कहुं छे के :—

नान्तर्मुहुर्तकालमतिवृत्य शक्यं हि जगति सङ्क्केष्टुम् नापि विशोद्धं शक्यं प्रत्यक्षो ह्यात्मनः सोऽर्थः ॥१॥ उपयोगद्वयपरिवृत्तिः सा निर्हेतुका स्वभावत्वात् आत्मप्रत्यक्षो हि स्वभावो व्यर्थाऽत्र हेतुक्तिः ॥२॥ क्षेतम्रहुर्ते काळने उच्छंधीने जगतमां वधारे कछेश करवाने शक्तिमान् नथी तेज ममाणे आत्माने शुद्ध करवाने पण वधारे उपयोगद्वयपरिवृत्तिः सा निर्हेतुका स्वभावत्वात् आत्मप्रत्यक्षो हि स्वभावो व्यर्थाऽत्र हेतुक्तिः ॥२॥

काळ शक्य नथी ते आत्मानो अर्थ पत्यक्ष छे तेथी वधारे बार परिणाम न टके बंहक फेरफार थाय. ॥१॥

बे उपयोगनी परिष्टित्ति ते स्वभावथीज हेतु रहित छे. कारण के स्वभाव ते आत्माथी प्रत्यक्षज छे. अने त्यां हेतु बताववा व्यर्थज छे ॥२॥ अने अवस्थित काळ ते दृद्धि, हानि, लक्षणवाला बन्ने अने यव मध्य, अने वज्र मध्य ए बेनी माफक आठ समय छे. त्यार पछी अवश्य बदलाय आ दृद्धि हानितुं रहेछं परिणाम ते केवळी जाणे, पण केवळ ज्ञान विनाना छबस्थ जीवोने जिलाय नहि. जो के प्रवच्या लीधा पछीना कालमां सिद्धांत सागरने अवगाहन करतो संवेग वैराग्य भावना भाविक अंतर आत्मा- वालो कोइ मुनि वधता परिणाम ने भजे छे तेज कहां छे:—

जह जह सुयमावगाहर अइसयररस पसरसंजुयम उठ्यं । तह तह पल्हाइ मुणी नवनव संवेगसद्धाए

मुनि जेम जेम श्रुतने अवगाहे, (भणे) तेम तेम अतिशय रसना मसाथी संयुत अपूर्व आनंदने नवा नवा संवेगनी श्रद्धावडे पामे छे, तो पण वधनावाळा थाडा अने उत्तम भावमांथी हेठे पडनारा धणा तेथी कहीए छीए के ते श्रद्धा पाळे, एटले निरंतर उत्तमभाव वधारे, इवे ते केवी रीते पाळे, ते कहीए छीए, शंका छोडीने पाळे, आ शंका वे मकाश्नी छे. सर्व शंका अने देश शंका आ सर्वशंकामां जिनेत्वरनो मार्ग छे के निहें अने देश शंकामां अपकाय विगेरेना जीवा छे के निह? कारण के प्रवचनमां विशेष प्रकार किहीने बतावेल छे. तेथी स्प^ट चेतना लिंगना अभावथी जीवो नथी विगेरे शंकाओने दूर करी साधुना संपूर्ण गुणोने पाले, अथवा किशोत वे प्रकारे छे. द्रव्यथी नदी विगेरेना झरणो जोरथी चाले छे ते, अने भाव विश्रोत ते मोक्ष तरफ सम्यग्दर्शन विगेरे

For Private and Personal Use Only

अश्वां छे. वळी-'विजिहित्ता पूब्व संजोगं' एटछे पूर्वनो संबंध जे माता पिता साथे छे तथा पाछलो संबंध जे ससरा विगेरे साथे हे ते बन्ने संयोग छोडीने श्रद्धा पाळे तेमां जेने आ उपदेश देवाय छे ते शंका अथवा कुभावना छोडीने श्रद्धानुं पालन करखं तेनेज कहेवाय छे, तेथी एम समजवुं के जंबूस्वामीने कहे छे के तमे आधुं संयमनुं रहुं अनुष्ठान करशो एटलुंग निहं पण बीजा कि महा सत्ववाळा पुरुषो थइ गया ते पण पूर्वे आ प्रमाणे करता हता ते बतावे छे.

पणया वीरा महावीहिं (सू० २०)

परिसह, उपसर्ग, कपाय, तेमनी सेनाना विजयर्था वीरपद पामेला अने महान पंथ सम्यवदर्शन विगेरे रुप मोक्षमार्ग जे किनेश्वर विगेरे सत्पुरुपोए वारंबार वापरेला तेने अनुसरीने वीर्यवाला बनी संयम अनुष्ठान करे छे, तेथी उत्तम पुरुपोथी आ मार्ग उपयोगमां लेवायलो छे, एवं बताबी तेमणे पाडेला मार्गमां विश्वासवाला शिष्यो संयम अनुष्ठान सुख्यीन करशे, उपदेश कर्या पछी कहे छे, के लोक विगेरे छे तेमां तमारी बुद्धि अपकायना जीव विगेरे विषयोमां असंस्कारी होवाथी न पहेंग्वे तो पण भगवाननी आज्ञा छे, तथी मानवुं जोइए ते कहे छे,

लोगं च आणाए आभसमेचा अकुओभयं (सू० २१)

अहिं छोक शब्दथी चालता पसंगे अपकायनो विषय होवाथी अपकायनेज छेवो ते अपकाय छोकने अने 'च'शब्दथी अन्य

11824 1

पदार्था ने आज्ञावडे एटले जिनेश्वरनां वचननी बहु मान्यताथी सारी रीते जाणीने आ अपकायना जीवो छ. एथुं मानीने तेमने के कोइ प्रकारे भय न थाय एवो अकुतो भय संयम पालवो अथवा अकुतो भय एटले अपकाय जीवनो समूह छे ते कोइथी भय न को बांच्छे, कारण के तेमने पण मरणनी बीक लागे छे. माटे भगवाननी आज्ञाथी तेनी रक्षा करवी तेमनी रक्षा माटे शुं करबुं ते कहे छे.

से बेमि णेव सयं लोगं अब्भाइविखजा णेव अत्ताणं अब्भाइविखजा, जे लोयं अब्भाइविखड़, से अत्ताणं अब्भाइविखड़ जे अत्ताणं अब्भाइविखड़ से लोयं अब्भाइविखड़ (सु॰ २२)

सुधर्मास्वामी कहे छे के हे अंबू जे में भगवान पासे सांभव्युं छे. तेज तने कहुं छुं पण कल्पना करीने नथी कहेतो. आ अपकाय जावनो समूह जीव छे. एम हुं जे कहुं छु ते अचोरने चोर कहेवा माफक जुटुं नथी कहेतो, कोइ एम कहे के, अप-काय जीव, नथी, फक्त घी, तेल, विगेरे जेम उपकरण छे तेम ते उपकरण मात्र छे. आ असत् अभियोग छे. कारण के हाथी विगेरेमां पण करणपणुं आबी जशे तेथी शंका थशे के हाथीमां जीव छे के नहि?

शंका-आन अभ्याख्यान छे के तथो अजीवोने जीवपणुं आपो छो. आचार्यनुं समाधान, एम नथी. अमे पूर्वे पाणीनुं सचेतन एणुं सिद्ध कर्युं छे. जेम आ शरीरनो हुं विगेरे हेतु सहित आत्मा अधिष्टित छे एटले शरीरथी आत्मा जुदो छे. एवुं पूर्वे साध्युं छे. एन पमाणे अपकाय पण अब्यक्त चेतन वडे पूर्वे सचेतन साध्यो छे. अने साधेलाने अभ्याख्यान कहेतुं, ते न्याय नथी, वळी पूर्वे बादी कहे छे के आत्माने पण शरीरनो अधिष्ठाता मानवो ते अभ्याख्यान छे. कारण के ते किया करतो युक्तिमां घटतो नथी,

सूत्रम्

118241

11 224 11

एटला माटे कहे छे. आत्माने शरीरनो अधिष्ठाता एटले हुं ज्ञानधी अभिन्न गुणवाळो पत्यक्ष सिध्य छुं, पत्रुं दरेक जाणे छे तेथी

भंका-आ अमे केवी रीते नाणीए के आत्मा शरीरमां घरना मालीक माकक रहेलो छे?

उत्तर-भूलावाना स्वभाववालो देवोने मिय हे वादि! आगल कहेलुं छतां करीने कहेवडावे छे, करीथी लांगल, जैसके आ
भिर्म कोइथी लवायुं छे, तेनो संबंध आ शरीर साथे छे. तेथी कक, लोही, अंग, उपांग विगेरे परिणतिने पामेलाथी अन्न विगेरे
माकक छे, तेबीज रीते कोइ संधी राखनाराथीन उत्सप्ट (त्यनायलुं) छे. लीधेलुं होवाथी अन्न मळ (विष्टा) नी माकक छे, वळी तेज प्रमाणे ज्ञाननी उपलब्धि पूर्व क परिस्पंद (शरीरहुं इलन चलन) पण श्रांति रूप नथी, कारण के परिस्पंदपणे थवाथी तमारां 🖔 वचन जेम बुद्धिपूर्वक बदलाय हो, तेम, बस्री चोधुं अनुमान कहे हो, अंदर रहेलो मालीक हो तेना व्यापारने अजनारी इन्द्रियो 🤾 छे. करणपणे होवाथी, जेम दातरहुं विगेरे, उपयोग पूर्वक हाथथी चाले तेम आ छे. आ ममाणे चार अनुमान ममाण आपीने जीवने शरीरनी अंदर रहेलो सिद्ध कर्यो, ते ममाणे कुतर्क मार्गने अनुसरनारा हेतुनी माला (श्रेणी) ने स्याद्वाद क्रुहाडावडे दरेक आत्मार्थीए उच्छेद करवो, अर्थात् नास्तिकोने जीव सत्ता सिद्ध करी आपवी ए प्रमाणे जो उत्पत्ति अने प्राप्त थएलो

आत्मा शुभ अशुभ फळने भोगवनारो जाणवा छतां कोइ न माने, तो ए प्रमाणे थतां जे अब छे तथा इतर्फ हुए विमिर्श्वी जेनां

ह्यान चक्षु हणायां छे, ते अपकायना जीवने न माने, ते अपकायने न मानतां सर्व प्रमाणथी सिद्ध एवा आत्माने पण उडावे छे!

एटछे जो एम कहे छे, के हुं नथी, ते वोते साम्पर्थथी अवकायना जीवोने पण न माने, कारण के आत्मा नी अंदर हाथ के विगेरे अववव युक्त शरीर अधिष्ठाता छे छतां तेने उडावे छे तो पछी जेनुं चेतना लिंग अव्यक्त छे एवा अप्काय जीवोने के उडावे ए तो सहेछंज छे.

आ प्रमाणे अनेक दोषो आवता जाणीने बुद्धिमान पुरुषे अपकाय नथी, एवं खोडं न बोलवं, एवं विचारीने अपकायमां पण जीव छे, एम समजीने अपकायनो आरंभ साधुओए न करवो, पण बाद्ध मत विगेरेना साधुओ तेनाथी उलटा एटले अप-कायनी हिंसा करनारा छे, ते बतावे छे

लज्जमाणा पुढो पास अणगारा मो ति एगे पत्रयमाणा जिमणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं उदय कम्मसमारंभेणं उद्यसत्थं समारंभमाणे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ। तत्थ खळु भगवता परिण्णा 🧏 पवेदिता । इमस्स चेव जोवियस्स परिवंदणमाणणपूर्यणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव उद्यसत्थं समारमित अण्णेहिं वा उद्यसत्थं समारंभावेति अण्णे उद्यसत्थं समा-रंभंते समणुजाणित । तं से अहियाए तं से अबोहिए । से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुद्वाय रंभंते समणुजाणित । तं से अहियाए तं से अबोहिए । से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुद्दाय हैं सोच्चा भगवओ अणगाराणं अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति-एस खळु गंथे एस खळु मोहे एस

For Private and Personal Use Only

॥ १२८॥

खलुमारे एस खलु णरए, इच्चत्थं गिट्डिए लोए जिमणं विरूवरूवेहिं सत्थे हिं उदयकम्म समारंभेणं कि उदयस्थं समारभभाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ से बेमि संति पाणा उदयनिस्सिया जीवा

अगर (सू० २३)
अन्य साधुओ पोतानी प्रव्रच्याने छजावनारा अथवा सावद्य अनुष्टानथी छजा पामेछा जुदा पढेला शाक्य, उल्क, कथाअक्, किएल, विगेरेना जे मुनिओ छे तेमने तुं जो, एवं जैनाचार्य शिष्यने कहे छे. अविविक्षित कर्मचाछा छता अकर्मक थाय
छे. जेमके तुं जो मृग दोडे छे. ए प्रमाणे बीजी विभिन्तना अर्थमा पहेलीनो प्रत्यय छे, तेनो अर्थ आ छे के शाक्य विगेरे
साधुओ दिक्षा लीवेली छे छतां सावद्य अनुष्टान करे छे. एवा जुदा जुदा पटेलाने तुं जो, तेओए जैनावडे साधुने अयोभ्य
आचरण कर्युं ते आ प्रमाणे वताव्यं, ते कहे छे के अमे साधु छीए एवं केटलाक शाक्यादि बनावे छे ते व्यर्थ वतावे छे, कारण
के तेओ उत्सेचन, अग्नि विद्यापन, विगेरे शक्षोथी स्वकाय अने परकाय ए वे भेदथी भिन्न शक्षोवडे उदक कर्म (पाणीने दुःस्व
देखें) करे छे. उदकना कर्म समारंभ वहे अथवा उदकमां शक्ष चलावे छे. अने तथि ते कर्म करतां वनस्पति
तथा वे इन्द्रिय जीव विगेरे हणे छे. त्यां आगळ निश्चे करीने जिनेश्वर देवे परिक्षा बतावी छे के जेम आ जीवितव्यनाम परिविद्या निमेरे हणे छे. त्यां आगळ निश्चे करीने जिनेश्वर देवे परिक्षा बतावी छे के जेम आ जीवितव्यनाम परिवेदन, मानन, पूजन, जन्म मरणथी मूकवाने माटे तथा दुःखनो नाश करवा जे करे छे ते, वतावे छे. पोते पाणीना जीवोनो
समारंभ करे छे, बीजाओ पासे समारंभ करावे छे, अने समारंभ करनाराने अनुमोदे छे. ते कर्युं कराववुं अनुमोद्युं अने तेनाथी

सूत्रम्

।।१२८॥

11१२९॥

अप्कायना जीवोने दुःख थाय छे, तेनुं फळ आपमाणे छे. अहित माटे अवोधिलाभ माटे अर्थात् पाणीना जीवोने दुःख देनारनुं अहित थाय छे. तथा सम्यक्त्व (धर्म दीज) नाश थाय छे. आ वधुं समजनारो पुरुप प्रहण करवा योग्य सम्यक् दर्शन विगेरे सारी रीते भगवान अथवा मुसाधुओ पासे सांभळीने आ लोकना केटलाक साधुओने जे जाणपणुं थाय छे ते बतावे छे.

आ अप्पकायने दुःख देशुं ते खरेखर ग्रन्थ, (पापनो समृह एकठो थवो) मोह, मार, नर्क छे. छतां तेने अर्थे गृद्ध थयेलो लोक पाणीने दुःख देनारां विरुप शक्कोवहे पाणीने दुःख देवा साथे तेने आश्री बीजा अनेक जीवोने जुदी जुदी रीते हणे छे, ते वधुं पूर्व माफक जाणवुं. फरीथी सुधर्मास्वामी कहे छे के आ अप्काप संबंधी तत्वनुं छत्तांत में पूर्वे सांभळ्युं ते उदकमां रहेला पाणीओ पोरा, मत्स्य विगेरे जे जीवो छे तेने पण पाणीना समारंभ करनारो हणे छे. अथवा बीजो संबंध आ छे के पूर्वे कहेलुं उदक शास आरंभतो बीजा अनेक जीवोने अनेक रीते हणे छे.

शंका-ए केवी रीते जाण बुं शक्य छे! उत्तर-जीवो छे. ते अमे पूर्वे कही गया छीए, शंका-ते केटला छे.? उत्तर-जीवो अनेक छे.

अहिंआ जीवनुं फरी उपादान उदक्षां रहेला घणा जीवो छे ते जणाववा माटे फर्यु छे तेथी एम समजबुं के एक एकजीव भेदमां है उदक्रने आश्री असंख्यात माणीओ छे. ए ममाणे तेओ अप्कायनो समारंभ करतां ते पुरुषो पाणीने तथा पाणीना आश्रयना घणा जीवोने मारनारा थाय छे. ते जाणवं.

11१३०॥

हवे शाक्यादि उदक आश्रित बेइन्द्रिय जीवोने इच्छे छे पण उदकने नहि, ते बतावे छे,

इहं च खळु भो! अणगाराणं उदयजीवा वियाहिया (स् ० २४)

अहिंआ ज्ञातपुत्र महावीर तेना प्रवचन ते वार अंग जे गणी पिटक नामे ओळखाय छे, तेमां साधुओने बताब्धुं छे के उदकरण ही जीव छे अने 'च' शब्दथी तेने आश्रित पोरा छेदनक, छोदणक, भमरा, माछछां विगेरे अनेक जीवो छे तेमां अवधारण कळ आ छे के जैन श्रास्त्र माफक वीजामां आवी रीते पाणीना जीवो सिद्ध नथी कर्यां,

श्चंका-जो एम होय, के पाणीज जीव छेतो तेनो बारंबार परिभोग करता साधुओ पण पाणीना जीवोना घातक सिद्ध थश्चे ? उत्तर-एम नथी पण अमे पाणीना सचित्त, अचित्त अने मिश्र एम त्रण भेद मानीए छीए अने अचित्त, अपदायनो उपभोग

थाय, प्वी विधि छे, पण सचित्त अथवा मिश्र पाणी साधु न वापरे.

मक्ष-आ पाणी अचित्त स्वभावधी थाय छे के शक्षना संबंधधी ! उत्तर—बन्ने मकारे एमां जे अष्काय स्वभावधी अचित्त छे, तेने जो बाह्य श्रस्त्रनो संपर्क न थाय, तो तेने अचित्तजाणनारा पि पण केवळज्ञानी मनःपर्यायज्ञानी अविधि तथा श्रुतज्ञानी मुनिओ पण तेने वापरे नहिं, कारणके तेथी मर्यादा तुटी जवानी वीक रहे छे. जि जेमके गुरु परंपरार्थी सांभळीए छीए, के भगवान श्रीमहावीरे पूर्ण निर्मळ पाणीथी उलस्त् तरंगवाळो तथा शेवाळ समूहत्रस विभेरे

आचाठ की विश्व अने जेमां वथा पाणीना जीवो अचित्त थइ गयेला छे एवो एक अचित्त पाणीथी भरेलो मोटो कुंड देखीने पण घणीज तरशयी पीडाता पोताना शिष्योने ते पाणी पीवानी आज्ञा न आपी तथा अचित्त तलनुं गाडुं स्थिडिंलना पिरोगेगनी अनुज्ञा अनवस्था दोपना रक्षणमे माटे न आपी श्रुतज्ञानमुं प्रमाणपणुं वताववा माटे, कारण के स्वभावथी अचित्त अप्काय केवल ज्ञानथीज जणाय, पण श्रुतज्ञानथी न जणाय, अने साधुओने श्रुतज्ञानपणे चालवानुं होवाथी तेज प्रमाणे कर्युं, जेमके सामान्य श्रुतज्ञानी होय ते वाख इन्यनना संपर्कथी गरम ययेलुं तेन अचित्त जल छे एम माने छे, पण लाकडाना ताप विना पाणी पोतानी मेळे अचित्त नज थाय एम व्यवहार छे बाद्य शक्ता संपर्कथी जुदा परिणामने पामेलुं एटले तेनो वर्ण गंव विगेरे बदलाय ते अचित्त थयेलुं कहेवाय अने तेज साधुओने वापरवुं कल्पे, हवे ते शक्को बतावे छे

सत्थं चेत्थं अणुवीइ पासा, पुढो सत्थं पवेइयं (सू० २५)

जेनाथी पाणीओ शस्य थाय (गराय) ते सस्त, ते उंचे चडावयुं गाळयुं उपकरण घोषा अने पातानी काया विगेरेथी जे पूर्व अवस्थाथी विलक्षण रुपवाळा थयुं, ते जेनावडे थाय, ते पाणीनुं शस्त्र कहेवाय, जेमके अग्नि पुद्गळ अंदर जवाथी थोडुं पिंगळ (पीछुं) पाणी गरम थाय छे, ते गंभथी पण धुमाडाना गंथ जेशुं धाय छे, रसथी पण विरस थाय छे, अने स्पर्शथी उष्ण होय छे. तथा जण उक्ताळा (उभरा) आवेळ होय, एवुं बरोबर उकाळेळुं पाणी होय ते करप छे. शिवायगुं निह. वळी कचरो करीप (छाणां) गोमुत्र उप विगेरे तथा इन्धन (छाकडां) थी स्तोक अने मध्य एवा घणा भेदथी एटळे थोडामां थोडुं नाखे एवी चोभंगीनी भावना करवी

पुढोऽपासं पवेदितं ।

प्रमाणे जुदां जुदां लक्षणवाला शक्षोब है परिणामने पामेलुं पाणी ग्रहण करे एम अपाश बताच्युं एटले अपाशथी एम सुचच्युं के अचित्र पाणी ले तो कर्मवन्ध न थाय ए ममाणे साधुआने, सचित्त तथा मिश्र पाणी त्यागीने केवल अचित्त पाणीए काम च- लाववुं, लेओ शाक्यादि साधुओं छे ते अध्कायना उपभोगमां लीन थयेला छे, तेओ नियमथी अध्कायने हणे छे. अने तेना आश्रय- मां रहेला बीजाओंने पण हणे छे. आथी तेओने फक्त माणातिपातनो दोप नथी लागतो, पण बीजादोपोसाये लागे छे ते बतावे छे अदुवा अदिन्नादाणं (सू० २६)

अथवा शब्दथी बीजा पक्षना उपन्यास द्वारवडे अभ्युचय वताववा माटे छे तेथी एम जाणवुं के अचित्त न थयेछं पाणी वापरवामां हैं पाणातिपातनोदोप छागे छे एम नहीं पण तेनी साथे अदत्तादाननो पण दोष छागे छे. कारणके अध्कायना जीवोए जे शरीरो

मेळव्यां छे, तेओए तेमने नापरवानी आज्ञा आपी नथी, के तमो अमोने नापरो, छतां तेओ नापरे छे. जेम कोइ भिक्ष भारपना सिचित्र भरीरमांथी दुकडो छेदी छे तो छेनारने अदत्तानो दोप लागे छे. कारण के ते पारकी वस्तु छे जेम कोइ पारकी गाय विगेरे वोशी जाय तो चोर गणाय, एज प्रमाणे अप्कायना जीवोए जे सरीर ग्रहण करेछां छे ते बीजा छे तो अदत्तादाननो दोष अवश्य लागे, कारण के स्वामीए तेमने आज्ञा आपी नथी,

शंका-जेनो कुत्रों के तळाव होय तेनी आज्ञा छड्ने कोइ पणी पीए, तो तेमां स्वामीए एकवार आज्ञा आपवाथी दोष छागतो नथी तेम पारकानुं ढांर होय, अने ते आज्ञा आपे अने वीजो मारे, तेमां दोष नथी आ पण साध्य अवस्थावाळुंज अमे कहेळुं छे.

उत्तर-आ पण साध्य अवस्थाने योग्य वताच्युं छे कारण के पश्च पण शारीर अर्पण करवाथी विमुखन छे. अने आर्थ मर्यादा कोलंघनाराओं प्रोटेथी वराहा पाइता पश्चने मारे छे. तो आ पाटे अदत्तादान न थाय? कारणके परमार्थिनंताओं नोतां कोइ पश्च विगेरेनों कोइ वीजो मालीक नथी. इवे वादी कहे छे के, जो जैनोना कहेवा प्रमाणे पानीए, तो व्यवहारनी अंदर वथा छोकमां प्रसिद्ध गायना दान विगेरेनी रुटी जाय.

सूत्रम् ॥१३३।

॥१३४॥

यरस्वयमदुःखितं स्यान्न च परदुःखे निमित्त भूतमपि॥ केवलमुपग्रह करं, धर्मकृते तज्जवेदेयम्॥१॥

जी पोते दुःखी न थाय अने दुःख देवामां निमित्त न थाय अने केवळ उपकार करनारी बस्तु होय तेज धर्मने माटे आपवीं जोइए, आ उपरथी ए सिद्ध थयुं के पशु विगेरेनुं आपवुं ते पण अदत्तादानज छे. हवे ए दोपने पोताना सिद्धांतना स्वीकारना द्वारवडे वादी वीजा दोष दुर करवाने माटे कहे छे.

कप्पइ णे कप्पइ णे पाउं, अदुवा विभूसाए (सू० २७)

अश्रस्त उपहत (सचित्त) जळ वापरनाराओने आ भेरणा करतां तेओ आ प्रमाणे कहे छे. आ अपारी पोतानी युद्धिश्री सपा-रंभ करता नथी. किंतु अपारा आगममां निर्जीव पणावडे न निषेध करवाथी अपने पीवाने तथा वापरवाने करूपे छे. अने जुदा जुदा प्रयोजनमां उपभोग करवानी अमोने आज्ञा आपी छे. जेम के आजीविक (गोशालना मतवाळा) तथा भरमस्नापी विगेरे कहे छे के अपने पाणी पीवाने करूपे छे, पण नहावाने निह, तथा वैष्य मतवाळा अने परिवाजक विगेरे कहे छे के स्नान, पान, अवगाहन विगेरे बघामां अमोने सचित्त जळ करूपे छे, तेज पोताना नाम छेइने वतावे छे. अथवा पाणी अमारा श्वरीरनी शोभा माटे अमारा सिद्धान्तमां वताच्युं छे. विभूषा एटले हाथ, पग, मळद्वार तथा मुख विगेरे घोवां, तथा वस्त्र वासण विगेरे घोवां, ए प्रमाणे स्नान विगेरे पवित्र अमुष्ठान करनारने कंइपण दोप नथी जैनाचार्य तेमनुं खंडन करीने कहे छे के-

सुत्रम्

॥१३४॥

For Private and Personal Use Only

1183711

ए प्रमाणे तेओ व्यर्थ वचन बोलनारा परित्राजक विगेरे पोताना सिद्धांतना उपन्यासवढे ग्रुग्थ बुद्धिबाळाने मोह पपाडीने श्रं क्रि करे छे, ते कहे छे.

पुढ़ो सत्थे हिं विउद्दन्ति (सू० २८)

विभिन्न रुक्षणवाळा एटछे जुदी जुदी रीते छांटवा विगेरे शस्त्रोथी ते अनगारथी विरुद्ध आचरण करनारा अपकायना जीवोने तेमना जीवनथी दूर करे छे. अथवाजुदां जुदा शस्त्रोवडे अपकायना जीवोने छे. मूळसूत्रमां क्रुष्ट थातु छेदे छे, तेनो अर्थ छेदनना हिपमां छे इवे तेमना कहेला अगमने अनुसारनाराओना मतने असारपणे बताववा कहे छे.

एत्थवि तेसिं नो निकरणाए (सु० २९)

चालता विषयमां तेओना मत ममाणे स्वीकारे छते तेओं पाणी पीवामां न्हावामां घोवामां वापरे तो ते सिद्धांत स्पाद्वाद स यक्तियडे खंडन थयेछते निश्चय करवाने तेओ समर्थ नथी तेओनी युक्तिओं केवळ निश्चयने माटे समर्थ नथी एटलुंज नहिं पण तेमना आगम् पण निश्चय करवाने समर्थ नथी.

पश्च-केवी रीते तेमना आगम निश्चयने माटे समर्थ नथी. उत्तर-तेमने एवं पूछवं के तमारो आगम कयो छे के जेना आदेशवडे तमारो अध्कायनो आरंग छे! तेओ मितिविशिष्ट अ-

सूत्रम्

For Private and Personal Use Only

आचाठ की पहेलाना उत्तरमां एज कहेबुं के जेनो मानेलो ते तेने आप्त (विश्वासलायक पुरुष) छे. तेथी दूर करवा योग्य छ कारण क व अनाम छे तेथी अप्कायना जीवोनुं तेने ज्ञान नथी अथवा तेने ज्ञान होय छतां तेना वधनी आज्ञा आपेली छे तेथी तमारी मा-फकक ते अनाप्त छे. कारणके अमे पाणीनुं जीवपणुं पूर्वे साथी गया छीए अने तेमना कहेला सिद्धांतो पण सद्धमेनी मेरणामां अभ्याण थशे अने शेरीमां करता पुरुषना वाक्य माफक ते वाक्यो पण अनाप्त पुरुषनां कहेलां छे एकन मनाशे,

हवे वादीओं एम कहे के अमारो आगम आप्त प्रणीत नथी पण नित्य अकर्त् कज छे, तो नित्यपणुं तिद्ध यशे निर्हे, कारण के तमारो आगम वर्णपद वाक्यवाळो छे, तेथी सकर्त् क छे. अने विधि तथा प्रतिपेधरूपवाळो छे उभय संमत सकर्त् क प्रथनी माफक स्वीकारणा योग्य छे. अथवा आकाशादिनी माफक तमारा प्रन्थने तमार्ह नित्य मानवुं अमे अपमाण गणीएछीए कारण के अकाशनी माफक तमारो सिद्धांत नित्य नथी पण तेमां हमेशा प्रत्यक्षनी पेठे फेरफार देखाय छे.

वळी जेओ विभूपासूत्र वताचे छे, तेना अवयवमां पण मश्न पूछता उत्तर देवाने तेओ समर्थ निह थाय, जेमके अमे कहिशुं हैं के-यितने योग्यस्तान नथी, कारणके आभूपणनी माफक ते कामांग छे. अने स्नानमां कामांगता सर्व जन मसिद्ध छे. कहां छे के-

स्नानं मद्दर्पकरं कामांगं प्रथमं स्मृतम् । तस्मात्कामं परित्यज्य नैव स्नान्ति दमे रताः॥

रनान मद्दण्यकर कामाग प्रथम स्मृतम् । तस्मात्काम पारत्यज्य नव स्नान्त दम रताः॥

हिं
हिनान, मद अने दर्ष करनारुं छे, अने ते कामन्नुं पथम अंग कहेलुं छे, तेथी कामने छोडीने इन्द्रियोना दमनमां रहेनारा स्नान है

॥७इ१॥

नथी करता, वळी शौचने माटे पण पाणी पुरुं नथी, कारणके ते पाणीधी फक्त बाग्र मछज दूर कराय छे, परंदु अंदररहेलो कर्मनो के मेल दूर करवा माटे पाणी समर्थ नथी, तेथी शरीर वाचा अने मन तेमनी अक्कुश्चळ वर्तगुक रोकवारूप भावशाचि कर्म क्षय कर- कि वाने समर्थ छे, पण ते पाणीधी साध्य थाय तेम नथी?

पश्च-शा माटे पाणी समर्थ नथीं ? उत्तर सर्व पदार्थी अन्वय व्यतिरेकने आश्री छे. कारणके पाणीमां रहेनारां मांछळां विगेरे पाणीमां सदा स्नान करता होवा छतां पण तेओं सुं माछळापणुं दूर यहुं नथी अने पाणीथी स्नान नहि करनारा महर्षिओं विचित्र तपवढे संसार भ्रमणनुं कर्भ हणे छे, तेथी ए सिद्ध ययुं के तेमना सिद्धांत निश्चयने माटे समर्थ न थयो.

तेथी आ प्रमाणे पाणीना जीवोर्नु अशत्रुपणुं सिद्ध करीने तेनी प्रदृत्ति अने निष्टत्तिना विकल्पनुं फळ वताववाना द्वारवडे स-माप्त करवानी इच्छाथी जैनाचार्य आखा उद्देशनो अर्थ कडे छे.

प्तथ सत्थं समारभमाणस्त इच्चेए आरंभा अपरिण्णाया भवंति, प्तथ सत्थं असमारभमाणस्त इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति, परिण्णाय मेहावो णेव सयं उद्यसत्थं समारंभेजा णेवण्णेहिं उद्य सत्थं समारंभेतेऽवि अण्णे ण समणुजाणेजा, जस्सेते उद्यसत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति सेहु मुणि परिण्णातकम्मे (सू० ३०) सि वेमि ॥ इति तृतीयोऽप्कायोदेशकः ॥

सूत्रम्

110 = 911

आचा०
शाचा०

हवे चोथा उद्देशों कहीए छीए, तेना त्रीजा साथे आ संबन्ध छे जीजा उद्देशायां मुनिपणाना स्वीकार माटे अप्काय यताच्यो. हवे मुनित्वना स्वीकार माटे क्रमे आवेला अग्निकायना उद्देशों बतावे छे. (अग्निना जीवो बताववा चोथो उद्देशों कहे छे,) तेना उपक्रम विगेरे चार अनुयोगद्वार कहेवां, तेवां नाम निष्यत्र निक्षेपमां तेजस उद्देशों एवं नाम छे.

तेमां तेज शब्दना निक्षेषा विगेरेद्वार कहेवां अने अहि पृथ्वीना विकल्प माफक केटलांक द्वारोमां अतिदेश (जूदापणुं) तथा विलक्षणपणाथी बीजां द्वारोचुं अप् (पाणीचुं) उदार (बाकी रहेलां) ए वेने ध्यानमां लइने निर्धुक्तिकार गाया यहे छे.

तेउस्सवि दाराइं ताइं जाइं हवन्ति पुढवीए । नाणत्ती उ विहाणे परिमाणुवभोगसत्थे य ॥११६॥

तेउस्सिव दाराई लाई जाई हवन्ति पुढवीए । नाणत्ती उ विहाणे परिमाणुवभोगसत्थे य ॥१४६॥ हैं। अग्निना पण द्वार विगेरे निक्षेपा पृथ्वीमां बताच्या छे, तेन ममाणे छे, पण जे अपवाद छे, ते कहे छे, विधान, परिमाण,

॥१३९॥ 🛣

उपभोग, अने शस ए निक्षेपामां भेद छे, एण बीजे जुदापणुं नथी, मूळमां ' च ' शब्दथी अहिं छक्षणाहरनो परिग्रह छे. हवे जेवी पित्रहा करी ते प्रमाणे निर्धुक्तिकार द्वार वतावे छे. दुविहा य तेउजीवा, सुटुमा तह बायरा य लोगींमि । सुटुमा य सब्वलोए, पंचेव य बायरविहाणा ॥ ११७ ॥

दुविहा य तेउजीवा, सुहुमा तह बायरा य लोगंमि । सुहुमा य सब्वलोए, पंचेव य बायरविहाणा ॥ ११७ ॥ अग्निकायना जीवो सूक्ष्म, अने वादर एम वे प्रकारे छे, तेमां सूक्ष्म ते सर्व लोकमां छे, अने वादर अग्निकायना पांच भेद छे ते बतावे छे.

इंगाल अगणि अची, जाला तह मुम्मुरे य बोद्धव्वे । बायरतेउविहाणा, पंचविहा वण्णिया ए ए ॥ ११८ ॥

तेमां धुमाहो, तथा ज्वाळा विनानुं वळेळुं लाकडुं, ते अंगारो, तथा इन्धनमां रहेलो वळवानी क्रियाना विशिष्टरूपवाळो, तथा वीजळी अने उन्हापात, तथा अञ्चनीयी घसातां उत्पन्न थयेल, तथा सूर्यकान्त मणिना संस्त विगेरेथी उत्पन्न थयेल ते अग्नि छे, तथा वळवाना सवन्धमां रहेलो ज्वाळा विशेष ते अचि, अने अंगारथी जुदी पड़ी ते संवन्ध विनाना जे भड़का, ते ज्वाळा, अने कोइ कोइ अग्निना कण (तणखा) अने भस्म उडे छे, ते सुरम्रुर एम पांच भेद बादर अग्निकायना छे, अने ए बादर अग्निनुं पोतानुं स्थान चितवतां मनुष्यक्षेत्रमां अही द्वीप, अने वे समुद्रमां व्याचात न होय, त्यारे पंदर कर्म-भूमिमां छे, अने व्याचातमां फक्त पांच महानिदेहमां होय छे, (उपारे भरत अस्त्रतमां जुगलीओं होय; त्यारे वादर अग्निकाय न होय) ए शिवाय वीजे वादर अग्निकाय होय. होय. होय जिवा चितवतां लोकना असंख्येय भाग वर्ती छे सिद्धान्तमां आ ममाणे कह्युं छे:

सूत्रम

॥१३९॥

उवावएणदोसु, उड्हकवाडेसु तिरियलोयतहेच ॥

तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे अही द्वीप वे समुद्रनी वाहरूप (लंबाइ) पूर्व पश्चिम दक्षिण स्वयंभूरमण पर्वत, आयत (विस्तारवाळा) उर्ध्व अघो लोक प्रमाण कमाड, ते बेनी वचमां रहेला वादर अग्निमां उत्पन्न थवां तेनो व्यपदेश अग्निकाय (नाम) पामे छे. तथा विर्वक लोक प्रमाण थाळीना आकारमां रहेलो वादर अग्निमां उत्पन्न थयेलो वादर अग्निकायनो व्यपदेश पामे छे. वीजा आचार्य आ प्रमाणे कहे छे, के ते बेनी वचमां रहेलो एटले तिर्यक लोक तत्स्थ तेमां रहेलो उत्पन्न थवानी इच्छावाळा वादर अग्निनो व्यपदेश पामे छे. आ व्याख्यानमां कमाडनी अंदर रहेलोज लेवो अने ते बन्नेनी उंचा कमाडनी वचमांनो आ कहेवावडे तेज आब्युं छे. तथी तेनी व्याख्याना अभिपायने अमे समजी शक्ता नथी (आवुं टीकाकार लखे छे.) कवाटनी स्थापना आ प्रमाणे छे

समुद्घादवढ़े सर्व लोक वर्ती छे. अने पृथिवीकाय विगेरे मारणांतिक समुद्वातवढ़े मरायला वादर आंग्नमां उत्पन्न थनारा तेना व्यपदेशने पामनारा सर्व लोकव्यापी होय छे, अहिं ज्यां वादर अग्निकाय पर्याप्ता होय त्यांज बादर अपर्याप्ता होय कारणके पर्याप्तानी निश्राये अपर्याप्ता उत्पन्न याय छे. तेथी ए प्रमाणे सूक्ष्म अने वादर पर्याप्ता अने अपर्याप्ताना भेद दरेक बब्बे प्रकारे छे। अने ते वर्ण, रस, गंध, स्पर्धना आदेशवडे हजारो प्रकारना भेदवाळा संख्येययोनि ममुख शत सहस्र (लाख) भेदना प्रि परिमाणवाळा होय छे, त्यां तेओनी संदृत, अने उप्ण योनि छे. ते सचित्त अचित्त अने पिश्र, एवा त्रणभेदवाळी छे, अने ए

#38311

अग्निकायनी वधी मळीने सातलाख योनि छे. हवे मूळमां जे च शब्द छे, तेनो समुच्चित जे लक्षणद्वार छे ते कहे छे.

जह देहप्परिणामो रात्तं खज्जोयगस्स सा उत्तमा। जरियस्सय जह उम्हा तओवमा तेउजीवाणं ॥ ११९ ॥ जेम देइना परिणाम, ते मितविशिष्टि शरीर-शक्ति छे, ते रात्रीमां आगीयो जणाय छे, तेबी रीते आ देहनुं परिमाण जीव भयोगनी निवृत्त शक्ति देखांडे छे. एवी रीतेज अंगारा विगेरेनी पण मितविशिष्ट-मकाश विगेरे शक्ति अनुमानमां छेवाय छे. के, जीव भयोग विशेष वढे आ मकट थइ छे. (टीकाकारे निर्धुवितनो अर्थ करता आगीयानुं दृष्टांत बतावी अंधारामां ते मकाशे छे, तेनी उपमा लड़ जेम मकाञ्चर्या आगीओ जीव छे, तेम अग्नि पण मकाश विगेरे शक्तिथी जीव छे, आ मयोग छे, अने ते शरीरना 🗘 परिमाण वडे बताच्यो; तेम अग्निकाय पण जीव मानवा;), अथवा तावनी गरमी जीव-मयोगने छोडीने जती नथी; पण ते जीवर्थी 👍 अधिष्ठित-शरीरनी अंदरज रहे छे. आज उपमा व्यग्निकायना जीवोने छे, अने मरेला ताववाळा कोइ जगोपर देखाता नथी. (मर्यापछी तात्र होतोज नथी). एज प्रमाणे अन्त्रय व्यतिरेक बढे अग्निनुं सचिचपणुं गुक्त (जैन सिद्धान्त) ग्रंथनी उत्पत्तिना ग्रुख विडे स्वीकार्यु छे. इवे प्रयोग (अनुमान) वतावीए छीए; तेनो अर्थ आ छे.

अंगारा विगेरे जीव शरीर छे. कारण के जैम सारना विषाण विगेरे भेदाय छे, तेम ते पण छे, छेद्यत्वादि हेतु गणथी युक्त 🕻 छे. ते प्रमाणे आत्माना संयोगश्री पकट थयेलो अंगारा विगेरेनो पकाश्च परिणाम छे. अने ते शरीरमां रहेलो होवाथी सिद्ध थाय

स्त्रम्

अभि हो, अने तेनुं दृष्टांत आगीआना शरीरनुं परिणाम माफक जाणवुं. तेज प्रमाणे आत्माना संप्रयोग पूर्वक अगारा विगेरेथी गरमी छे. अने ते शरीरमांज रहेला होवाथी जणाय छे. जेम तावनी गरमी जीवता शरीरमां छे, तेम अंगारा विगेरेनी गरमी पण जीव शरीरमांज होवी जोहए, एम जाणबुं. अहिं सूर्य विगेरेना प्रकाशयी अनेकान्त (दोपवाळां) हेतु नथी कारणके वधाओने आत्म- प्रथा श्रीरमां होती जोहए, एम जाणबुं. अहिं सूर्य विगेरेना प्रकाशयी अनेकान्त (दोपवाळां) हेतु नथी कारणके वधाओने आत्म- प्रथा श्रीरमां होती अग्री स्वेतन छे. तेने वथायोग्य आहार मळवाथी तेना शरीरनी हद्धि यह विकार पामे छे, माटे तेमां विकारपणुं छे.

वळा आप्र सचतन छ. तन यथायाग्य आहार मळवाथा तना श्वरीरनी होद्ध थइ विकार पामे छे, माटे तेमां विकारपणुं छे. 🖔 जेम पुरुषनुं शरीर ज्यांसुधी चैतन् (सचेतन) होय ख्यांसुधी आहारथी हिद्ध पामे छे, आवां लक्षणथी अग्निकायनां जीवो निश्चयथी 🕏 मानवा, लक्षणद्वार समाप्त. इवे परिमाणद्वार कई छे,

जे बायर पज्जता पिळअस्स असंखभागिमता उ । सेसा तिष्णिवि रासीवीसुं लोगा असंखिजा ॥१२०॥

जे बादर पर्याप्ता अग्निकायना जीवो छे, ते क्षेत्रपल्योपमना असंख्येय भाग मात्रमां वर्ती प्रदेश राशीना परिपाणवाळा छे, अने ते बादरपृथ्वीकाय पर्याप्ताथी असंख्येय गुणहीन छे, बाकीनी त्रण राशीओ पृथ्वीकायनी माफक जाणवी, पण बादर पृथ्वी-काय अपर्याप्तायी बादर अग्निकाय अपर्याप्ता असंख्येय गुणहीन छे, अने सुश्म पृथिवीकाय अपर्याप्तायी सुश्म अग्निकाय अपर्याप्ता विशेष हीन छे. सुश्म पृथिवीकाय पर्याप्ताथी सुश्म अग्निकाय पर्याप्ता वधारे हीन छे. हवे उपभोगद्वार कहे छे.
हिंहणे एगण्यण प्रमाम्नणे य से ए य अन्तकाणे य । वायातेउकाए उवभोगग्रणा मणुस्साणं ॥ १२१ ॥

यत-वारीर विगेरेना अवयवो वाळवा तेनुं नाम दहन, टाढ विगेरे द्र करवा जे अग्निनी पासे बेज्ञीने तापीए छीए तेनुं नाम मितापन, तथा पकाश (अजवाळा) माटे दीवो विगेरे जे वाळे, तेनुं नाम मकाशन, तथा रसोइ करवा माटे जे छाकडां वीगेरे बाळ-वामां आवे, तेनुं नाम मक्तकरण, अने चूंक विगेरे रोगमां जे बाफ छे छे, तेनुं नाम स्वेद, (अथवा मार विगेरे छोहीनी गांट जिपर शेक करवामां आवे छे ते) विगेरे अनेक कामोमां अग्निनो उपभोग (उपयोग) थाय छे. आवां कारणो पोताने आवतां निर्वेतर आरंभमा रहेला गृहस्थो अथवा सुखना अभिलापी जीवो यितपणानो होळ करनाश अग्निकायना जीवोने हणे छे ते बतावे छे. एएहिं कारणेहिं, हिंसंती तेउकाइए जीवे। सायं गवेसमाणा परस्स दुक्खं उदीरंति ॥ १२२॥ उपर बतावेला दहन विगेरेना कारणे अग्निकाय जीवोने संघटन परिताप अपद्रावण (हिंसा) करे छे. अने ते वहे पोताना 🛠 आत्मानुं सुख वांछनारा वादर अग्निकायने दुःख उपजावे छे. इवे शसद्भार कहे छे. ते द्रव्य अने भाव एम वे मकारे छे. यळी द्रव्य शस्त्र पण समास अने विभाग एम वे मकारे छे हवे समासधी द्रव्यशस्त्र बतावे छे.

पुढ़नी आउ काएउछा य वणस्तइ तसा पाणा । बायरतेउकाए, एयं तु समासओ सत्थं ॥ १२३ ॥

पूळ, पाणी, लीली बनस्पति, त्रस जीनो ए वादर अग्निकायनां सामान्य शक्षो छे. हने विभागथी द्रव्यशक्ष कहे छे.

किंची सकायसरथं, किची परकाय तदुभयं किंची। एयं तु दबसरथं, भावे य असं जमो सरथं॥ १२४॥ 🕏 कोइक स्वकायण शहरूप याग छे, एटले एक अग्निकायथी बीजा अग्निकायने दुःख पढे छे. जेमके तुणनो अग्नि अने पां-

स्त्रम

१४३॥

अश्वा अग्नि परस्पर एकबीजाथी दुःख पामे छे. कोई परकाय शक्ष छे, जेम पाणी अग्निकायना जीवोने हणे छे अने उमय शस्य स्त्र स्त्र ते तुष, करीप. (छाणां) विमेरेथी मळेलो अग्नि बीजा अग्निने शक्षरूप छे. (अहिं उमयथी एम समजवुं के योडां वळतां माटीवाळां स्त्रम्म छाणां तथा वळतां भातना छोडां विमेरे अग्नि सहित होय छे तेथी अग्नि अने पृथिवी एम बेच मळी उभय थयां.) मूळमां 'तु' शब्द छे ते भाव शक्षनी अपेक्षाए विशेष अर्थ छे. अने पूर्वे कहेल समास विभागस्य पृथिवी तथा स्वकाय विमेरे द्रव्य शक्ष छे. १ पूर्वे कहेलुं व्यतिरिक्तना द्वारना अतिदेश द्वारवंडे समाप्त करवानी इच्छाथी निर्मुक्तिकार कहे छे.

सेसाइं दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। एवं तेउदेसे, निज्जुत्ति कित्तिया एसा ॥ १२५ ॥ पूर्वे कहेलां द्वारो जे पृथिवीकायना उद्देशामां कहेलां ते तेजस कायना पण समजवां ते वर्षा निर्धुक्तिओ अग्निकाय उद्देशामां 🧗

लागु पडे, एम समजबुं. इवे सूत्रानुगममां अस्खलितादि गुणयुक्त मुत्र कहेवुं ते आ छे.

से बेमि णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेजा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेजा, जेलोयं अब्भाइक्खइ से अत्ताणं अन्भाइक्खइ जे अत्ताणं अन्भाइक्खइ से लोयं अन्भाइक्खइ । (सू० ३१)

एनो सम्बन्ध पूर्वपाफक छे. जेवीरीते में सामान्य आत्म पदार्थ पृथिवी अपकाय जित्रविभागनुं वर्णन कर्युं, तेवीरीते हुं अहिं 🦒

1158611

पृथिवी पाणी, वायु, अने वनस्पति विगेरेनी अनुक्रमे (उत्कृष्ट स्थित) वावीश हजार, सात हजार, त्रण हजार, अने दश हजार वप अपाण होवाथी ते दीर्घ छे, एथी दीर्घलोक ते पृथिवी विगेरे तेमनुं आ अग्निकाय शस्त्र छे एम जाणनुं.

तेना क्षेत्रने जाणनारा निपुण अग्निकायने वर्ण बीगेरेथी जाणे छे, तथा अग्निनो सर्व पाणीओने खेद पमाहवानो एटले वाल्य वानो न्यापार होवाथी; पाक वीगेरे अनेक शक्तिकलापथीवधेला मोटा मिलनी माफक जाज्यल्यमान होय; ते अग्निना न्यपदेशने पामे छे, ते अग्नि (जीवोने दु:ख आपनार) होवाथी साधुओए तेनो आरंभ न करवो; ए एटले बीजा पाणीओना खेदने जाणनार ते खेदझ-मुनि छे, एथीज दीर्घलोक शस्त्र (अग्नि) ना खेदने जाणनार तेज सत्तर पकारना संयमनो खेदझ छे. अर्थात् मुनिनो संयम अञ्चल छे. ते संयम निश्चयथी कोइपण जीवने न मारे; तेथी अश्रत्व छे, तेथी संयम जे सर्व सत्त्वने अभय देनार छे, ते आद- रवा वहे अग्नि-जीव संवंधी आरंभ तज्ञवो सहेल छे, अने पृथिवीकाय विगेरेनो समारंभ पण त्यागवो; एम वर्तनार साधु-संयममां, निपुण मितवाळो छे, अने निपुणमितपणार्था पश्मार्थने जाणनार अग्नि-समारंभथी पाछो हठीने संयम अनुष्टानमां मवर्ते छे.

हवे कहेलां अने आवतां छक्षणां वहे अविना भावित्व (साथे रहेनार) वताववा माटे विपर्वय (उलटापणा) वहे सूत्रोना अव-यवनो विचार करे छे. जे 'असत्यस्सेत्यादि' जे अशस्त्रवाळा संयगमां निषुण छे, ते निश्रयथी दीर्घछोक शस्त्र (अग्नि)ना क्षेत्रने यवनो विचार करे छे. जे 'असत्थस्सेत्यादि' जे अशस्त्रवाळा संयममां निषुण छे, ते निश्चयथी दीर्घछोक शस्त्र (अग्नि)ना क्षेत्रने क्षेत्रज्ञे जाणनारा, अथवा खेदने जाणनार छे. संयमपूर्वक अग्नि विषय खेदने जाणनापणुं होनाथी तथा अग्निविषय खेदनुं जाणनापणुं के जेमां छे; तेज संयमनुं अनुष्ठान छे. आ शिवाय बीजा रीते संयमनो असंभवज छे. तथी आ गयुं, आव्युं फळ पकटकरेलुं छे.

गार्प्रभा

आ बतावेलुं कोणे जाण्युं ते बतावे छे, 'वीरेहीत्यादि' सूत्र ३३ थी जाणबुं अथवा सारा वक्तादि पसिद्ध थये वाक्यनी प-सिद्धि थाय छे. ते कहे छे-

वीरहिं एयं अभिभुय दिद्वं, संजएहीं सया जत्तेहिं सया अप्यमत्तेहिं (सू० ३३)

धनधाती कर्म समूह दूर करवा साथे तेज वखते केवळ ज्ञानरुप लक्ष्मी प्राप्त करवाथी विशेष प्रकारे राजे छे. तेथी 'वीर' ते तीर्थंकरो छे, तेवीरोए अर्थथी आ देख्युं (प्रकाब्युं) अने गणधरोए ते सांभळीने सूत्रथी अग्नि शल देख्युं अने अशल्लहप संयम देख्युं छे. प्रश्न-तेओए शुं करी आ प्राप्त कर्युं?

मश्र-तजाए रह करा जा मक्ष कथु : उत्तर-पराजय करीने, ते पराजय चार प्रकारे छे, नाम स्थापना सुगम छे, द्रव्य पराजय ते शत्रुनी सेना विगेरेनो पराजय 🕏 करवो अथवा सूर्यना मकाशथी चंद्र, ग्रह, नक्षत्र, विगेरेनुं तेज ढंकाइ जाय छे ते. अने भाव अभिभव (पराजय) ते परिपह छपसर्गनो समूह जे शत्रुरूप छे, ते तथा ज्ञान दर्शननुं आवरण तथा मोह अने अंतराय ए चार कर्मनुं नाश करतुं ते भाव पराजय छे,
पिएइ अने उपसर्ग विगेरे संनाने जीतवाथी निर्मेळ चारित्र मळे छे. अने चरणनी शुद्धिथी ज्ञान आवरण आदि कर्मनो क्षय थाय
छे, अने ते कर्मना क्षयथी आवरण रहित कोइ जगोए न हणाय, तेवुं संपूर्ण जाणवा योग्य पदार्थने जणावनार केवळज्ञान थाय छे,
एनो भावार्थ आ छे. के ते वीरोए परिपह, उपसर्ग, तथा ज्ञान दर्शन, आवरणीय मोह अंतराय कर्मने जीती केवळ ज्ञान भात करीने. ते ज्ञानवहें तेओए जाण्य के के आ अग्निकाय पण जीव छे. विगेरे.

सूत्रम्

तेमणे आ केत्रीरीते पाप्त कर्यु ते बतावे छे.

सम्यक्पकारे वर्ते, ते संवत एटछे प्राणातिपात (जीव हिंसा) विगेरेथी पाछा इटेला, तेमणे सर्वकाळ वरण (वारित्र) नो स्वीकार कर्यो, तेना मूळ अने उत्तर गुण एवा वे भेदमां तेमणे निर्तिचार (दोप रहित) उद्यम कर्यो, तथा मद्य विषय, कपाय, विकथा अने निद्रा ए पांच प्रकारनो प्रमाद सर्व काळ छोड्यो. तेथी ते अपमत्त वन्या, एवा वनेला महावीरोए केवळ ज्ञान चक्षुवहे आ दीर्घ लोक शक्ष (अग्नि) तथा अश्रस्त ते संयम एवं देख्युं. अहियां 'यतः 'शब्द ग्रहण करवाथी इर्या समिति तिगेरे गुणो लेवा, अने क्षेत्र शक्ष (अग्नि) तथा अश्रस्त ते संयम एवं देख्युं. अहियां 'यतः 'शब्द ग्रहण करवाथी इर्या समिति तिगेरे गुणो लेवा, अने क्षेत्र शक्ष करवाथी मद्यपान विगेरेनो निपेध जाणवो. आ उपस्थी एम सिद्ध थयुं के आ मधान पुरुषोए स्वीकारेलुं, अग्नि-काय शस्त्र अपायनुं कारण छे, माटे अपमत्त साधुओए तेने छोडवुं जोइए, एवीरीते खुछा बतावेला अनेक दोपना समूहवाला अ-प्रिशस्त्रने उपभोगना लोभधी, प्रमादवश थपेला, जेओ न छोडे. तेमने उद्देशीने तेमनां कडवां फळ थाय छे, ते बनावे छे-

जे पमत्ते गुणहीए से हु दंडेित पबुचइ (सू० ३४)
जे मद्य विषय विगेरे ममादथी ममादी यह रहे, ते असंयत छे, अने रंन्धन, पचन, मकाश, आतापना, विगेरे अग्नि गुणोने मघोजवाथी. ते गुणार्थी (स्वार्थ साधक) मन, तवन काषानो दुरूपयोग करनार, अग्नि शक्तना समारंभ वडे माणीओने दंड देवाथी पोते दंड रूपेज छे. एवं मकर्षथी कहेवाय छे. जेम आयुष्य छेतेमां घी विगेरेनो व्यवदेश कराय छे, (घी विगेरे योग्य पदार्थ मळवाथी जीवन वधे छे, एथी हवे शुं करबुं, ते कहे छे.

तं परिण्णाय मेहात्री, इयाणि णो जमहपूटत मकासी पमाण्णं (सू० ३५)
ते अग्निकायना समारंभमां दंड रूप फळने जाणीने इपरिज्ञा वढे जाणत्रुं, अने पत्याख्यान परिज्ञा वढे छोड्युं, ते वे परिज्ञा वढे पयादीमां रहेलों, ते मेथात्री (साथु) हवे पछी ना कहेवाता प्रकारों वढे आत्मामां वित्रेक करे, ते पकार वतावे छे,

' इपाणीत्यादि ' जे अग्नि समारंभने विषय प्रमादवढे आकुल अंतःकरण बाळों वनीने में कर्यों, तेने हवे जिनेश्वर भगवानना विचन्या अग्नि समारम्भ दंड तत्वने में जाण्युं, तथी हवे ते नहि करं, पण वीना मतना वीजीरीते बोलनारा उलड़ें करे छेते बतावे छे

लजमाणा पुढो-पास अणगारा मोत्ति एगे पवदमाणा, जिमणं विरूव हवेहिं सत्थेहिं अगणिक मस-मारभेणं अगणिसत्थं समारभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसंति, । तत्थ खल्ल भगवता परिण्णा पवेदिता, इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदणमाणणप्रयणाए, जाइमरणमोयणाए, दुक्खपिडघाचहउं से सयमेव अगणिसत्थं समारभइ, अण्णेहिं वा अगणिसत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा अगणिसत्थं समारभमाणे समणुजाणइ, तं सेअहियाए अबोहियाए, सेतं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुहाय, सोचा भगवओ अणगाराणं इहमेगेिसं णायं भवति-एस खळु गंथे एस खळु मोहे, एस खळु मारे एस

For Private and Personal Use Only

॥१५३॥

खळु णरए इच्चत्थं गड्डिए छोए जिमणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणिकम्मसमारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ (सू० ३६)

उपरनो एटळे ३६ मा मूत्रनो अर्थ पूर्वे बीजा सूत्रोमां कही गया छीए, छतां वाकीनो थोडो अर्थ कहेवाय छे. पोताना आगममां कहेळा अनुष्टान करनारा अथवा पाप अनुष्टानकरवाथी छज्जा पामेळा जुदा जुदा मतवाळा शावय विगेरे साधुओ केवा छे,ते तुं जो, पूर्व आचार्य पोताना किप्यने संयममां स्थिरकरवा माटेकहे छे. तेओ पोताने अणगार तरीके वोळनारा छे. छतां तेओ केवुं विरुप आचरे छे, जेथी तेओ लजाप छे, ते बतावे छे, जे आ विरुप रूपवाळां शस्त्रोवडे अग्निनुं कार्य आचरवाथी अग्निश्चस्ननो समारम्भ करतां बीना अनेक जीवोने हणे छे. (अने ते अणगार कहेवाय, छतां बीजा जीवोने हणे ते शरम भरेलुं फुत्य छे.) तेमां जिनेश्वरे परिज्ञा बता-बी छे, के न्यर्थ जीवनना, मानन, पूजन, बन्दन, तथा जन्ममरणथी छुटवा माटे दुःखने दूर करवा माटे जे करे छे, ते बतावे छे; ते परिवन्दन विगेरेना अर्थी पोतानी मेळे अग्नि वाळे, बीजा पासे बळावे, तथा बाळनाराओने अनुमोदे छे, ते अग्नि शखनो, समारंभ तेनी सुखनी इच्छाए करवा छतां तेने तेनाथी अहिं तथा परलोकमां अहितने माटे थाय छे. अने तेनी धर्म श्रद्धा नाश पामे छे, तेनुं आवुं आ असदाचरण बताव्युं, तेथी सारो किष्य अग्निकायनो समारंभ पापने माटे छे, एवुं जाणे, तेथी सम्यक् दर्शन किमेरे जिनेश्वर पासे अथवा कोइ सारा साधुओ पासे सांभळीने केटलाक साधुओने केवुं ज्ञान, थाय ते बतावे छे. अग्नि बाळवी, ते कर्भवन्थननो हेतु होवाथी ते ग्रंथ छे, मोह, मार, तथा नर्क छे, कारणके तेथी नर्कन थाय छे. एवुं छतां जे गृद्ध थयेल लोक छे

सूत्रम

॥१५३॥

आचा० ॥१५४॥ ते जे करे छे, ते बतावे छे. आ विरुष शक्षोवडे अग्रिकायनो समारंभ करे छे, अने ते आरंभधी अनेक जीवोने इणे छे, तेवी रीते अग्रिनो समारंभ करनारा जुदा जुदा जीवोने इणे छे, ते वतावे छे.
से बेमि—संति पाणा पुढवीनिस्सिया तणिणिस्सिया पत्तिणिस्सिया कट्टनिस्सिया गोमयिणस्सिया

से बेमि—संति पाणा पुढवीनिस्सिया तणिणिस्सिया पत्तिणिस्सिया कट्टनिस्सिया गोमयिणिस्सिया कयवरिणिस्सिया, संति संपातिमा पाणा आहच्च संपर्धति, अगणि च खल्ल पुट्टा एगे संघायमावर्जित, जे तत्थ संघायमावर्जित, ते तत्थ परियावर्जित, जे तत्थ परियावर्जित ते तत्थ उद्दार्यति (सू० ३७)

ते तत्थ संघायमावर्जाति, ते तत्थ परियावर्जाति, जे तत्थ परियावर्जाति ते तत्थ उदायंति (सू० ३७) र् एटले, माणिओ पृथिवीकायपणे परिणमेलाले, अथवा तेने आश्रित कृषि, कीडी, पतंग, तुंथु, गंडपद (जुआ) साप देडका, विंही 🗘 कर्कटक (करचला) विगेरे, तथा द्रक्षगुरुमलतानो समुद्द विगेरे, अने घास-पांदडां विगेरेना आश्रित रहेलां पतंगीयां, इपळो विगेरे 💃 तथा लाकडामां रहेलां घुण, कीडीओ. तथा तेनां इंडा विगेरे अने छाण विगेरेमां रहेला कुंथुआ पन्नक विगेरे, तथा कचरो ते, 🛣 पांदडां, घास धूळनो समूह, तेनी अंदर रहेलां कृमी कीडा पतंग विगेरे छे आ शिवाय उडता आवीने पडवाना स्वभाववाळा, अथवा 🖺 आमतेम जता आवता ते संपातिक छे. जेवा के, भमशा, माखी, पतंग, मच्छर पक्षी, वायु विगेरे संपातिक जीव छे, ते उडीने, पोते 🏌 पहे, अथवा जोरथी अग्नि बळतां उंचे तेनी शीखा जतां, ते उडतां अंतुओ अग्निमां पहे छे. आ ममाणे पृथिवी बीगेरेने आश्री हैं रहेला जीवोत्तुं शुं थाय छे? ते बतावे छे. रांधवुं, पकाबबुं, (निभाडा विगेरेने) तापन, विगेरे अग्निथी ग्रुण (स्वार्थ) बांछकों

सूत्रम् ॥१५४॥

अवस्य अग्निनो समारंभ करे छे, अने तेना समारंभमां पृथिवी विगेरेमां आश्रय लड़ रहेला जीवना आवा हाछ गाय छे, ते बतावेछे केटलाक तुं अग्निवडे संघात (श्रीर तुं संकोच वुं) मोरना पींछा माफ क बने छे (मूळ सूत्रमां सूत्रों छंदरूप होवाथी मागधीनी रीति ममाणे बीजीविभक्तिनो अर्थ त्रीजीमां छेवो, एटले अग्निने, तेने बदले अग्निए, अथवा अग्निवडे एम अर्थ करवो, तथा 'च' शब्दथी विशेष अर्थ छे. खलु शब्द निश्यय बाचक छे.) एटले बीजानो आ प्रताप नथी पण अग्निनोन छे, अथवा बीजी रीते लेतां अग्निनी बीजी विभक्ति सातमीमां लड़ए तो 'स्पष्ट शब्दनो अर्थ पतित एटले पडेलां, एवो करवो, एटले अग्निमां पडेलां केटलांक पतंगीआ विगेरे जीवो एकपणे अभिक शरीर संकोचनपणाने पामे छे, अने जेओ अग्निमां पड़्या ते बधा जीवो तापथी मर्छित थड जाय छे.

सुत्रकार महाराजे अन्य विभक्ति शा माटे लीघी के आपणे बीजीनो अर्थ त्रीजी विभक्तिमां लेवो पड्यो?

उत्तर-मगध देशमां ते ममाणे चाछे छे. अथवा एक भाषांमांथी बीजी भाषामां व्याख्या करतां विकल्प थाय छे. ते बताववा आ कर्युं, अने अध्याहार विगेरे पण व्याख्यान अंग छे, एवं आ सूत्रवडे शिष्यने जणाव्युं छे मध्न-अहिं ते अध्याहार विगेरे कया छे?

उत्तर-अध्याहार, विपरिणाम व्यवहित कल्पना, गुण कल्पना छक्षणा (असंवित) वाक्यने संभवित पणामां छाववुं ते) अने बाक्य 💢 भेद छे. तेवी रीते अहिं बीजीनो अर्थ सप्तमीमां परिणाम पाम्यो छे, जे अग्निमां पढे छे. तेओ कृमि, कीडी, भमरा, नोळीया

आचा० क्षेत्र प्राण छोडे छे. तेथी अग्नि सगारंभमां एकला अग्नि जंतुनो विनास नथी, पण पृथिवी घास पांदडां लाकडां छाणा तथा कि कचरामां रहेला जंतु तथा उडिने के उछलीने पडनारा जन्तुओ पण अवस्थ नाम पामे छे. तेथीज भगवतीसूत्रमां कहुं छे के" दो पुरिसा सरिसवया अन्नमन्नेहिं सिद्धं अगणिकायं समारंभंति, तत्थ णं एगे पुरिसे अगणिकायं समुजालेति, एगे विउझवेति, तत्थणं के पुरिसे महाकम्मयराए? के पुरिसे अप्पकम्मयराए? गोयमा ! जे उजालेति, से महाकम्मयराए जे विज्झवेति, से अप्पकम्मयराए, पश्च-वे सरस्वी नयना पुरुषो साथे अग्निकायनो आरंभ करे, तेमां एक अग्निकायने बाळे. अने बीजो तेने बुझावे, तेमां व-

धारे कर्प बन्धन कोने? अने ओछुं कोने?

उत्तर-हे गीतम जे वाळे, तेने पहान कर्मवंध लागे, अने जे बुझावे तेने धोडुं लागे छे.

एवीरीते अग्निकायनो आरंभ घणा जीवोने उपदव करनारो छे, एम जाणीने मन बचन अने कायाथी, तथा करवुं, कराववुं

तथा अनुमोद्दं, ते अग्निकाय सबंधी कर्म त्यागंतुं ते बतावे छे. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इचेते आरंभापरिण्णाया भवन्ति, तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं अगणिसत्थं समारंभे, नेवऽण्णेहिं अगणिसत्थं समारंभावेजा अगणिसत्थं समारंभमाणे अण्णे न सम-

णुजाणेजा, जस्सेते अगणिकम्म समारंभा परिण्णाया भवन्ति, से हु मुणी परिण्णाय कम्मे (सू॰३८)
तिवेमि ॥ इति चतुर्थ उद्देशकः ॥
आ अग्निकायना स्वकाय तथा परकाय, एम वे भेदवाळा शखना आरंभ करनारने रांघवं—रंपाववंः विगेरे वंपहेतु छे. एवं तेमने ज्ञान नथीः एण आज अग्निकायना शखनो आरंभ करवामां दोप लागे छे, एवं जेमने ज्ञान छे, एटले इ परिज्ञा वहे तेमणे जाण्यं छे. अने जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावहे तेनो त्याग करे छे. तेज धुनी परमार्थथी परिज्ञात कर्मा (गीतार्थ) छे, एवं जिनेश्वर पासे में सांभळ्यं छे, अने तेज तने कर्ड छं.

॥ चोथा उद्देशानी टीका समाप्त ॥

चोथो उद्देशो कहो. इवे पांचमो कहीए छीए; तेनो आ संबंध छे. गया उद्देशामां तेनस्काय कहा; अने इवे अविकळ (संपूर्ण) साधुगुणना स्वीकार माटे क्रमे आवेला वायुकाय बताववाना वखते, वनस्पतिकायना जीवन्त्रं स्वरूप बतावीए छीए.

प्रश्न-शा माटे आ क्रम उल्लंघो हो?

उत्तर-वायु आंखे देखातो न होनाथी, तेनी श्रद्धा थवी मुश्केल छे, तेथी वधा पृथिवी वीगेरे एकेन्द्रिय प्राणी—गणने जा-णनारो शिष्य सुख्यीज वायुनीवना स्वरूपने मानशे, अने ' अनुक्रम ' तेनेज कहेवो के, जेनावढे जीवादि तत्त्वो मानवामां शि-ध्यो जत्साहवाळा थाय, अने वनस्पतिकाय वधा लोकने प्रत्यक्ष छे, तथा प्रकट-जीवनां चिन्हना समूहथी युक्त छे, तेथी तेज वन-

आचा ॥१५८।

स्पितिकायने पथम कहीए छीए. ए प्रमाणे संवंधधी आवेला आ वनस्पितिकायनां चार अनुयोगद्वार कहेवां; ज्यांसुधी नाम निष्पन्न निक्षेपामां पनस्पित उदेशों छे, ते वनस्पितना पोताना भेदनों समृह वताववा पूर्व मिसद अर्थनां दुकाणना द्वारवंदे निर्धु वितकार कहे छे, पुढवीए जे दारा वणसङ्काएवि हुंति ते चेव। नाणत्ती उ विहाणे, पिरमाणुव भोग सत्थे य॥ १२६॥ पृथिवीकायनां जाणवा माटे जे हारों कह्यां, तेज अहीं वनस्पितमां जाणवां; पण जुदापणुं मरूपणा परिमाण जपभोग, अस्तो, अने च शब्दथी लक्षणमां पण जुदापणुं जाणवुं; तेमां मथम मरूपणा-स्वरूप बताववा कहे छे. दुविह वणस्सङ्जीवा सुहुमा तह बायरां य लोगांमि। सुहुमाय सब लोए दोचेव य बायरिविहाणा॥१२७॥ वनस्पित सुक्ष्म अने बादर, एम वे भेदे छे, तेमां सुक्ष्म छे, ते सर्वलोकमां व्याप्त अने एकाकार होवाथी चक्षुथीग्रहण यती नथी. विद्वारा वे भेद छे ते बतावे छे. पत्तेया साहारण, बायरजीवा समासओ दुविहा । बारसविहऽणेगविहा समासओ छिबहा हुंति ॥१२८॥ समासयी बादर वे प्रकारे छे. प्रत्येक अने साधारण, तेमां पांदडां फुल, फल, मुल, स्कंध विगेरे दरेकमां जुदोजुदो जीव जे व-नस्पतिमां होय, ते प्रत्येक वनस्पति जीव जाणवा, अने साधारण वनस्पति जीवो एक बीजाने जोडायला अनन्त जीवोनो समूह एक शरीरमां साथे रहेला छे. प्रत्येक शरीरवालाना वार भेदो छे, अने साधरणना अनेक भेदो छे, पण ते समासथी छ प्रकारे क्षे जाणवा, तेमां प्रथम प्रत्येक वनस्पतिना वार भेद बतावे छे.

सूत्रम् ॥१५८॥ आचा० ॥१५९॥ रुक्ला गुच्छा गुम्मा, लया य, वही य पर्वगा चेव । तणवलयहरियओसहिजलरुहकुहणा य बोद्धवा ॥

छेदाय ते हसो, ते वे मकारना छे, एक अस्थिक, (एक ठळीयावाळां) तथा वहु बीनवाळां छे, तेमां लीमडो, आंबो, कोशंब, साल (साग), अंकोल पीलु, बल्की विगेरे एक बीनवाळां छे, अने उमरो कोठुं अस्तिक (अगथीओ) टीमरू वीलु, आमळां, फणस दाडम बीनोहं विगेरे अनेक बीनवाळा छे, रींगणां (वेंगण), कपास, जपो (जासुंदी)आढकी (तुवेर), तुलसी, कुसुंभरी, पीपळी, नीळी (गळी) निगेरे गुच्छावाळां छे. नवमालिका, सेरियक, कॉरंटक वंधुजीवक; बाण, करवीर (केरां), सिंदुवार, विचिक्तल जाति (जाइ) युथिक विगेरे गुरुप छे, अने पमनाग अशोक, चंपो, आंबो, वासंति, अति मुक्तक कुंदलता विगेरे, लताओं छे. कोळानो वेलो, काळंगडानो वेलो, तपुषी (काकडीना वेला), तुंबो, बालोळ, एलालुकी. तथा पटोळो (पंडोळानो वेलो) विगेरे वेलडीओ छे. तथा शेरडी, वाळो सुंठ, शर, वेत्र शतावरी वांस नळ वेणुक विगेरे पर्वग कहेवाय छे. अने श्वितका (धोळीदरो) कुश, दर्भ, पर्वका, अर्जुन सुरभि, कुरुविंद विगेरे घास कहेवाय छे. तथा ताड तमाल, तक्षळी शाल सरला केतकी-केळ, कंदळी, विगेरे वलय कहेवाय, सांदळजो धुया रुद्द बस्तुल बदरक; मार्जार, पादिका चिल्लिपालकी विगेरेने इत्ति (भाजीओ) कहे छे, अने साली (भात), त्रीही (डांगेर.) घउं, जब कलम, मसर, तल, मग, अडद, चोळा, कुलथी, अळसी, कुसुंभ, कोदरा, कांग, विगेरे, औषधि कहेवाय छे जदकावक पनक शेवाळ कलंपयुका, पावक, कशेरक (क्सेरु) जत्यल (लाल कमळ) पद्म, कुमुद (पोयणी), नलीन, पुंडरीक विगेरे 🛴 जलरह कहेवाय छे. अने भूमिस्फोट नामना, आय' काय, कुहुण उंडुक, उदेहलीक, शलाका, सर्प छत्र विगेरे कुहुण कहेवाय छे.

सूत्रम

1184811

आ मत्येक जीववाळा झडोना मुळ, स्कंध कंद, छाल, भाख, प्रवाल विगेरेगां असंख्यता प्रत्येक जीवो जाणवा, अने पांदडां कुल एक जीववाळा मानवां. साधारण वनस्पतिना पण अनेक भेद छे, जेम के, लोही, निहु, स्तुभाविका, अन्व कर्णी सिंह कर्णी, सूत्रम ग्रंगचेर (आदु), माळुका, मूळा, कु'णकंद, सुरण, काकोली, श्रीश्काकोली विगेरे छे. आ वधी वनस्पतिना संक्षेपधी छ भेद छे, ते भेदोने वतावे छे.

अग्गवीया मृळबीया, खंधवीया चेव पोर बीया य बीयरुहा समुरुछिम,समासओ वणसईजीवा ॥१३०॥

नेमां कोरंटक विगेरे अग्रवीजवाळां छे. केळ विगेरेने मूळमां बीज छे. निहु ब्रह्णिक अर्थीक (अरणी) विगेरेने स्कंपमां बीज छे. अने बोरडी, वांस, नेतर विगेरेने पर्वमां वीज छे, अने बोजधी उमे, ते भात विगेरे जागना; अने संमूर्छनधी प्रिनी शृंपाटक (श्रींगांड) पाठ शेवल, विगेरे थाय छे. ए ममाणे समासथी छ प्रकारे बताव्या पण आ शिवाय नीजानथी; एम जाणबुं. हवे प्रत्येक विनस्पति केवा लक्षणवाळी होयछे ते बतावेछे.

जह सगलसरिसवाणं, सिलेसिस्साण वित्तयावटी पत्तेयसरीराणं तह हुंति सरीरसंघाया ॥ १३१ ॥ जैस वधा सरसवोने रस पहें वे छे. तेनाथी मिश्रीतोनी वळेडी वर्तीमां मत्येक मदेशोमां क्रमेकरीने सिद्धार्थ (सरसव) रहा छे, पण एकवीनाने अटकी रहा। नथी. (दरेकनी वचमां सहेन अंतर रहे छे,) अने कदाच चूर्ण थाय. त्यारे अन्योअन्य भेळा हैं थाय छे. माटे आखा ब्रदण कर्यो छे: जेम आ रहे छे, ते प्रमाणे पत्येक वनस्वपतिना शरीरनो समूह छे; अने जेम सरसवो ते

ममाणे ननस्पितमां जीवो रहा छे, जेम रसथी मिश्रीत थयेला सरसव छे, तेम राग हेपवडे एकटा करेला कम पुर्गलना उदयथी 🛱 मिश्रित जीवो जाणवा; पाछली अडधी गाथावडे बतावेल दृष्टांत साथे सरखापणुं ग्रहण करवाथी चताव्युं छे, हवे आज अर्थमां वीजुं

॥१६१॥ हैं जह वा तिलसक्किलिया, बहुएहिं तिलेहिं मेलिया। संती पत्तेयसरीराणं तह हुंति सरीरसंघाया॥१३२॥ हैं जेमके तिल शब्कुलिका एटले वधारे तल नांखीने बनावेली छे, ते पोलीमां तल रहेलां छे, तेवी रीते प्रत्येक श्वरीरवालां दक्षोना है श्रीर समूद होय छे; एम जाणबुं (आमा तलनी रेवडीनुं पण दृष्टांत चाले) हवे प्रत्येक जीवोनुं एक अधिष्टिवपणुं बतायवा कहे छे.

नाणाविहसंठाणा दोसंतो एगजीविया पत्ता । खंधावि एगजीवा तालसरलनालिएरीणं । १३३ ।

जुदा जुदा संस्थान (आकार) जेमां छे ते जुदा संस्थानदाळां पादडां देखाय छे ते एक एक जीवथी अधिष्टित जाणवा तथा ताळ सरळ नाळीयेरी विगेरेना डाळां पण जीव अधिष्टित जाणवां, अहीआं अनेक लीवनुं अधिष्टितपणुं संभवतुं नथी, बाकीना भागोमां अनेक जीवनुं अधिष्टित पणुं सामध्येथी बतावेछ जाण्युं, हवे मत्येक तरुना जीवराझीनुं परिमाण बताववा कहे छे.

पत्तेया पज्जता सेढीए असंखभागमिनाते । लोगासंखप्पजनगाण साहारणाणंता ॥१३४॥

मत्येक तह जीवो पर्याप्ता होय, ते संवर्तित चोखुणो करेली छोकनी श्रेणीना असंख्येय भागवर्ती आकाश मदेखनी राश्ची वरोवर जाणवा, अने ते बादर तेजस्काय पर्याप्ताना राशीथी असंख्यात गुणा जाणवा, पण जे अपर्याप्ता मत्येक वनस्पति जीव छे, ते

असंख्यात लोकना जेटला प्रदेश थाय, तेटला जाणवा, अने ते पण वादर अपर्याप्ता तेमस्कायना जीव राश्चीथी असंख्यात ग्रुणा हे छे. पण सूक्ष्म वनस्पति पर्यक शरीर पर्याप्ता के अपर्याप्ताज नथी कारण के साधारण अनन्ता छे. एवं पूर्वे विशेषण कहेलुं छे, के अने साधारण वनस्पतिना जीवो सूक्ष्म, वादर, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम, चार मेटे जुदा जुदा अन्नते लोकोना जेटला आकाश प्रदेश छे, तेटला जाणवा, आटलुं तेमां विशेष छे, के साधारण वादर पर्याप्ताथी बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे, अने बादर अपर्याप्ताथी सूक्ष्म अपर्याप्ताथी सूक्ष्म अपर्याप्ता असंख्यात ग्रुणा छे. इवे आ वनस्पतिना जीवोनुं जीवत्व जोओ इच्छता नथी; तेमने जीवपणुं वताववा निर्युक्तिकार कहे छे.

एएहिं सरीरेहिं, पश्चक्तं ते परूविया जीवा । सेसा आणागिज्झा, चक्खुणा जे न दोसंति ॥ १३५ ॥

पूर्वे बतावेला तरु शरीरवडे मत्यक्ष ममाणवाला विषयो वडे साझात् वनस्पति जीवो साध्या छे, तेनुं आ ममाणे अनुमान करवुं. (१) आ शरीरो जीवन्यापार विना आवां न थाय. (२) जीवशरीर हक्षो छे, कारणके, अक्ष (इन्द्रियो) थी जणाय छे. हाथ विगेरेना समूहवाला शरीरनी पाफक दृष्टांत छे (३) कदाचित् सचित्तो पण हक्षो छे, कारणके ते जीवनुं शरीर छे. हाथ विगेरेना समूहनुं दृष्टांत छे. (४) मंदविज्ञान सुख विगेरेवालां झाडो छे, कारणके तेमां अव्यक्त चेतन समायछं छे. स्तेला विगेरे पुरुपनुं हुएदांत छे. तेज ममाणे कह्नं छे के

बृक्षाद्योऽक्षायुपलब्धिभावात्पाण्यादिसंघातवदेह देहाः ॥ तद्दसजीवा अपि देहतायाः सुप्तादिवत् ज्ञानसुखादिमंतः ॥ १ ॥



अचि

हिं विगेरे इिद्रियोनी उपलिधना भावथी द्वाध विगेरेना समुद्रवालाज शरीरनी माफक देहो छे तेनी माफक ते देहवाला जीवो स्तेला विगेरेनी माफक ज्ञान सुख विगेरे वाला छे. (भावार्थ उपर आबी गयो छे,) बाकीना सुक्ष्य छे ते आंखोधी देखाता नथी तथी जिनेश्वरनी आज्ञाए ममाण करवा अने भगवाननुं वचन सत्य तथा रागद्वेष विनानुं कहेलुं होवाथी आज्ञा ममाण छे. माटे ते मानयुं जोइए हवे साधारणनां लक्षण कहे छे.

साहारणमाहारो साहारण आणपाणगहणं च । साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं एयं ॥ १३६॥
एक श्रीरमां साथे रहीने आहार निगेरे जेओ एक साथे छे, ते साधारण वनस्पित जीवो छे. अने तेज अनन्तकाय जीवो हुं सामान्य रीते एक साथे आहार छेवो, तथा खासोखास छेवातुं होवाथी ते साधारणतुं छक्षण छे, एनो भावार्थं आ छे के एक जीव आहार छे, के खासोखास छे, त्यारे वधा अनन्ता जीवो आहार छे, तथा खासोखास छे, हवे तेने वधारे खुछासा साथे कहे छे.
एगस्स उ जं गहणं बहुण साहारणाण ते चेव । जं बहुयाणं गहणं समासओ तंपि एगस्स ॥ १३७॥
एक जीव जे खासोखासने योग्य पुद्गछो छे, ते घणा साधारण जीवोने उपयोगमां आवे; अने जे घणा जीवो छे, ते एकने पण तेज काम छागे छे: हवे जे बीनोथी उने छे: ते वनस्पति केवी रीते पकट थाय छे, ते बतावे छे.
जोणिवसृए बीए जीवो, वक्कमइ सो व अक्नो वा । जोऽवि य मूळे जीवो, सो च्चिय पत्ते पढमयाए॥ १३८॥ साहारणमाहारो साहारण आणपाणगहणं च । साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं एयं ॥ १३६ ॥

स्त्रम् ॥१६३॥

अहीं भूत शब्द छे, ते अवस्था बतावे छे. योनि अवस्थावाजा बीजमां योनित्रुं परिणाम न छोडे त्यांग्रुपी बीजरुपे छे. कारणके, बीजनी वे अवस्था छे. योनि अवस्था अने अयोनि अवस्था, ज्यारे बीजो योनि अवस्थाने न छोडे, एटले एक जीवे बीरणके, बीजनी वे अवस्था छे. योनि अवस्था अने अयोनि अवस्था, ज्यारे बीजो योनि अवस्थाने न छोडे, एटले एक जीवे बीराणके, बीजनी वे अवस्था छे. अहीं योनिनो एवो अर्थ छे के तेमां जीवने उत्पान नाश पाम्युं नयी, तेनी
योनिवाळा बीजमां जीव आत्रीने उत्पान थाय छे. इवे ते बीजमां पूर्वना बीजनो जीव, अथवा अन्य नवो जीव आत्रीने उत्पान
याय छे, पनो भावार्थ ए छे, के जीवे ज्यारे आयुष्यना सयथी बीजनो त्याग कर्यों, त्यारे अने ज्यारे ते बीजनो पृथिवी पाणी
विगेरेनो संयोग थयो. त्यारे कोइवखत ते पूर्वनो जीव त्यां आत्रीने परिणमे छे, कोइवखत बीजो पण आवे छे, अने जो मूळपणे
जीव परिणमे, तेज पथम पत्रपणे पण परिणमे छे, एक जीव मुळ पत्रने करनार छे, अने पहेलुं पांद हुं जे छे ते आ बीजनो 'समूच्छन ' अवस्था छे, ते भू, जळ, काळ,नी अपेक्षाए कहेवाय छे. आ नियमथी वतावेल छे. पण याकीना किशलय विगेरे मूळ
जन परीणामथो प्रगट थयेलां नयी, एम बतावेलुं जाणवुं, तेथीज कहेलुं छे के:—

"सद्योऽनि किसलओ खल्ल उग्गममाणो अणन्तओ भणिओ"

सर्वे कुंपळो उत्पन्न थती वखते अनन्तकाय छे, इवे बीजां साधारणमां छक्षण कहे छे.

चकांगं भजामाणस्स, गंठी चूणणघणो भवे । पुढिवसिरिसभेएणं, अणंतजीवं वियाणाहि ॥ १३९ ॥ के मूळ, बंद, छाल, पत्र पुष्प, फळ विगेरेने भागेलां कनाकार संगधेद (भंग) थाय छे. तथा जेने गांठ, पर्व अथवा भंग

स्थान रजधी न्याप्त छे, अथवा जे वनस्वित भेदातां पृथिवी सरखा भेदवडे केदारना उपर सकी तरीनी माफक पुटभेदे भेदाय छे.
तेने अनंतकाय नाणो; इवे बीजा सक्षणो कहे छे.
गूढिसिरागं पत्तं सच्छीरं जं च होइ निच्छीरं। ज पुण पण्डसंधिय अणंतजीवं वियाणाहि॥ १४०॥ जेने गृढ सीरवाळां तथा स्वीरवाळां पांदडां होय अने स्वीर न पण होय, तथा जेना सांधा न देखाता होय ते अनंतकाय नाणवा, ए प्रमाणे साधारण जीवोने स्थणथी बतावी हवे अनंतकाय वनस्पतिनां नामो बतावे छे.
सेवालकत्थभाणियअवए पणए य किंनए य हढे। एए अणंतजीवा भणिया अण्णे अणेगविहा १४४१।

सेवाल, कत्य माणिक अवक, पन्नक, किण्व इठ, विगेरे अनंत जो अनेक प्रकारना कहेला छे. एम बीजा पण जाणवा, इवे पत्येक शरीरवाळानां एक विगेरे जीवतुं ग्रहण करेलुं शरीर बताववा कहे छे.

एगस्स दुण्ह तिण्ह व संखिजाण व तहा असंखाणं पत्तेयसरीराणं, दीसंति सरीरसंघाया ॥ १४२ ॥

एक जीवे ग्रहण करेखं, भरीरताड, सरल, नाळीयेर विगेरेना स्कंध छे तथा ते चक्षुथी ग्रहण कराय छे तथा विस (तन्तु) मृणाल, कर्णिका, कुणक, कटाहतुं एक जीवतुं ग्रहणपणुं छे, अने ते चक्षुथी देखाय छे. अने वे त्रण, संख्येय, जीवोतुं ग्रहण करेखं पण (शरीर) चक्षुयी देखातं जाणवं. मडन—त्यारे अनन्तकायनं ते प्रमाण छे के केम? उत्तर तेम नथी ते बतावे छे,

आचा० 🚰

॥१६६॥

इक्सस्स दुण्ह तिण्ह व संख्यिजाण व न पासिउं सका। दोसंति सरीराइं, निओयजीवणऽणंताणं ॥१४३॥
एक विगेरेथी लहने छेवटे असंख्यात संख्याना अनंत तह जीवोना जुदा शरीरो देखाता नथी. कारण के तेनो अभाव छे. एक विगेरे जीवे ग्रहण करेलुं अनंत जीवो सुधीनुं शरीर जुदुं नथी कारण के अनंता जीवोनुं पिंडहपे एक श्रार छे.
प्रश्न-त्यारे ते केवी रीते जीवोने शरीरवाळा जाणवा ? ते बतावे छे.
छत्तर-वादर्शनगोद जे अनंत जीवो छे तेमनां शरीरो देखाय छे, पण स्थम निगोदना शरीरो देखातां नथी. कारण के अनन्त जीवोना समृहदणे शरीरो छतां ते अति स्थम छे, अने निगोद छे ते।नेयमथी अनन्त जीवोनो समृह होष छे कत्नुं छे के:—
गोला य असंखेजा, हुंति णिओआ असंख्या गोले। एकेको य निओए, अणंतजीवो मुणेयववो ॥ १ ॥

गाला य असखजा, हु।त ।णआआ असख्या गाल । एकका न गाला, जनवाला सुनाना ॥ १ १ असंख्याता निगोदना गोला छे, एकेक गोलामां असंख्यात निगोद छे. अने एकेक निगोदमां अनंता जीवो छे ए ममाणे वे नस्पितना दक्षादि मत्येक विगेरे भेदोशी तथा वर्ण, संप्र, रस, स्पर्शना भेदथी इनारोनी संख्यामां भेद अने योनि विगेरे भेदो लाखोनी संख्यामां छे; अने वनस्पितनी संद्रता योनि छे ते सचित्त अचित अने मिश्र एम त्रण भेदो छे तथा शीत, उष्ण, मिश्र एवा बन्ध मेद छे एममाणे गणता मत्येक तस्त्रोनी योनीना दश्च लाख भेद छे, अने साधारण वनस्पितना चौद लाख भेद छे. अने वन्नेनी कुल कोटी २५ करोड लाख नाणशी; विधान द्वार कहां इवे परीमाण द्वार कहें छे; तेमां प्रथम सङ्ग अनंत जीवो नुंपरिमाण बतावे छे. परथेण व कुडवेण व जह कोइ सिणिज सबधनाई | एवं मविज्ञमाणा, हवंति लोया अणंता उ ॥१४४॥

॥४६७॥

पर्य (माप) अथवा कुडव विगेरेना मापथी कोइ षधा धान्यने मापे, अने बीजी जगाए नाखे ए प्रमाणे कोइ साधारण वन-स्पंतिना जीबोने छोक रूप कुडवे करीने मापे बीजे नाखे तो मापतां अनंता छोको भराइ जाय इवे बादर निगोदनुं परिमाण बतावे छे.

जे बायरपज्जता पयरस्स असंखभागिमता ते। सेसा असंखलोया, तिन्निवि साहारणाणंता॥१४५॥ जे पर्याप्ता गादर निगोद छे, ते संवर्तित बोखंडा करेला वया लोकना मतरना असंख्येय भागवर्ति मदेश राशी परिमाण जाणवा; वली ते मत्येक शरीर वादर बनस्पति पर्याप्ता जीवोथी असंख्यात गुणा छे. बाकीनी त्रणे राशी मत्येक असंख्येय लोक आकाश मदेश परिमाणवाला छे, इवे ते त्रण राशी बतावे छे? अपर्याप्ता बादर निगोद २ अपर्याप्ता सुश्म निगोद १ पर्याप्ता सुश्म निगोद ए त्रणे क्रमथी संख्यामांवहुतर (एक एकथी अधिक) जाणवा, पण साधारण जीवो संख्यामां तेनाथी अनंत गुणा छे. आ, जीव छं परिमाण छे; पण पूर्वे बार राशी कही ते जीव छं नहीं पण निगोद छं परिमाण जाण छं; इवे परिमाण हार कहा पछी उपभोगहार कहे छे. आहरे उवगरणे, स्यणासण जाण जुग्गाकरणे य। आवरण पहरणेसु अ सत्थिवहाणेसु अ बहुसुं॥१४६॥

पळ, पान, कुंपळ, मूळ, बंद, छाल, विगेरे खवाय छे अने, पंखो, कडां (चुडीओ) कवलक अगेल विगेरे उपकरणो चने छे तथा खाटलो पाटीयुं सुवा माटे छे. तथा आसंदक (पांची) छे तथा पालखी विगेरे यान छे; तथा गाडीना धुसरां, पाटीआनां ढांकण अने लाकडी ससळी (घोको,) विगेरे हथीयार छे; तथा तेनां घणां प्रकारनां कस्त्रो छे; तेना शर, दातरडां, तलवार, छरी,

सूत्रम

११६७॥

आचा०
॥१६८॥

विगेरे गंड (हाथों?) उपयोगी पणे छे. तथा बीजो पण परिभोग विधि छे ते बतावे छे.
आउज्ज कहकम्मे गंधंगे वरथ मछ जोए य। झावणिवयावणेसु अ तिछिविहाणे अ उज्जोए ॥१४७॥
पटह (होल) भेरी बंग्न बीणा झछरी विगेरे वानींत्रों छे तथा पितपा (पुतळीओ) थांभला, वारणा, तेनी भाखा विगेरे काष्ट कर्म छे. तथा पालक (वालाईची) पिपंस (रायण) पांदडां दमनक कंद नोशीर देवदारु विगेरे सुगंधीनां अंग छे. तथा झाडनी छालना कपडां, तथा रुना 'वस्रों छे. तथा नव पालीका बहुल चंवक पुत्राग अश्वोक, पालित, विविक्षिल विगेरेनी मालाओ वने छे; तथा ला-कडां वालवां, ते बळतण छे. तथा ठंड दूर करना ताप करनो ते छे. तल; अलसी, सर्भव, इंग्नुदी, ज्योतीपमती करंज विगेरेनां तेल छे. तथा दीवट, पास, चूडा, (बोपां) लाकडानी मसाल विगेरेथी उपोत (प्रकाश) कराय छे. आ वर्षा कार्योगां वनस्पतिकायनो उपभोग थाप छे, आ बतावीने हवे उपसंहार करे छे.

एएहिं कारणेहिं हिंसंति वणस्सई घहू जीवे । सायं गवेसमाणा परस्स दुकलं उदोरंति ॥१४८॥

चपरनी वे गाथामां वतावेला कारणोथी ज्ञाता सुखने बांछनारा मनुष्यो प्रत्येक तथा साधारणवनस्पितकायना धणा जीवोनो
समारंभ करीने वनस्पित विगेरे एकेन्द्रियादि जीवोने दुःख उत्पन्न करे छे; हवे शल बतावे छे द्रव्य अने भाव एम वे भेदे छे;
अने द्रव्य शल छे ते पण विभाग तथा समास एम वे भेदे छे; तेमां, समास शल बतावे छे.

कप्पणिकुहाणिअसियगदत्तियकुद्दालवासि परसू अ। सत्थं वणस्सईए, हत्था पाथा मुहं अग्गी ॥१४९॥

जेनाथी छेदाय, ते कत्यंनी (कतरणी), कोहाड़ी; असियग (दातरड़ें) दात्रिका (नातुं दातरड़ें) कोदाडी, वांसलो, परश्च फरशी ए वनस्पति छेदवानां शस्त्रों छे, अने हाथ पग विगेरे तथा अग्नि ए सामान्य छे. हवे विभाग शस्त्रों कहे छे, किंची सकायस्तरथं किंची परकाय तदुभयं किंचि। एयं तु दबसत्थं भाचे य असंजमो सरथं ॥१५०॥ लाकडी विगेरे कोइ स्वकाय द्रव्य शस्त्र छे. पाषाण अग्नि विगेरे कोइ परकाय शस्त्र छे तथा दातरडी कोहाडो विगेरे जे हाथा-वाळां ते उभय श्रस्त छे. आ द्रव्य शक्ष जाणवां अने मन वचन कायाथी खराव वर्तन असंपमरूप भावशस्त्र छे. इवे आ वधी निर्युक्तिनो अर्थ समाप्त करवा कहे छे.

सेसाइं दाराई ताइं जाइं हवंति पुढवीए। एवं वणस्सईए निज्जुत्ती कित्तिया एसा ॥१५१॥ इवे जे द्वारों कहेवां बाकी रह्यां ते वर्षा पृथिवीकायमां कहेळां छे, ते जाणी छेवां, तेथी द्वारोना कहेवाथी वनस्पतिकायमां 🥻 निर्युक्तिओ बतावेली जाणबी.

हवे सुत्र अनुगममां अस्विछित विगेरे गुणोवाछ सुत्र भणवुं (उच्चारण करवुं) जोइए ते कहे छे.

तं णो करिस्सामि समुद्वाए, मत्ता मइमं, अभयं विदित्ता, तं जे णो करए, एसोवरए, एत्थोवरए, एस अणगारेति पवुचई (सू. ३९)

स्त्रम्

आ सूत्रनो ३८मां सूत्र साथे तथा पहेला विगेरे सूत्रो साथे प्रथम कहा सुनव संबंध कहेवो, पूर्वे कहा के शाता (सुल)ना वांछको बनस्पति जंतने निश्चमे दुःख उत्पन्न करे छे. तेथी तेतुं मूळन (कर्मवंध पणे थड़ने) दुःख्यी गहन एवा संसारसागरमां जीवोने भमाडे छे, एवं कडवुं फळ नाणनारो बन्ना बनस्पतिकायना जीवोने दुःख देवानी रीतीथी सर्वथा निद्वत्त (रूर) थवानुं
आत्मामां इच्छे छे. ते बतावे छे. वनस्पतिकायने थती पीडाने जाणीने हु हवेथी दुःख नही दृदं, अथवा ते वनस्पति दुःख देवाना
कारण रूप जे छेदन भेदन छे, तेने मन, वचन, कायाथी नही करं, न कराबुं, करनारने भलो न जाणीश हवे केवी रीते करीश,

सर्विद्रे बतावेळा मार्गने अनुसरीने सम्यग् दिक्षाना मार्गने स्वीकारीने वधा पापना आरंभोनो त्याग करतो थको, वनस्पतिने दुःस्त थाय, तेवां आरंभ नहीं करीका. आथी संयम क्रिया बताबी, पथी एम म्वच्युं के एकली क्रियाधीन मोक्ष थाय, एम नहीं पण ज्ञाने जाणबुं, तथा क्रिया ते ममाणे करवी, ए वे प्रकारे मोक्ष मळे छे; क्रबुं छे के—

नाणं किरियारहियं, किरियामेत्तं च दोऽविष्गंता । न समस्था दाउं जे जम्ममरणदुक्खदाहाइं ॥ १ ॥ किया रहित एकछं ज्ञान, अथवा ज्ञान रहित एकठी किया, ए वन्ने एकठा होय तो जन्ममरणना दुःखोने छेदवा (मोक्ष आ-पवा) समर्थ नथी.(पण बन्ने साथे मळे ताज मोक्ष मळे छे.)

जेथी मोक्ष मेळववामां विशिष्ट कारणभूत ज्ञानज बताववा कहे हो. जीवोने यथायोग्य मानी (जाणी शुं करे) ते कहे हो.

For Private and Personal Use Only

अश्वाि वृद्धिमान ते उपदेशने योग्य छे तेवा शिष्यने गुरु कहे छे के हे बुद्धिमान ग्रुशिष्य, दिशा लड़ने जीवादि पदार्थोंने जाणीने मोक्ष प्राप्त करे छे ते प्रमाणे तुं पण ज्ञान भणीने चारित्र पाळीने मोक्ष मेळव, कारण के सम्यक्ज्ञान पूर्वक करेली क्रिया सफळ (मोक्ष आपनारी) छे. करी अहीं कहे छे जेमां जीवांने अभय (भय विनातुं) पद छे. ते अभयरूप संयम सत्तर भेदवाळो छे. ते सर्व भूतनी रक्षा करनार संसारसागरथी तारनार निर्वाहक जाणीने (दरेक पुरुषे) वनस्पतिना आरंभथी निष्टत्ति छेवी (दूर रहेवुं) जोइए तेज हे हे विवरीने वतावे छे.

जे परामर्थ तत्वने जाणनार छे, तेणे वनस्पितना आरंभने कड़वां फळ आपनारो जाणीने न करवो, कारण के जे आरंभ न करे, तेनेज मितविशिष्ट इष्ट फळ'(मोक्ष)नी प्राप्ति छे. पण जे विना विचारे मृद्ध थई अंध वनीने वर्ते, तेने मोन्न प्राप्ति नथी, कारणके इच्छेला सर्वोत्तम स्थाने पहोंचवामां मवर्तेलो अंधो जे क्रिया करे, ते क्रिया तेना अंधपणाथी विद्नरूप (उल्डेट रस्ते दोरे) ले, एम मानबुं तेवीरीते एक छं ड्रान पण क्रिया विना मोक्ष न आपे. जेमके एक घरमां आग लागी, त्यारे एक पंगु देखावा छतां पांगळा पणाने लीधे नीकळवानी इच्छा छतां नीकळी न शक्यो, तेज ममाणे मुनिओए समजवुं के आ ममाणे बोध पामीने तेमणे आरंभ नो त्याग करवो, ए ममाणे जे सम्यवद्वानपूर्वक जे निष्टिच चारित्र अनुष्ठान करे तेज समस्त आरंभधी निष्टच थयेल छे, एम वन्ते छे. " तेज वनस्पित संबंधी मुक्त शयेला छे जेओ पूर्वे वरावर जाणी आरंभ न करे," इवे ते आ ममाणे निष्टिच लेनार साधुओ शाक्यादिमां पण छे के नहीं? के अिंह जीन शासनमांज छे? ते शिष्यना प्रश्नमां उत्तर कहे छे.

जे ग्रुणे से आवहे, जे आवहे से ग्रुणे (सू० ४०)

जे अब्दादि गुण (रस) ते आवर्त छे जेगां जीवो परिश्रमण करे छे. ते संसार पोते आवर्त छे. अहीं मुख्य कारणनेज

आचा०

अभिके 'नहुँछ' (गंदुं) पाणी पगनो रोम छे तेम गायन विगेरेनो रस ते संसारतुं केरण होवाथी ते संसार हें हुं सूत्रमां एक वचन होवाथी एम स्चच्छुं के जे पुरुप गायन वाजींत्र विगेरेनो रसीओ थाय, ते आवर्तमां पढे छे, अने जे आवर्त (संसार) मां पढे छे, ते शब्दादिनो रसीयो थाय छे, अहीं उद्यत चंचु (वाचाल) पूछे छे के मयोग आम करवो, के जे गुणमां वर्ते ते आ वर्तमां वर्ते पण जे आवर्तमां वर्ते ते गुणमां वर्ते जे एवा यांद्र नियम नथी, कारण के साधुओ आवर्तमां छे, पण गुणोमां नथी तेनुं केम? आचार्य कहे छे तमारू कहे छे अवर्तमां यित (साधुओ) रहे छे पण तेओ गुणो(गायन) मां मवर्तता नथी, पण राग हेप पूर्वक गुणोमां जे वर्ते, ते अहीं छेवा; अने साधुओने तेनो अभाव होवाथी न होय अने तेमने संसाररूप आवर्त दु:ल न होय, पण सामान्यथी संसारमां पड्चुं, अने सामान्य शब्दों विगेरे गुणो पाप्त थवा संगचे छे. तेथी उपलब्धिनो निषेध हैं, तेमज कहुं छे.

"कण्णसोक्खेहिं सदेहिं पेम्मं नाभिनिवेसए" (विगेरे सूत्र छे.)

वानने मुख आपनार शब्दोमां (साधु) मेम न करे विगेरे तथा.

कानने मुख आपनार शब्दोमां (साधु) मेम न करे विगेरे तथा.

न शक्यं रूपमद्रष्टुं, चक्षुर्भोचरमागतम् । रागद्वेषा तु यो तत्र. तो बुधांः परिवर्जयेत् ॥ १ ॥

चक्षु आगळ आवेलुं रूप न जोनाय ए शक्य नथी एण पंडित पुरुषे त्यां जे राग द्वेष थाय ते त्यजवा जोइए गुणोनुं वधारे पू

पणुं वनस्पतिथी केवीरीते छे ते बताबे छे. वेणु, वीणा, पटह, मुकुंद, विगेरे जे जे वाजीवो छे ते वथानी वनस्पतिथी उत्पत्ति

छे तेनाथी मनोहरे शब्द नीकळे छे तथी वनस्पतिनुं प्रयानपणुं तेमां बताव्युंछे बीजी रीते विचारीए तो तंत्री चर्म पाणी विगेरेनां संयोगधी पण शब्द उत्पन्न थाय छे अने रुपमां लाकडानी 'पूतळीओ, तथा घरनां तोरणो, वेदिका, स्तंभ' विगेरेमां पण रमणीयपणुं आंखने छे. अने गंथमां कपुर पाटला लवली लविंग, केतकी सरस चंदन, अग्रुरु, कककोल काइला फळ जाति फळ, पत्रिका, के सरा, मांसी, छाल, पत्र विगेरेनी सुगंथी इन्द्रियोने आनंद आपनार थाय छे. अने बिस मृणाल, मूळ, कंद, पुण्य, फळ, पत्र, कंटक, मंजरी, छाल, अंकुर, कुंपळ, अरविंद (कमळ), ना केसरा विगेरेनो रस जीभ इन्द्रियने चहु आनंद आपे छे ते रसो घणी जातना (दाडमनां सरवत विगेरे पत्यक्ष) छे. तथा पिंचनी पत्र, कमळनुं दळ, मृणाल, बल्कल दुकुल; शाटक, (साडी) ओशीकां तळाइना अंक्टांदि गुणोमां जे वर्ते ते संसारमां भमे अने जे आवर्तमां स्वत आपे छे. ए प्रमाणे उपर कहेली वनस्पतिथी वनेली वस्तुना शब्दादि गुणोमां जे वर्ते ते संसारमां भमे अने जे आवर्तमां वर्ते ते रागद्वेष्यपणे वर्तवाथी गूणोमां वर्ते छे. एम जाणवुं ते आवर्तनाम स्थापना विगेरेथी चारभेदवाळो छे नामस्थापना सुगम छे. द्रन्यावर्च ते (१) स्वामित्व (२) करण (३) अधिकरण ए वणमां यथा संभव योजवी, नदी विगेरेना स्वामीपणामां कोइ जंग्याए जळनुं परिश्रमण (गोळाकारे फरवुं) थाय ते द्रव्यावर्त, जाणवुं, अथवा इंस कारंड चक्रवाक विगेरे पश्ची आकाशमां कीडा करतां चक्राकारे फरे ते बन्ने स्वामित्वमां द्रव्योनुं आवर्ष जाणवुं, इव करण वि आश्रयी कहे छे. ते भमताज जलवडे जे तुण कर्लिंच विगेरे भने ते द्रव्यावर्त जाणवुं. तथा तरवुं सीसुं, लोडुं चांदी, सोनुं, गाळतां है गाळवानां वासणमां गोळाकारे भगे,ते करण, द्रव्यावर्त्त जाणवुं' अधिकरणनी विवसामां एक जल द्रव्यमां आवर्त छे. अने चांदी हैं सोचुं, रेतिका. तरवुं. सीमुं एकटा करतां घणां द्रव्योमां आवर्त छे. भावआवर्त नामने एक भावथी बीजा भावमां आवर्त धवुं

अथवा औदियिकभावना उदयंथी नरकादि चार गितमां जीव भमे छे ते जाणवुं उपर कहेंछा वथा आवर्तमां फक्त भाव आवर्तथी प्रयोजन छे. वीजाथी नथी, हवे ए शब्दादि गुणो संसारना आवर्तमां कारणभूत छे, अने वनस्पतिथी कारण ग्रुख्यपणे पनेष्ठां छे, ते केप ? कोइ अग्रुक नियत दिशाना भागमां वर्ते छे के वथी दिशामां वर्ते छे ? ते कहे छे.
उद्हं अहं तिरियं पाईणं पासमाणे रूवाइं पासित, सुणमाणे सद्दाइं सुणेति उद्हं अहं पाईणं

मुच्चमाणे रूबेसु मुच्छति सहेसु आवि (सृ. ४१)

कहेनारनी दिशाने अंगीकार करवाथी उंची दिशामां रहेला रूप गुणो ने महेलोना मथाळामां तथा हवेलीओ (सारी जोइने) कहनारना दिशान अगाकार फरवाथा उचा दिशामा रहला रूप गुणा ने पहेलाना पथाळामां तथा हवेलीआ (सारी जाइन) उंचे (दरेक जन जुए छे; तथा पहाडना शिखरे चडेलो अथवा महेल उपर चडेलो नांचे रहेलां रूपो (वस्तुओ) जुए छे, अहीं अथा शब्दथी नींचेनी दिशा जाणवी अने घरनी भींतो वगेरेमां रहेलां रूपो तिर्वक शब्दथी चार दिशा तथा चार खुणा लेवां ते आ माणे पूर्व विगेरे दिशामां देखातो चक्षुना ज्ञानमां परिणत थइने चक्षुमां आत्रीने रहेलां पोते देखे छे; (भथम आंखमां मितिविंव पडे, त्यार पछी वस्तुनो निश्चय थाय छे) तथा उपर कहेली दिशाओमा सांभळतो सांभळ छे, अर्थात् कान दइने लक्ष्य आपेतोज वर्षो रावर संभळाइने समजाय छे; अहीं उपलब्धियी ज्ञान मात्र लीधुं. पण सांभळवाथीज के देखवाथीन संसार भ्रमण नथी, पण कदा- चित् हप विगेरेमां मूर्जा करे तो एने कर्म बंध छे. एवं बतावे छे, उर्ध्व (उंची) विगेरे दिशाओमां हप देखी रागना परिणाम करे, तथा ते प्रमाणे शब्दोमां तथा गंध रस स्पर्शमां रागना परिणाम करे तो, तेने वंध थाय छे. सूत्रमां फरी उर्ध्व लेवानुं ए कारण छे

के, त्यां सारुं रुप देखीने रागी बने छे. अने रुप छेबाधी बीजा पण विषयोनो समावेश थाय छे. कारण के एकना प्रहणशी कि तेनी जातीना वशाए छेवाय छे, अथवा पहेलो तथा छेछो, छेवाथी बचमांना आबी जाय एम जाणबुं. ए प्रमाणे विषय लोकने बताबी विवक्षित कहे छे.

एस लोए नियाहिए, एरथ अगुत्ते अणाणाए (सृ. ४२)
आ-रूप रस, गंध, स्पर्ध शन्द, निषय नामनो लोक कहाँ। जेनाथी अवलोकाय ते लोक. आ वस्तुतः शन्दादि गुण लोकमां जे पुरुष मन. वचन, कायाथी अगुप्त होय अथवा मनथोद्देषी थाय, अथवा वाचावढे शब्दादिनी मार्थना करे अथवा काय वढे शब्दादिना विषय भौगमां नाय. ए प्रमाणे जे अगुष्त होय ते भगवाननी आज्ञामां वर्ततो नथी. ए प्रमाणे गुण श्हं करें ! ते कहे छे.

पुणो पुणो गुणासाए, वंकसमायारे (सृ. ४३)

जे अनेक बार श्र⁴दादि शुणनो रागी बन्यो होय, ते योताना आत्माने शब्दादि विषयनी गृद्धियी द्र करवाने समर्थ थतो है। नयी, अने पाछो न फरवायी फरी फरी गुणनो स्वादु बने छे. निरंतर क्रिया फरीने रसोनो स्वाद छे छे; अने ते जेवो थाय तेवो बतावे छे. आ ''वक्र'' ते असंयम छे, तेज नरकादि गतिमां छइ जाय छे. अने एवा आवरणने करनारो जे छे, ते वक्र समाचारवाळो (संयम रहित) अवश्यज श्रन्दादि विषयोनो रसिक बने छे. अने जीवोने दुःख देनार होवायी ते वक्र समाचारवाळो जाणनो.

1130511

1166631

अितसारना रोगथी बुरे हाले मुओ, तेम ते पण बुरे हाले मरे हो, (पण स्वादने छोडतो नथी) ए प्रमाणे आ विषय रसमां पकान्त हारेलों ते शब्दादि विषयनो स्वाद करवाथी 'खंत पुत्तोव्व' आ प्रमाणे आचरे हो.

पमनेऽगारमावसे (सू. ४४)

विषय विषयां मूर्छा पामेलो, प्रमादि साधु गृहस्य बने छे, जे साधुनुं लिंग राखे अने शब्दादि विषयनो प्रमादि थाय, ते पण विर्विस्य भाव लिंग रहित होवाथी. ते पण गृहस्थन छे. अन्य तीर्थीओमां हमेशां बोलवानुं जुदुं अने करवानुं जुदुं एय छे ते बतावे छे. लिंस्प भाव लिंग रहित होवाथी. ते पण गृहस्थन छे. अन्य तीर्थीओमां हमेशां बोलवानुं जुदुं अने करवानुं जुदुं एय छे ते बतावे छे. लिंस्प माणा पुढो पास, अणगारा मोत्ति एगे पवदमाणा जिमणं विरूविस्वेहिं सत्थेहिं वणस्सइक-मस्समारंभेणं वणस्सइस्तरंथं सरारभमाणा अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसंति, तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता, इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूर्यणाए जातीमरण मोयणाए दुक्खपि हिंघायहेउं, से सयमेय वणस्सइसरथं समारंभइ, अण्णेहिं वा वणस्सइसरथं समारंभावेइ अण्णे वा वणस्सइसरथं समारभमाणे समणुजाणइ, तं से अहियाए तं से अबोहिए से तं संबुज्झमाणे अया-

सूत्रम् ॥१७७॥

1120511

णीयं समुद्वाए सोचा भगवओ अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति-एस खळु गंथे एस खलु मोहे, एस खलु मारे एस खलु णरए इचरथं गड़िवए लोए, जिमणं विरूपरूवेहिं सरथेहिं वणस्सइकम्मसमारंभेणं, वणस्सइसत्थं सभारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसंति (सू. ४५) अग्निकायमां अर्थ वताच्यो छे. ते प्रमाणे अहीं पण जाणवो. विशेष अग्निने बदछे वनस्पतिकायनो आरंभ करनार पोते वनस्पतिना जीवो इणवानी साथे तेमां आश्रय करेला बीजा जीवोने पण इणे छे. अने ते छेवटे नरकमां छे. माटे उत्तम साधु-तेनो समारंभ करता नथी तेम करावता नथी अने करताने भलो जाणता नथी, इवे वनस्पतिकायनुं जीवपणुं सिद्ध करवा निन्द बतावे छे. से बेमि इमंपि जाइधम्मयं, एयंपि जाइधम्मयं इमंपि बुड्डिधम्मयं, ऐयंपि बुड्डिधम्मयं इमंपि चित्तमंतयं एयंपि चित्तमंतयं, इमंपि छिण्णं मिलाइ एयंपि छिण्णं मिलाइ, इमंपि आहारगं

एयंदि आहारगं इमंपि अणिचयं एयंदि अणिचयं इमंपि असासयं, एयंपि असासयं, इमंपि चओ-

वचयं, एयंपि चओवचइयं इमंपि विपरिणामधम्मयं एयंपि विपरिणामधम्मयं, (सू. ४६)

ते हुं जिनेष्वर पासे तत्व जाणीने कहुं छुं, अथवा वनस्पतिनुं चैतन्य जे मत्यक्ष मगाणथी जणाय छे ते हुं कहुं छुं, जेवी

1120911

मितिज्ञा करी ते प्रमाणे बतावे छे, अहिंआं उपदेशने योग्य सूत्रनो आरंभ छे. अने तेने कहेवा योग्य पुरुष होय छे. तेना पासे रहेवापणाथी ते श्वरीर पत्यक्ष आसन्न वाचीं 'इदम्' (गुजरातिमां 'आ') श्वन्दवढे साधु विचार करे छे. आपणुं आ मनुष्य श्वरीर जनन (जन्म) ना धर्मवाळुं छे. अने वनस्पतिनुं शरीर पण ते स्वभाववाळुं छे. अहिआ 'इति' शन्द सहित 'अपि' शन्द छे,

ते दरेक जग्याए 'यथा' शब्दना अर्थमां छे, अने बीजो 'अपि' शब्द समुच्चयना अर्थमां छे तेनो अर्थ आ पमाणे छे. जैम मनुष्यनुं शरीर बाळ, कुमार. जुबान, तथा भुद्रापणाना विशेष परिणामवाछं छे, तथा चेतनावाछुं एटले जीवयी सदा अधिष्ठित छे, कारण के तेनी चेतना स्पष्ट देखाय छे. ते प्रमाणे आ वनस्पतिनुं शरीर पण छे कारण के जन्म पामेलुं, केतकीनुं झाड बाळक युवा अने बृद्धी संहत (युक्त) छे. आ सरखापणाथी जन्मना धर्मवाछं छे बन्नेमां बंद विशेष भेद नथी, के जेनाथी जातिथर्म पणुं छतां पण मनुष्य विगेरे शरीर सचेतन होय अने बनस्पति शरीर तेवुं नहीं.

नादीनो प्रश्न—जाति धर्मपणुं बाळ, नख, दांत विगेरेमां पण छे अने तेथी तमारुं छक्षण व्यभिचारवाळुं पणुं अने लक्षण अव्यभिचारी जोइए तेथी जाति धर्मपणुं जीव छिंग छे ए तमारी कल्पना अयुक्त छे.

उत्तर-जनन मात्र सत्य छे. पण मनुष्य वारीरमां प्रसिद्ध एवी बाळ कुमार विगेरे अवस्थापणुं छे तेनो केश्व विगेरेमां असंभव छे. माटे तमारुं कहेबुं अयुक्त छे. वळी केश अने नस्त चेतनावाळाथी अधिष्टित श्वरीरमां उत्पन्न थाय छे, तेबुं कहेबाय छे, अने तेज प्रमाणे वधे छे, पण चेतनावाळाने आधारे रही झाडो विगेरे उगे छे, तेबुं तुं पण इच्छतो नथी, कारण के तारा मत प्रमाणे

CONTRACTOR IN

अाचा०
शास्त्रावा
शास्त्राव
शास्त्रव
शास्त

गरटरेश

अचेतनोने आ आहारपणुं क्यांय देखेलं नथी, तेथी वनस्पतिमां सचेतनपणुं छे. तथा मनुष्य श्रीर अनित्य छे, हंमेश रहेनारं नथी, ते प्रमाणे आ वनस्पितशरीर एण नियत आयुष्यवाळं अन्तिय छे, ते वनस्पितनुं उत्कृष्ट आयु दशहजारवर्षनुं छे, तथा आ मनुष्य श्रीर क्षणे क्षणे 'आवीची' मरण बढे अशाश्वत छे, तेम वनस्पितनुं श्रीर एण छे, तथा मनुष्यनुं श्रीर जेम इष्ट अनिष्ट आहार विगेरेनी पाष्तिथी जाड पातळं थाय छे, तेम वनस्पित एण छे, तथा आमनुष्य श्रीर तेवा तेवा रोगोना संपर्कथी विविध पित्र प्रवादी प्रति प्रति विषयि विशेष परिणाम विशेष परिणाम विशेष परिणामवाळा याय छे ते ध-प्रवादी, फुल फळ, विगेरेना उपचयथी विशेष परिणाम वर्मवाळे छे. आ प्रवणे बतावेला वर्म समूहना सद्भावथी तरुओ सचेतन छे. एम जाणबुं. एवं शिष्यने गुरु कहे छे- ए प्रमाणे वनस्पति चैतन्यने बतावीने तेना आरंभमां बंध छे तेनो त्यागरुप विर्ति से-ववाथी मुनीपणुं प्रतिपादन करीने तेनो उपसंहार करवा कहे छे.

एत्थ सत्थं समारभमाणस्स इचेते आरंभा अपरिण्णाता भवंति, एत्थ सत्थं असमारभमाणस्स इचेते आरंभा परिण्णाया भवंति, तं परिण्णाय मेहावी णेव सग्रं वणस्सइसरथं समारंभेजा णेवण्णेहिं वण-स्सइसरथं समारंभावेजा णेवण्णे वणस्सइसरथं समारंभंते समणुजाणेजा, जस्सेते वणस्सतिसस्थस-

आ वनस्पतिकायमां द्रव्य तथा भाव वेड भेदथी शल्लनो आरंग करनाराओने आ शल्लना आरंभमां पाप छे, एम खबर न होवाथी प्रत्याख्यान परिज्ञावहे तेओनो त्याग करता नथी, अने जे आरंभ नथी करता तेओने आरंभ करवामां पाप छे, एम खबर है होवाथी प्रत्याख्यान परिज्ञावहे तेनो त्याग करे छे. अने जेओ आ वनस्पति शल्लना आरंभनो त्याग करे छे, तेज ग्रुनि परिज्ञात क्षेत्र कर्मा कहेवाय छे. ए वधुं पूर्व माफक जागां एवं ग्रुथमीस्वामी कहे छे. मारंभा परिण्णाया भवंति से हु मुणी परिण्णायकम्मे (सु०४७) ति वेमि ॥ पश्चम उदेशकः समाप्तः॥

॥ शक्षपरिकाअध्ययनमां मांचपां उद्देशानी टीका समाप्त थई ॥

हवे पांचमा उदेशो बताबी छठा उदेशानो अरंभ करे छे. आ छठा उद्देशानो पांचमा साथे जे संबंध छे ते बतावे छे. पांचमामां चनस्पतिकायमुं वर्णन कर्युं त्यारपछी छद्दामां त्रसकायना उद्देशामुं वर्णन आवेखं होवाथी तेमुं स्वरूप बरावर ओ- 🥂 ळखवाने आ त्रसकायनो उदेशो शरु करे छे. तेनां उपक्रमादि चार अनुयोग द्वारो छे. ते पूर्व माफक कहेवां. ज्यां सुधी नाम नि-प्यक्रनिक्षेपामां त्रसकायनो उदेशो आवे त्यां सुधी छेतुं अने नामनिष्यत्रनिक्षेपामां त्रसकायनो उदेशो ए प्रमाणे नाम राखदुं हैं तेने नामनिष्यत्रनिक्षेपो जाणवो. त्रसकायनां पूर्वे कहेछां द्वारोनो क्रमथी अतिदेश करवा अने तेनाथी यहंक जुरां छक्षणवाछं द्वारोतं वर्णन करवा माटे निर्युक्तिकार गाथा कहे छे.

तसकाए दाराइं ताइंजाइं हवंति पुढवीए । नाणत्ती उ विहाणे परिमाणुवभोगसत्थे य ॥ १५२ ॥

জাৰা6

用する判別

जे त्रास पामे ते त्रस कहेवाय तेओनुं द्वारीर ते त्रसकाय, तेना द्वारों जे पृथिवीकायमां कह्यां तेन प्रमाणे छे. पण विधान परिमाण उपभोग, श्रस्त, अने उक्षण ते द्वारोमां कंइक फेर छे. अहिं निर्धुक्तिमां 'च' शब्द ग्रहण करेलो होवाथी उक्षणद्वार छीधुं हो, तेमांथी प्रथम विधानद्वार कहे छे.

छ। तमाया पर्यम विधानद्वार कह छ. दुविहा खलु तस जीवा लिखितसा चेव गइतसा चेव । लखीय तेउवाऊ, तेणऽहिगारो इहं नित्थ ॥१५३॥ त्रम जीवो वे प्रकारना छे. हाले वाले ते त्रस कहेवाय अने जीववाधी एटले प्राणने पारी राखवाथी जीव छे, हवे ते त्रस जीवो वे प्रकारे छे (१) लब्धि त्रस (२) गित त्रस, लब्धित्रस तेजस्कायत्रस तथा वायुत्रस एम वे प्रकारे छे. लब्धि ते शक्ति मात्र छे, तेजस्कायत्रसनुं वर्णन तेजस्कायना उद्देशामां आवी गयुं छे अने वायुत्रसनुं वर्णन वायुना उद्देशामां आवशे, तेथी लब्धित्रसनी अहिं व्यारे जरुर नथी, तेने छोडीने गितित्रसनुं वर्णन करे छे. ते केटला छे अने तेना भेद क्या छे ते बतावे छे.

नेरइयतिरिय मणुया, सुराय गइओ चउिवहा चेव। पज्जताऽपज्जता नेरइयाईय अ नायवा ॥१५४॥
नारक एटले रत्नप्रभाथी आरंभीने महातम पृथिवी पर्यत जे नरकमां रहेनारा जीवो छे; तेना सात भेद छे. तथा द्विइन्द्रिय
जण इन्द्रिय, चार इन्द्रिय, तथा पंचेन्द्रियवाला पशु पक्षी तथा तीरलुं चालनार प्राणी विगेरे तिर्यंच कहेनाय अने मळमूत्रमां
उत्पन्न यनारा तथा गर्भमां उत्पन्न यनारा ते मनुष्य छे, भवनपति, ब्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक ते सुर छे, आ गति जस
कहेवाय छे. अने ते चार प्रकारे छे. नाम कर्मनो उदय थवाथी प्राप्त करेल गतिने मेळववाथी ते गति त्रस कहेवाय. आ नरकादि

सूत्रम् ॥१८३॥

आचा०

शिरुष्ठा।

जीवो वर्याप्ता, अने अपर्याप्ता एम व प्रकारे जाणवा, तेमां पर्याप्ति छ मकारे छे ते पूर्वे कही गया छीए; ते बढे वथायोग्य तैयार ये येछा ते वर्याप्ता, अने तेनाथी जे विवरीत ते अपर्याप्ता; अने ते अंतमूहर्तकाळसुथी अपर्याप्ता जाणवा. हवे बीजा उत्तर मेदो कहे छे.

तिविहा तिविहा जोणी, अंडापोअअजराउआ चेव । बेइंदिय तेइंदिय, चउरो पंचिंदिया, चेव ॥१५५॥ दारं अर्ह शीत, उप्ण अने शीतोष्ण तथा सचित अचित अने मिश्र तथा संद्रत विवत तथा मिश्र तथा स्त्री पुरुष अने नयुंसक एम जण मेदथी जण जम प्रीमां जोडका पणा छे. ते बधानो संग्रह करवाने माटे गाथामां वे बखत तिबहा लीखुं तेमां नरक जीवोनी पहेली जण भूमिमां शीत योनि छे, अने वोथीमां उपर श्लीत नीचे उप्ण छे, त्यारपञ्चीनी शण भूमिमां उप्ण योनि छे पण मिश्र अथवा शीत नथी गर्भेयी जन्म पामनारा तिर्थेच तथा ममुष्योनी अने वथा देवोनी शीत उप्पा अने पिश्र एम जण मका-त्री योनि छे. नारक अने देवोनी एक अचित्र योनि छे. सचित्र तथा मिश्र होती नथी. वे इन्द्रियादि संमूर्छन पंचेन्द्रिय तिर्थेच ममुष्यनी सिचल अचित्र, अने मिश्र एम जण मकारे योनी छे. गर्भथी जन्मेछां तिर्थेच तथा ममुष्यनी मिश्रयोनि समजवी तथा ममुष्यनी संद्रत तथा, देवनी संद्रत योनि छे. पण असंद्रत तथा मिश्र नहिं, वे जण बार इन्द्रियाळा तथा संमूर्छन पंचेन्द्रिय तथा ममुष्यनी विवत योनि छे, पण बीजी नथी, गर्भ न्युत्कान्तिक तिर्थेच तथा ममुष्यनी संद्रत विवत योनि छे. एटछे मिश्र योनि समजवी पण संद्रत तथा विवत नहिं, नारकी जीवो केवळ नयुंसक योनिवाळा छे तिर्थेचो स्त्री पुरुष तथा नयुंसक एम त्रणे योनिवाळा छे.

अभिकार के देवोमां श्ली तथा पुरुष एम बेज योनि छे, तथा मनुष्य योनी बीजीरीते त्रण मकारनी छे. ते आ प्रमणे(१) क्र्मोन्नता, तेमां अर्हत्(तीर्थंकर) चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (२) शंखावर्ता, ते चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (२) शंखावर्ता, ते चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (२) शंखावर्ता, ते चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (२) शंखावर्ता, ते चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (२) शंखावर्ता, ते चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (३) शंखावर्ती, ते चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (३) शंखावर्ती, ते चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (३) शंखावर्ती, ते चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (३) शंखावर्ती, ते चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (३) शंखावर्ती, ते चक्रवर्ती, विगेरे सारा माणसोनीज उत्पत्ति थाय छे. (३) शंखावर्ती, ते चक्रवर्ती, विगेरे पोतज छे अने सारा पाय भीमा के पाय पाय विगेरे पोतज छे अने सारा माणसोनीज उत्पत्ति छे. अप प्रमाणे मिल असो वे चक्रत, चार, पांच इन्द्रियोना भेदवाळा छे; आ प्रमाणे सारा पाय भीमां कर्यो छे, ते चतावे छे.

पुढविद्गअगिमास्यपत्तेयनिओयजीवजोणीणं । सत्तग सत्तग सत्तग सत्तग दल चोइस य लक्ला ॥१॥ विगार्हिदिएसु दो दो चउरो चउरो य नारयसुरेसु । तिरियाण होति चउरो चोइस मणुआण लक्खाइं ॥२॥

सातलाख पृथिवीकाय योनि, सातलाख जलकाय योनि, सातलाख अग्निकाय; सातलाख पवन, दश्वलाख पत्मेक वनस्पति अने चौदलाख साधारणवनस्पतिकायनी योनि छे. ॥ १ ॥ विकलेन्द्रिय (वे, त्रण, चार इन्द्रियनाळा) नी बब्बे लाख योनि छे चार लाख नारकीनी तथा चार लाख देवयोनि छे, चार साख तिर्धेच पंचेद्रिनी अने चौद लाख मनुष्पनी योनि छे. एवीरीते वधी मळीने चोर्याशी लाख योनि जीवोनी थाय छे; इवे कुलनां परिमाण कहे छे. सूत्रम्

For Private and Personal Use Only

अाचा०

शिक्षा के कुलकोडिसयसहस्सा वत्तीसदृहनव य पणवीसा। ऐगिदियावितिइंदियचउरिंदियहरियकायाण ॥१॥

अद्धत्तरस बारस दस दउ नव चेव कोडिलक्खाइं। जलपरपिक्खचउप्पयउरभुयपिस्सिप्पजीवाणं ॥२॥

पणवीसं छव्वीसं च सयसहस्साइं नारयसुराणं। बारस य सयसहस्सा कुलकोडोणं मणुस्साणं॥३॥

एगा कोडाकोडी, सत्ताणउतिं च सयसहस्साईं। पंचासं च सहस्सा कुल कोडोणं मुणेयव्वा ॥ ३॥

प्रमाणे आंकडामां १९७५००००००००० थाय छे आ वथा कुलनो संग्रह छे. मरूपणा द्वार समाप्त थेयुं. हवे लक्षण

दंसणनाणचिरते चरियाचरिए अ दाणलाभे अ। उवभोगभोग वीरिय, इंदियविसए य लिद्धिय ॥१५६॥ उवओगजोगअज्झवसाणे वीसुं च लिद्ध ओदइया (णं उदइया)। अह विहोदय लेसा, सन्तुसासे कसा-

दर्शन, ते सामान्य उपलब्धि (माप्ति) रूप छे, तेमां चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधि दर्शन, अने केवळदर्शन, एम चार प्रमारे छे. ज्ञान ते मित, श्रुत, अवधि मनःपर्यय अने केवळ एम पांच मकारनुं छे, ते ज्ञान पोतानो तथा परनो परिच्छेद करनार हैं। जीवनुं परिणाम छे, ते ज्ञानावरणीयादिक वर्म जवाथी स्पष्ट तत्वनो परिच्छेद करे छे; चारित्र ते, सामायिक, छेदोपस्थापनीय,

॥१८७॥

परिहार निशुद्धि, सुक्ष्म संपराय, अने यथाख्यात एम पांच मकारे छे, चारिनाचारित्र ते श्रावकोने देशविरति स्थूछ माणातिपात विगेरेतुं निद्धित्तरप जाणतुं, तथा दान, छाभ, भोग, उपभोग, बीर्ष, श्रोत, चक्षु. नाक, जीभ, स्पर्शन, ए दश मकारनी दोष रहित जीव द्रव्योनी छिन्यओं छे ते जीवनुं लक्षण छे तथा उपयोग ते साकार अने निराकार एम ये मकारे छे साकार उपयोग आठ मकारनों, अने निराकार उपयोग चार मकारनों छे; योग ते मन, वचन, अने कायाए करीने कण मकारनों छे. मन परिणामयी अत्यव्य थयेला सूक्ष्म अध्यवसायो घणा मकारे छे 'विष्वक् (जुर्री जुर्री) छिन्यओं ने उदय थे. ते दुष सप, आसव विगेरे छिन्यओं छे तथा ज्ञानावरणीयादि कर्मथी छड़ने अंतराय सुधी आठ कर्मनो पोतानी शक्तिनुं परिमाण ते उदय छे, छेइया ते कृष्णादि मेदवडे छ मकारनी छे, ते शुभ अने अशुभ कपाय, योग, अने परिणाम, विशेषधी उत्यन्न थाय छे ते, अने संज्ञा ते आहार, भय, परिग्रह, मैथुन, एवी रीते चार मकारे छे, अथवा दश मेद पूर्वे कहेल छे अथवा क्रोधादि चार मेदे छे ते तथा आघार, भय, परिग्रह, मैथुन, एवी रीते चार मकारे छे, अथवा दश मेद पूर्वे कहेल छे अथवा क्रोधादि चार मेदे छे ते तथा आघारां, अने लोकसंज्ञा, छे अने स्थामोत्यास ते माण अने अपान छे कपाय तेने कहेवो के जे संसारनी माप्ति करावे ते क्रोधादिक अनन्तानुवंधी आदिक भेदवडे सोळ मकारनो छे ए वे गाथामां मुकेला वे इन्द्रिय विगेरे जीवोनां छक्षणो यथा संभव क्रिया एपाणे लक्षणनो समुदाय घडा विगेरेमां नथी, तेटला माटे घट विगेरेमां पंडितजनो अवैतन्यपणुं स्वीकारे छे; कहेलां क्रियाना समुहनो उपसंदार करवानी इन्छाधी अने परिमाणद्वार कहेवानी इन्छाधी निर्युक्तिकार गाथा कहे छे.

लक्खणमेवं चेव उ, पयरस्त असंखभागिमता उ । निक्खमणे य पवेसे एगाईयावि एमेव ॥ १५८ ॥

(तु शब्द पर्पाप्ति वाचक छे) वे इन्द्रियादि जीवो तुं लक्षण जे दर्शनादि फलां, तेटलांज छे अने ते परिपूर्ण छे, तेनाथी वधारे नथीः हवे परिमाण क्षेत्रथी कहे छे. जसकाय पर्याप्ता जीवोने संवर्षित लोक मतरना असंख्येय भागमां रहेनारा प्रदेश राशी परिमाण हो। (राशि जेटला) छे आ बादर तेजस्काय पर्याप्ताथी असंख्येय गुणा छे जसकाय पर्याप्ताथी असकाय अपर्याप्ता असंख्येय गुणा छे. बाळ्थी उत्पन्न थता जसकाय जीवो जधन्य स्थानमां वे लाख सागरोपमर्था नव लाख सागरोपम सुधी समयराशि परिमाण छे; जिल्हा स्थानमां पण वे लाख सागरोपमयी नवलाख सागरोपम परिणापवालाज छे तेज प्रमाणे शास्त्र कहे छे.

"पडुप्पन्नतसकाइया केवतिकालस्त निल्ले वा सिया ? गोयमा ? जहन्नपए सागरोवमसयसहस्सपुहृत्तस्त

उक्कोसपदेऽिन सागरोत्रमसयसहस्सपुहुत्तस्स"
अर्थ उपर प्रमाणेन छे. इने अडपी गाथाथी निष्क्रमण अने प्रवेश कहे छे. जघन्य परिमाणथी एक ये त्रण अथवा उत्कृष्ट परिमाणथी प्रतरना असंख्येयभाग परिमाणवाळान छे. इने अनिरहित निर्मम अने प्रवेशवडे परिमाण विशेष कहे छे.

निक्लमपवेसकालो समयाई इस्थ आवलीभागो। अंतो मुहूत्तऽविरहो उदहिसहस्साहिए दोन्नि ॥१५९॥ दारं॥ 🥻

ज्यन्य परिमाणथी अंतर रहित रहे छते, त्रसकायमां उत्पत्ति, अने निष्क्रमण, एक समये एवा वे या त्रणवार याय. उत्कृष्टथी क्रि अहिआं आवलीकानो असंख्येय भागमात्र काळ सुधी निरंतर निष्क्रम तथा प्रवेश होय, एक जीवना अंगीकास्थी ज्यारे विरह रहित

1180811

वितवना करीए, त्यारे छेल्ली अधीं गाथाथी बतावे छे. निरंतर असभावथी जीवो रहे छे कारण के एक जीव त्रस भावे जधन्यथी अंतर्ग्रहुर्त रहीने फरीथी पृथ्विकाय विगेरे एकेन्द्रियमां उत्पन्न थाय छे ते प्रकृषी बेहजार सागरोपपथी अधिक त्रस भावे निरंतर रहे छे. आ प्रमाणे प्रमाणद्वार पुरुं थयुं, हवे उपभोगद्वार, श्रस्त, वेदना ए त्रण द्वार प्रतिपादन करवाने कहे छे.

मंसाईपरिभोगो सत्थं सत्थाइयं अणेगविहं। सारीरमाणसा वेयणा य दुविहा बहुविहाय॥१६०॥ दारं॥

पांस, चामडी, वाळो; रुवां, नस्त, पीछां, नाडीओ, हाहकां, श्रीगडां, विगेरेमां त्रसकायना अंगोनो उपभोग थाय छे अने शस्त ते स्वद्ग तोमर, छरी, पाणी, अग्नि. विगेरे त्रसकायनां शस्त्र ते अनेक मकारनां छे अने ते स्वकाय, परकाय तथा पिश्र तथा द्रव्य अने भाव एम भेदथी अनेक मकारनां छे. तेनी वेदना अहिं पसंग होताथी कहेवाय छे, आ वेदना शरीरथी अने मनथी उत्पन्न थयेली संपोग विगेरेथी थाय छे. अनेक मकारना ताव, अितसार, खांसी खास भगंदर, मथानो राग, शुल, मसा विगेरेथी उत्पन्न थयेली तीव होय छे, फरीने उपभोगनो विस्तार करवानी इच्छाथी कहे छे.

मंसरस केइ अहा केइ चम्मस्स केइ रोमाणं। पिच्छाणं पुष्छाणं दंतीणऽहा वहिजाति ॥ १६१ ॥ केइ वहंति अहा, केइ अणद्दा पसंगदोसेणं । कम्मपसंगपसत्ता, बंधंति वहंति मारंति ॥ १६२ ॥

मांसने माटे हरण, सूअर, आदि मराय छे; चामडी माटे चित्राआदि मराय छे; वाळ माटे उंदर, आदि हणाय छे; पीछां माटे मारे, गीथ, किंप कर्त, उंदर विगेरे हणाय छे, पुंच्छने माटे चमरी, गायो विगेरे, दांतने माटे हाथी, सूअर, विगेरे हणाय छे ए म्मणे सर्व जगोपर संबंध छेवो. आहि केटलाको पूर्वे कहेला मयोजनने उद्देशीने हणे छे, केटलांको मयोजन विना पण रमत गमतमांज मारे छे अने केटलांको मसंग दोवथी मृगने ताकीने मारेलां वाणनी वचमां आवी गयेलां अनेक कपोत, किंप कल, पोपट, कोयल, मेना, विगेरे हणे छे तथा कर्म ते खेती विगेरे अनेक मकारनां छे ते करवामां मेरायला घणा असकायोने हणे छे, दोरही विगेरेथी मारे छे चाबुक तथा लकडी विगेरेथी ताडन करे छे, अने हणे छे, तेनो जीवथी वियोग करावे छे; आ मकारे द्वार समूह कहीने हवे बधी निर्युक्तिना अर्थना उपसंहार माटे कहे छे.

संसाइं दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। एवं तस कायंमी निज्जुत्ती कित्तिया एसा ॥ १६३॥ जे द्वारो कहां ते शिवायना जेटलां द्वारो छे ते वधां पृथिवीकायनां जेवांज समजवां अने पृथिवीकायनुं स्वरूप निर्माण करती वस्ति जे गायाओं कही छे, ते वधी निर्युक्तिओ जसकायना उद्देशामां पण कही छे, एम जाणवुं, हवे मुतानुगममां अस्लिलतादि गुणयुक्त सूत्र बोळवुं, ते आ ममाणे.

सेवेमि संतिमे तसा पाणा तंजहा-अडयापोयया जराउआ रसया संसेयया संमुच्छिमा उब्भियया उववाइया, एस संसारोत्ति पतुचई (सू. ४८)

आचा०
आचा०
आम्प्रतो अनंतरादि संबंध पूर्वमाफक जाणवो, जे में भगवानना मुख कपळमांथी नीकळेली वाणी सांभळीने अवधारण करी राखेली छे अने तेनाथी जेवीरीते तत्व प्राप्त करेलुं छे; ते कहुं छुं, हीन्द्रियादि त्रसजीवो प्राणी छे, अने ते केंद्रला प्रकारना छे, तेना भेदो बतावे छे. ते आ प्रमाणे, 'तंज्ञहा' भन्द वाक्यना उपन्यासने माटे छे, अथवा जे भगवानना मुख्यमांथी नीकळ्युं छे, तेज हुं कहुं छुं, ते बताववा माटे छे. इंडांमांथी जे उत्पन्न थाय ते अंडज पक्षीओ तथा घरोळी अंडज छे, जे 'पोत' तेज जन्मे ते पोतज. हाथी जळो विगेरे पोतज छे. अने जरायुथी विंटायला जे थाय, ते जरायुज, गाय भेंस वकरां माणसो विगेरे जरायुज छे. अमे आसामण, कांजी दुध, छाञ्च, दहिं, विगेरेमां रसथी जे उत्पन्न थाय ते रसज, येळो विगेरे अत्यंत माना जीवो रसज छे, परसेवाथो उत्पन्न थाय ते संस्वेदज छे, माकण जु ज्ञतपदिका विगेरे स्वेदज छे, संमूर्छनज ते पतंगीआ, कीडीओ, माखीओ विगेरे, संमूर्छनथी 🧏 उत्पन्न थाय ते संमूर्छन्त्र छे. उद्भेद्थी उत्पन्न थाय ते उद्भेद्न कहेवाय, पतंगीया खंजरी पारीष्ठव विगेरे उद्भीज कहेवाय है जे उपपातथी उत्पन्न थाय ते औपपातिक नारक देव विगेरे अपपातिक छे. ए प्रमाणे जेनो नेवो संभव होय तेवो आठ मकारमां संसारी जीवनो जन्म थाय छे तेज वात वीजा शास्त्रमां त्रण भकारे कहे छे के—

'संमूर्छन गर्भोपपाता जन्म' (तत्वार्थ. अ, २ सू. ३२)

समूछन गमापपाता जन्म (तात्वाया अ, र सू. ३२)

रस स्वेद उद्भिननो संमूर्छनमां समावेश धाय छे. अने अंडन पोतज अने जरायुननो गर्भजमां समावेश थइ नाय छे अने
देव नारकीयनो औपपातिकमां समावेश थइ जाय छे. तेटलामाटे टत्वार्यसूत्रकारे दुंकामां त्रणन मकारनो जन्म एम कहेलुं छे

अभिवाद अने अहिं आं आठ प्रकारे उत्तरभेद सहित बताबेल छे अने तेज आठ प्रकारना जन्मवां सर्वे संसारी त्रसजीवो समाय छे आ आठ प्रकारना जन्मवां सर्वे संसारी त्रसजीवो समाय छे आ आठ प्रकारना जन्मवां ने छे छतां पण बचा लोकमां देखाता के स्त्राम बाळक छी पुरुष विगेरे माणसोने मत्यक्ष देखाय तेवाज छे "सन्तिच" ए शब्दथी त्रसोनुं त्रणे काळमां रहेवा पणुं मसिद्ध थाय छे अर्थात् कोइ काळसंसार (जगत्) त्रसकायथी रहित रहीज शकतों नथी, तेज बतावे छे; 'एस संसारीचि पबुचित' आ अंडज विगेरे प्राणीओनो समूह छे, तेज संसार एम कहेवाय छे आम कहेवाथी त्रसकायोनो उत्पत्ति प्रकार आथी बीजो कोइ नथी एम कि वताव्युं आ आठ प्रकारना भूत समृहमां कोनी उत्पत्ति थाय छे, ते बतावे छे.

मंडस्सावियाणओ (सु. ४९)

द्रव्य अने भाव एम वे मकारे मंद छे, तेमां जे अत्यन्त स्थूछ अथवा अत्यन्त क्रश थयेला होय, ते द्रव्य मंद कहेवाय. अने जेनी बघारे बुद्धि नथी एवो बाल तथा जेनी बुद्धि कुशास्त्रो बांचवाथी मिलन थह होय ते भाव मंद कहेवाय (कारण के नठारां शास्त्रो बांचवाथी बुद्धि हणाइ जाय छे तेथी बुद्धि विनाना बालकना जेवुंज वर्तन करे छे केमके तेने सारी बुद्धि होती नथी। अहिं भावमंदनी साथे प्रयोजन छे जेने वथारे बुद्धि नथी, एवा बालने वथारे कहं खबर न पडवाथी हित काम करवा तथा अहित काम छोडवाना मधनमां तेमनुं मन सून्य होवाथी जे हमणां आपणे आठ मकानो संसार कही गया, ते तेमने, अर्थात् भाव मंदने याय छे, जो आम छे तो पछी शुं करवुं, ते कहे छे.

1156811

निज्ञाइत्ता पडिलेहिता पत्तेयं परि निट्यांणं सद्वेसिं पाणांणं सद्वेसिं भृयांणं सद्वेसिं जीयाणं सद्वेसिं स्ताणं अस्सायं अपरिनिट्यांणं महन्मयं दुवसंव त्तिबेमि, तसंति पाणा पदिसो दिसासु य (सू. ५०) आ भगाणे गोपाळ स्तीश्री आरंभीने प्रसिद्ध थयेलुं त्रसकाय बरायर चितवीने कहुं छुं. (कत्वा प्रत्यथ्यी उत्तर क्रिया बधी जगोपर योजवी) पहेलां वरायर निश्चय कराय छे अने त्यारपछी तेना पत्ये उपेक्षा [लक्ष्य] थाय छे. एम वतावे छे. 'पडिलेह त्त' ति भत्यपेक्ष्य एटले बरावर सारी रीते जोड़ [विचारी] ने शुं जोचुं ते बतावे छे. एकमेक त्रसकाय पत्येक पोतपातानां सुख भोग-वनारां सर्वे पाणीओं छे बीजानुं सुख बीजो भोगवतो नथी आ सर्वे पाणीओंनो धर्म छे एम बतावे छे वे त्रण चार इन्द्रियवाळां बयां माणीओ तथा बधां प्रत्येकसाधारण सूक्ष्मवादर पर्याप्त अपर्याप्त तरुओ जे सर्व भूतो छे तथा गर्भव्युत्क्रांतिक समूर्छनन औष-पातिक पंचेन्द्रिय जीवो तथा पृथिवीआदि एकेन्द्रिय सर्व सत्वो विगरे एकवीजानां दुःख एकवीजां भोगवी शकतां नथी, पण पोतानां दुःखो पोतेज भोगवे छे अहि पाण विगरे शब्दोनो खरीरीते भेद नथी पण नीचेना न्याय वचनना व्यवहारथी भेद छे. कर्युं छे के प्राणा द्वित्रि चतुः श्रोक्ताः भृतास्तु तरवः स्मृताः । जीवाः पंचेन्द्रियाः श्रोकाः शेषाः सस्वा उदीरिताः ।१। 🗍

वे इंदिय, अग इन्द्रिय, चार इन्द्रिय, जीवो माण कहेवाय छे. तरु हुसो विगेरे भूत पंचेन्द्रिय जीवो कहेवाय, अने बाकीना स त्व कहेवाय ॥ १ ॥ अथवा ब्रब्द व्युत्पत्तिद्वार समिभिरुद्वनय मनवढे भेद जावो ते आ ममाणे छे.

हमेशां माण धारण करवाथी (माणो) माणीओ छे, त्रणे काळमां रहेलां होवाथी भूत छे त्रणे काळमां जीववाथी जीवः अने

1188811 D

आचा०
आचा०
शास्त्राव्याव्याव्या सत्त्र छे, तो आपणे मनमां घारण करीने जेम मत्येक जीवनुं सुख छे तेम मत्येकनी अज्ञाता, महाभय, दुःख मिन्नीरे हुं कहुं छुं, तेमां जे दुःख पमाडे, ते दुःख शुं वधारे छे? 'असातम्' कष्टथी वेदाय पत्रा कर्मोश्चना परिणाम, तथा 'अपिर निर्वाण ते, न थाय, ते अपिर निर्वाण छे. एटले चारे बाजुधी शरीर मन विगेरेने पीडा करनारुं तथा 'महाभय' महान [मोटुं]पत्रुं जे भय ते 'महाभय' जेनाथी बीनो वधारे भय होय निर्ह ते महाभय कहेवाय ते थाय छे ते बतावे छे बधां प्राणीयो शरीरथी थनारा तथा मनथी थतां दुःखोथी उड़ेग पामे छे, [इति शब्द एकवार अर्थमां छे] ए प्रमाणे पहेलां कुं, तेनुं तत्व बरावर पाछ कर्युं छे, एवो हुं कहुं छुं. जे कहेवानुं छे ते कहे छे.
'तसंतीरपादि' ए मकारे असागादि विशेषण युक्त दुःखथी पराभव पामेला माणो श्रास पामे छे [उद्रेग पामे छे] तेन माण धा-

रण के जीवनुं ते व्यवस्थान छे [तथा काकु वचनथी आम अर्थ मितपादन थाय छे] एवी कोइ दिशा के खुली नथी के जेमां त्रस-

काय न होय, अथवा ज्यां रिहने त्रास न पामता होय, जेम कोशेटानो कीडो वधी दिशाओ तथा खुणाओथी डरीने पोतानुं रक्षण करवा माटे तारथी शरीरने वींटे छे तो पण मरे छे, भाव दिक् पण तेवी कोइ नथी के जेमां रहेला त्रसकायो न डरे, शरीरथी अने

प्रसकायो दुःख पामे छे. क्यांथी दुःख पामे छे? उत्तर तेना आरंभ कश्नारा तेनो नाश करे छे. [बळवान निर्वळने मारे छे] म—शुं करवा तेने मारे छे ? उत्तर—तेओ तेनो आरंभ करे छे ते नीचे प्रमाणे कहे छे.

तत्थ तत्थ पुढो पास आतुरा परितावंति, संति पाणा पुढो सिया (सू. ५१)

निचे कहेवातां ते ते कारण उत्पन्न थये अर्चा, अजीन, शोणित, विगेरे जुदां जुदां प्रयोजन उत्पन्न थयेथी तेओ हणे छे.
एम शिष्पने कहे छे, के तुं जो (शुं जोवानुं) ते कहे छे मांसमक्षण, विगेरेमां लोलुप थयेला मनना ठेकाणा विनना चारे बाजुधी जुदी चेदना करीने अथवा प्राणीने मारवावडे तेनो आरंभ करनारा जीवो, त्रसनीवोने पीडे छे, गमे तेवी रीते आरंभधी मणीओने दुःख थाय छे ते बताववा कहे छे 'संतीत्यादि' एवा जुदा जुदा प्रकारना एक बे, त्रण, चार, पांच इन्द्रियवाळा पृथिवीने आश्रयी रहेला घणा प्राणीओ छे. एम जाणीने पाप विनानुं अनुष्टान करनारा थवुं, एवो अभिप्राय छे: एवं नथी करता तेओ बोले छे कंइ, अने करे छे कंइ, (बोले छे तेवुं करता नथी) ते बतावे छे—

लजामाणा पुढो पास अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा जिमणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकायसमा-रंभेण तसकायसर्थं समारभमाणा अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसंति, तत्थ खल्ल भगवया परिण्णा पवेइया, इमस्त चेव जीवियस्त परिवंदणमाणणपूर्यणाए जाईमरणमोयणाए दुक्खपिडघायहेउं

11१९६॥

से सयमेव तसकायसत्थं समारभित अण्णेहिं वा तसकायसत्थं समारभावेइ अण्णे वा तसकायस्य समारभमाणे समणुजाणइ, तं से अहि आए तं से अबोहोए से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुद्धाय सोचा भगवओ अणगाराणं अंतिए इह मेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे एस खलु मोहे एस खलु मारे एस खलु णरए, इच्छं गड्डिए लोए जीमणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसका-यसमारभेण तसकायसत्थं समारभमाणे अण्णे अण्णेगरूवे पाणे विहिंसित (सृ. ५२)

ब्याख्यान पहेलां पेठे जाणबुं एटछे अन्य लोको अनेकरूपे हालता चालता प्राणीओनो वध करे छे, इत्यादि पूर्वना जेबुंज व्याख्यान करबुं कोइपण गमे ते कारण लड्ने त्रसकायगो वध करे छे, ते बतववाने माटे कहे छे.

से बेमि अप्येगे अच्चाए हणंति, अप्येगे अजिणाए वहंति, अप्येगे मंसाए वहंति, अप्येगे सोणियाए वहंति, ऐवं हिययाए वित्ताए, वसाए विच्छाए पुष्छाए वाळाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए णहाए पहारुणीए अडीए अडिमिंजाए अडाए अणडाए, अप्येगे हिंसिंसु मेत्ति वा वहंति अप्येगे हिंसंति मेत्ति वा वहंति अप्येगे हिसिस्संति मेत्ति वा वहंति (सू. ५३) सूत्रम्

।१९६॥

जोने माटे बसकायना संगारंभमां भवतेंलाओधी त्रसकाय माणीओ मराय छे, ते हुं कहुं छुं, केटलाक अर्चाने माटे हणे छे ('अपि' शब्द उत्तर पदनी अपेक्षाए समुच्चय अर्थमां छे,) 'एके' एटले केटलाक अर्चाने माटे आहुर बनीने जाणे के आ देहने सारीरीते घरेणां विगेरे आपीने पुनशे. एटला माटे मारे छे (हणे छे) ते आ प्रमाणे खोडखायण विनाना वत्रीश लक्षणा पुरुषने मारीने तेनान शरीवडे देवीओनी पासे कोइ विद्या मंत्र साधनों करे छे, अने तेनी सिद्धिने माटे दुर्गादि देवीओ जे मागे ते आ- पे छे. अथवा जेणे झेर खाधुं होय, ते माणसने हाथीने मारीने तेना शरीरमां नांखें छे; अने पछी बिन शरी (पची) जाय छे. प छ. अथवा जेण झर खाधु होय, त माणसन हाथीने मारीन तेना शरीरमी नाखे छे; अने पछी विश झरा (पची) जीप छ. तथा अजीनने माटे चित्ता वाघ. तिंह विगेरेने मारे छे ए प्रमाणे मांस, छोही, हैयुं, पित, चरवी, पीछां, पुछहं, वाळ, शींगडां. विषाण दांत, दाढ, नख, स्नापु, हाडकां, अने हाडकानी मिंज्झा; विगेरेमां पण कहेवुं के मांसने माटे ग्रंड बराह (स अर) विगेरे मारे छे, तथा त्रिशूळ आळेखवाने माटे छोही गृहण करे छे. साथना करनाराओ हृदयने छड़ने बलोवे छे. पित्तने माटे मोर विगेरे हणे छे, वसाने माटे वाघ मघर शुंड विगेरे तथा पीछांने माटे मोर गींथ विगेरे, पुंछडांने माटे रोझ नामनुं जनावर विगेरे, वाळने माटे चपरी गाय विगेरे शृंगने माटे हरण गेंडां विगेरे मारे छे. कारणके ते श्रींगडांओने याज्ञिक (यज्ञ करनाराओ)पवित्र गणे छे अने तेओ उपयोगमां छेछे. विपाणने माटे हाथी, वराह तथा शृंगालो विगेरे मारे छे. (अहीं विपाणना शींगहुं हाथीदांत तथा सकरनो दांव एम त्रण अर्थ थाय छे) तेना दांत अंथकारनो नाश करका होवाथी ते उपयोगने माटे मराय छे. दाढने माटे वराह विगेरे, नखने माटे वाघ विगेरे, स्नायुने माटे गाय भेंस विगेरे, अस्थि ने माटे शंख छीप विगेरे, अस्थिमिक्निने माटे पाडा वराह है

आचा०
अभिक्षेत्र एवरिते पणा लोको पोताना प्रयोजन माटे इणे छे अने केटलाक तो कांइपण प्रयोजन शिवाय काचंडा, घरोळी मारे छे.
अने बीजा केटलाक विचारे छे के आ सिंहे, सापे, तथा श्रृत्य मारा सगाने मार्यों छे, एम धारीने तेतुं वेर लेवा माटे तेने मारे छे. अथवा मने दुःख आप्युं, एम धारीने पण मारे छे, अथवा हालमां आ सिंह विगरे बीजाओने तथा आपणने दुःख दे छे. माटे एने मारवो जोइए, एम धारीने मारे छे. अथवा कोइ वखत आ अमोने अथवा बीजाने मारको, एम धारी सर्पादिने मारे छे, एवा घणाक प्रकारे असविषय हिंसा बतावीने उदेशाना अर्थने पूरो करवा कहे छे.

प्रथ सरथं समारभमाणस्स इचेते आरंभा अवरिण्णाया भवंति, एरथ सरथं असमारभमाणस्स इचेते आरंभा परिषणाया भवन्ति, तं परिष्णाय मेहावी णेव सयं तसकायसत्थं समारभेजा, णेवऽष्णे।हें तसकायसत्थं समारंभावेजा, णेवऽण्णे तसकायसत्थं समारंभंते समणुजाणेजा, जस्सेते तसकायस-गारंभा परिण्णाया भवन्ति सेहु मुणी परिएणायकम्मे (सू. ५४) त्तिबेमि ॥ इति पष्ठ उद्देशकः ॥ द्वि असकायना समारंभथी विरत थयेछो होताथी तेज मुनि अने पापकर्मन्तुं पत्याख्यान करेछं होताथी तेज परिज्ञातकर्मा कहेनो, मारंभा परिण्णाया भवन्ति सेहु मुणी परिएणायकम्मे (सू. ५४) त्तिबेमि ॥ इति षष्ठ उद्देशकः ॥ त्रसकायना समारमथा विरत यथळा हाताथा तम सान जन पापकान निर्वाणनाम करछ राजान पर नारकार एका एका। एक प्रकार एका। एक प एम सम्बद्धं ज्यां सुधी आ बात आवे, त्यां सुधी वधुं पुर्वनी पेठे कहेबुं. श्रीसुधर्मास्वामी कहे छे के आ बधुं हुं भगवान त्रिछोकना क्रिया स्वास विद्या स्वास क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया स्वास थयो.

For Private and Personal Use Only

अविश्व कही उद्देशों कहा हवे सातमी आरंभे छे तेनो छहानी साथे आवीरीते संबंध छे नवा धर्म पामनारने दुःस्वथी श्रदा रहे छे; क्षेत्र अविश्व वायुनुं अल्पपरिभोगवणुं छे माटे उत्क्रमें आवेला वायुनुं बोहुं जे कंद्र कहेवानुं छे, ते स्वरुप निरुपणकरणाने आ उद्देशानो उपक्रम विगेरे चार अनुयोग द्वारों कहेवां; ज्यांसुची नामनिष्पन्न कि निर्भेषामां वायुच्देशक ए ममाणे तेमां वायुनुं स्वरूप निरुपण करवाने माटे केटलांक द्वारना अतिदेश जेमां रहेल छे एवी गाथानुं कि निर्भेषिकार कथन करे छे.

वायुस्सऽवि दाराइं, ताइं हवंति पुढवीए; । नाणत्ती उ विहाणे, परिमाणुव भोग सत्थेय ॥ १६४ ॥

जे वाय ते बायु तेनां जे द्वारो पृथिनीकायनां जहेशायां मितपादन कर्या छे. तेज द्वार अहीं छे, पण विधान परिमाण उपभोग, शस्त्र अने च शब्दथी लक्षणमां जुदापणुं जाणवुं तेमां विधान मितपादन करवा कहे छे.
दिविहा उ बायनीका सुनुष्ण वह करवा कर्या कर्षा है

दुविहा उ वाउजीवा सुहुमा तह बायरा उ लोगंमि। सुहुमा य सव्वलोए पंचेव य बायरविहाणा ॥१६५॥ वायु एन जे नीव, ते वायु जीव छे, ए के प्रकारे छे, सूक्ष्म अने वादर, तेवां नामकर्मना उदयथी सूक्ष्म, अने वादर एम कहेवाय छे; तेमां सूक्ष्म सर्व लोकमां व्यापीने रहे छे. अने व्याप्तिवडे ते एक घर जेनां बारणां जाळीओ विगेरेने वासी दहए छीए; छतां धुमाडो अंदर रहे छे तेवी रीते रहे छे बादरभेद पांच प्रकारे छे, ते भेद प्रतिपादन करवाने माटे गाया कहे छे. उद्घालिया मंडलिया गुंजा घणवाय सुद्धवाया य। बायरवाउविहाणा पंचिविहा विण्णया एए ॥ १६६ ॥

उत्कलिक बात, गंडलिक बात, गुना बात, अने शुद्ध बाग, एम बादरबायु पांच मकारे वर्णवेल छे. तेमां रहि रहिने मोनां हिल्ला हिला हिल्ला ह

जह देवस्स सरीरं, अंतद्घाणं व अंजणाईसुं। एओवम आएसो वाएऽसंतेऽवि रूवंमि ॥ १६७ ॥

जेम देवनुं शरीर आंखोथी देखतुं नथी छतां, पण छे, अने सचेतन छे, एम मनाय छे, देवो पोतानी शक्तिवडे तेवुं रूप करे छे, के आंखोथी देखी शक्तातुं नथी तथी आपणे एम नथी कही शकता के ते नथी अथवा अचेतन छे तेवीजरीते वायु पण च- श्रुनो विषय थतो नथी तो पण वायु छे अने चेतन छे. अथवा बीना दृष्टांतमां जेम लोप थतुं विगेरे विद्या मंत्रथी तथा अंजनथी मनुष्य पण अद्रव्य थाय छे पण तेथी मनुष्यने नास्तिपणुं तथा अचेतनपणुं न कहेवाय. एवी उपमा वायुमां पण रूप नथी छतां थाय छे अहिं असत् शब्द अभाव कहेनार नथी पण वायुनुं असर्क्ष छे, एटले तेनुं रूप चश्चुथी प्रदूण थह शकतुं नथी, करण के ते परमाणुंनी माफक सूक्ष्म परिमाणवाळो छे, वायु, रूप, रूप, रूपर्श, गुणवाळो छे, एम मानवुं छे, पण जेम ' बीजाओना मतमां वायु के

किवळ स्पर्शवानज छे, तेम अमे नथी मानता, प्रयोगनो अर्थ गाथावढे बताच्यो छे. प्रयोग आ प्रमाणे छे"गाय अने अन्य विगरेनी पाफक वायु बीजाए भेरेलो वांकी अने अनियमित गतिवाळो होवाथी, चेतनावान छे."तिर्धक एज गमनना नियमना अभावथी अने अनियमित एवं विशेषण आपवाथी, परमाणु साथे व्यभिचार थवानो संभव नथी, कारण के ते नियमित गतिवाळो छे जीव अने पुहलनी 'अनुश्रेणीगतिः'(तत्वा० अ० २ स्० २७)ए वचनथी जाणवं. तथा आ वायु घन, शुद्ध वातादि भेदोबाळो, अने शक्षथी न हणायो होय, त्यां सुधी चेतनावाळो छे; एम समजवं हवे परिमाणद्वार कहे छे.

जे बायरपजता पयरस्स असंखभागमिता ते। सेसा तिन्निवि रासी वीसुं लोगा असंखिजा॥१६८॥ दारं

जे बादर पर्याप्ता वायुओ छे; ते संवर्तितलोक मतरना असंख्येय भागमां रहेनारा प्रदेशराश्चि परिमाणवाळा छे, अने बाकीनी क्रिंगे राशीओ चारे तरफ जुदी जुदी असंख्येय लोकाकाश्च परिमाण थाय छे, अहि आटलं विशेष जाणतुं के 'वादरअपृकाय' पर्याप्ताथी, बादर बायुकाय पर्याप्ता, असंख्येय गुणा छे, बादर अप्काय अपर्याप्ताथी, वादर बायुकाय पर्याप्ता, असंख्येय गुणा छे, बादर अप्काय अपर्याप्ताथी, वादर बायुकाय अपर्याप्ताथी, सुक्ष्म बायुकाय पर्याप्ता, कंइक वधारे छे, सुक्ष्म अप्काय, पर्याप्ताथी सुक्ष्मवायुकाय पर्याप्ता

वियणधमणाभिधारण उस्तिचणफुसणआणुपाणू अ । बायरवाउद्घाए उव भोगगुणा मणुस्ताणं ॥ १६९॥ १ मनुष्योने पंसाधी पवन नांसवो, धमणधी फुकवुं, वायु धारण करीने शरीरमां माण अपानरूपे राखवो, विगैरे वादर वायु-

आचार क्षिण अ ताल वंटे सुप्पिस्थपत्त चेलकणो य । अभिधारणाय बाहिं गन्धगी वाउसस्थाइं॥ १७०॥ वंस्वो, ताहनां पांदहां, स्पद्धं धामर, पांदहां, बस्ननां छेहां विगेरे वायुनां द्रन्य शक्त छे अने पत्रन आवदाने मार्गे हवांना छीद्रोमांथी जे बहार आवे छे ते परसेवो ते शक्त छे. ते अभिधारणाज छे. तथा गंधो ते चंदनवालो विगेरे तथा अग्रिनी जवाला (भहका अने ताप) (अंगारा) तथा ठंडो तथा उनो वगेरे उलटो वायु ते मतिपक्ष वायु ग्रहण करवाथी स्वकाय विगेरे शक्तो मुं स्वन थयुं एटछे पंस्वो विगेरे परकायश्रस्त, तथा उलटो वायु स्वकाय शक्त छे। ए ममाणे भावश्रस्त पण अवले मार्गे दोरेला मन, वाणी, शरीर विगेरेथी वायुने पीडाहण आणवुं, हवे वधी निर्युक्तिना अर्थने उपसंहार करवा कहे छे—

सेसाई दाराई ताई जाई हवंति पुढवीए। एवं वा उद्देसे निज्जुसी किसिया एसा ॥ १७१ ॥

त्राह प्राह्म पाइ पाइ पाइ पाइ प्राह्म उपाय उपाय प्राह्म प्राह

म. जाणेखं शुं छे. 'पहु एजस्त दुगुंछणाए'लि तथा आदि सूत्र संबंध भा प्रवाणे 'सुबंगे आउसंतेण मित्यादि' जे में पहेलां छप-देश क्यों. ते अने इवे पछी कहेवाय छे, ते में भगवान पासे सांभळ्युं छे. पहु एजस्स दुगुंछणाए (सू० ५५)

' दुगुंछणा'ति निंदा उत्पन्न थाय, तेथी ते मशु अर्थात् निंदा करवामां समर्थ अथवा योग्य, म० कइ बस्तुनी निदा करवावां समर्थे ?

उत्तर (' एन कंपने ') एनित एटले कंपाने, ते 'एन, एटले वायु' कारण के तेनो कंपाववानो स्वभाव छे; ते एनिनी 'जगुप्सा' एटले निंदा तेनुं सेनन करवामां निष्ठति तेमां समर्थ थाय छे. वायुकायना समारंभनी निष्ठतिमां शक्तिवालो याय छे.
अथना पाठांतर 'पहु य एमस्स दुगुंखणाए' वथारापणामां एटले उद्रेकावस्थामां रहेनारा एवा स्पर्न नामना, एकम गुणथी जणातो,
तेटला माटे एक एटले वायु एना एकन गुणथी जणाता, एना वायुनी निंदामां समर्थ, 'च' शब्दथी निंदाने समर्थ थाय, छे, अथात जीन छे एम श्रद्धा करीने पली तेना आरंभने निंदे छे. जे वायुकाय समारंभ निष्ठतिमां समर्थ कथो ते बताने छे.

आयंकदंसी अहियंति णचा, जे अज्झत्यं जाणइ से बहिया जाणइ, जे बहिया जाणइ, से अज्झत्यं

('तिक इच्छजीवन')अने आतंकन दुःख ते आतंक एटछे महाकुच्छ्पणाए जीवधुं ते दुःख छे, अने ते दुःख वे मकारे छे. शरीरहं

आचा०
हिस्त, अने बीजुं पनतुं दुःस छे, तेमां पहेलुं ते, कंटक लार, श्रस्त, जुआ, तथा सह मांकडी विगेरेथी उत्पन्न थाय छे. अने मन्तुं दुःस ते वहालानी वियोग, अने देपीनो संयोग (मेळाप) इच्छेलानो लाभ न थाय, दिरद्रताथी उदासी थवुं, विगेरेथी थाय छे ते वेड प्रकारना दुःस छे तेने (पश्यित) जुए, अने तेना जोवामां स्वभाववाळो ते ' आतंकदर्शी कहेवायः अर्थात् अवश्य ए वेड प्रकारनां दुःखो जो हुं वायुकायना समारंभमांथी निष्टत निर्धि थाउं, तो मारा उपर आवी पहेशे. तेटलामाटे आ वायुकायनो समारंभ दुःसमां कारणभूत छे. एम कह्युं छे, एम जाणीनेज तेनाथी निष्टत थवामां समर्थ थाय छे; अथवा आतंक वे प्रकारनो छे. (१) द्रव्य (२) भाव भेदथी छे, तेमां द्रव्य आतंकमां आ उदाहरण छे.

जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासंमि अत्थि सुपिसऊं। बहुणयरगुणसिमदं रायगिहं णाम णयरंति ॥ १ ॥ तत्था सि गरुयदरियारिमदणो सुयणनिग्गयपयावो। अभिगयजोवाजीवो राया णामेण जियसत् ॥२॥ अणवरय-गरुयसंवेगभाविओ धम्मघोसपामूळे । सो अन्नया कयाई पमाइणं पासए सेहं ॥३॥ चोइजतमभिक्खं अ-गहयसंवेगभावित्रा धम्मधासपामूल । सा अन्नया कपाइ निमान । तस्त हियहं राया सेसाण य रक्षमहाए ॥४॥ आयरिणाणुण्णाए आणा-वह सो उ णिययपुरिसेहिं। तिब्बुकडद्ब्वेहिं संधियपुब्वं तहिं खारं ॥५॥ पिक्खतो जत्थणरो णवरं गोदोहमेत्तकालेणं। णिजिण्णमंससोणिय अद्वियसेसत्तणमुवेह ॥६॥ दोताहे पुब्वमए पुरिसे आणावए

७५॥

तिहं राया। एगं गिहत्थवेसं, वोयं पासंतुं णेवत्थं ॥७॥ पुटवं चिय सिक्खविए, ते पुरिसे पुच्छए तिर्डं राया को अवराहो एसिं ? भणंति आणं अइक्षमइ ॥ ८॥ पासंडिओ जहुत्ते ण वद्दद्र अत्तणो य आयारे पिक्खवह खार मज्झे खित्ता गोदोहतेत्तस्स ॥९॥ दहणऽहवसेसे, ते पुरिसे अलियरोसरत्तच्छो। सेहं आल्यांतो राया तो भणइ आयरियं ॥१०॥ तुम्हवि कोऽवि पमादो ? सासेमि य तंषि णित्थ भणइ गुरू। जइ होहि तो साहे तुम्हे श्विय तस्स जाणिहिह ॥११॥ सेहो गए णिवंमी भणई ते साहुणो उ ण पुणत्ति । होहं पमाय सोलो तुम्हं सरणागओ घणियं ॥१२॥ जइ पुण होज पमाओ, पुणो ममं सङ्ढ भाव रहि यस्स । तुम्ह गुणेहिं सुविहिय तो सावगरक्ख सा मुचे ॥१३॥ आयं कमओ विग्गो, ताहे 'सो णिच उच्जुओ जाओ। कोविय मतिय समए रण्णा मरि साविओ पच्छा ॥१४॥ द्व्वायंकादंसी अत्ताणं सव्व-हा णियत्तेइ । अहिया रंभाउ सया जह सीसो धम्मघोसस्स ॥ १५ ॥

गाथाओंनो अर्थ-नंदृद्धिपना भरतखंडमां वहु नगरना गुणथी समृद्धिवाळं अने सुप्रसिद्ध एवं राजगृह नामनुं नगर हतुं. तेमां घणाज गर्ववाळा श्रष्टुओने मर्दन करनार अने चारेतरक जेनो यश्च फेळायो छे, एवो जीव अजीवने जाणनारो जीतशत्रु नामनो राजा

सृत्र ।।२०

॥२०६॥

राज्य करतो हतो. पछी निरंतर पहान संवेगने भावनार एवा तेणे धर्मधोष आचार्यनी पगमां कोई वसते कोई ममादी शिष्यने जोयो. ते शिष्यने वारंवार अपराथनो उपको आपतां छतां वारे वारे ममाद करतो देखीने तेना हितने माटे अने बीजाओ तेवा पापी न बने, माटे राजाए आचार्यनी आझाथी पोताना पुरुपो पासे तेने बोळाज्यो, तथा तीत्र उत्कट वस्तुथी मेळवीने स्वार तैयार रखाज्यों, गा-प ते स्वार एवं। सस्तत हतो के जेमां नांखेलो माणस गोदोई (गायने दोहवाना) वस्ततमां मांस, लोही विनानो फक्त हाडकां मात्र रहे. गा-६. अने पथम संकेत करीने वे महदां राजाए मंगावी राख्यां जेमां एकनो यहस्य वेष, अने बीजानो बावानो वेष हतो. गा-७. पूर्वे शिखवेला माणसने राजाए पूछ्युं.

के आ पन्नेनो शुं अपराध छे. तेओए कहुं एक वडीलनी आज्ञा उल्लंचे छे, बीनो पांखडी (साधु) पोताना शास्त्रोक्त कहेला आचारमां हहेतो नथी, तेथी राजाए कहुं, गोदोह मात्र काल खारमां नांखो. ॥ ९ ॥ ते वे पुरुषोने हाहकां मात्र रहेलां देखीने खोटा कोधथी आंखो लाल करीने राजा आचार्यने शिष्यना देखतां कहे छे. ॥ १० ॥ हे महाराज तमारामां पण कीइ प्रमादी होय तो कहां, हुं तेने योग्य किसा करूं, गुरुष तेने कहां कोइ प्रमादी नथी, अने कोइ थशे तो हुं कहीश, अथवा तमे तेने जाणशो ॥ ११ ॥ ज्यारे राजा गयो, त्यारे, पेलो चेलो साधुओने कहे छे, के हवे हुं प्रमादी नहि थाउं. हुं तमारा शरणमां संपूर्ण आवेलो छुं ॥ १२ ॥ जो फरीथी मने प्रमाद थाय अने शहभावरहित करवा तमारा गुणो वहे तमे सुविहित छो, तेथी मने प्रमाद राक्षसथी सुकावजो ॥ १३ १ आतंक अने भयथी उद्धिग्न थयेलो ते निरंतर पोतान। पर्म अनुष्ठानमां जाग्रत थयो, त्यारे पछी, ते सुचुदिन

सूत्रम

॥२०६॥

For Private and Personal Use Only

वाळो थयो त्यारे राजाए समय आवे तेने खरी वात कही, अने क्षमा मागी, ॥ १४ ॥ द्रव्यआतंकने देखनारो पोताना आत्माने हम्मेक्षां धर्मघोषना क्षिष्यनी पाकक अहित आरंभधी पोते दूर रहे छे. ॥ १५ ॥
तेम भाव आतंकने देखनारो नस्क, तिर्थेच मनुष्य अने देवताना भवमां व्हाळानो वियोग विगेरे, तथा मनुष्य विगेरेने, क्षरीर अने मनना आतंक (दुःखो)ना भयथी, दरीने वायुने दुःख देवाना समारंभमां न मन्ते, पण आ वायुने दुःखनुं कारण छे. तथा ते अहित छे, एम समजीने तजे छे, तेथी जे विमळ विवेकभावथी आतंकदर्शी होय छे; ते बायुना समारंभनी जुगुप्तामां समर्थ छे; हित, अहित, माप्ति, परिहार, एटले हित थाय, अहित दूर थाय, एवा अनुष्ठाननी महत्तिमां पोते समर्थ छे, तेनाथी बीजो एवाज पुरुषनी माफक एटले जे कोई आतंकने जाणे, ते वायुनो अरंभ त्यांगे छे: वायुकाय समारंभनी निवृत्तिमां कारण वतावे छे, आत्माने आगळ करीने जे वर्ते ते अध्यात्म छे, अने ते सुख दुःख विगेरे छे. ते अध्यात्मने जे जाणे एटछे तेनुं स्वरूप समजे, 🎉 ते वहारनां प्राणीगण जे वायुकाय, विगेरे छे; तेने जाणे छे; जेम मारो आत्मा सुखनो अभिकाषी थइ, दुःखथी खेद पामे छे. तेम बायु विगेरेने एण छे, वळी मने भावेलुं अति कहुक अञ्चातावेदनीना कर्मना उदयथी, अग्रुभ फळ एटले दुःख आवेलुं छे; ते पोताने अनुभव सिद्ध छे, तथा पोताना अत्मामां भ्रातावेदनी, कर्मना उदयथी शुभ फळरूप सुख आवेलुं ते सुख, दुःख बन्नेने जे किंगा काणे, तेज खरेखरो अध्यात्मने जाणे छे, ए प्रमाणे जे अध्यात्म वेदी छे, ते पाताना आत्माथी बहार रहेला बायुकायादि पाणी-गणने. जदी जदी प्रकारना उपक्रमशी उत्पन्न थयेला पोताथी अने पारकाथी अने मनमां थनारां सुख दःखोने जाणे छे, एटले

आचाः

॥२०८॥

र्भ तरकारणाचा गरकाचु त्य तञ्चाय कर ल, त्य नण वामाण करकामाग पत्र छुड़ाक तथा, धवान बहार रहला बायुकाय विगेरेनी अपेक्षा क्यांथी होय ? अने जे बहारना जीवोने जाणे ते यथायाग्य अध्यात्मने जाणे छे; कारण के ते बाह्य अने अध्या- रम एकबोजानी साथे अन्यभिचारवाळां छे; (एटले समान छे) परना आत्माना ज्ञानथी हवे शुं करबुं, ते बतावे छे; आ प्रमाणे करें ले एकबोजानी तुलाए तोळ तुं जेम तारा आत्माने सर्वथा सुखना अभिलाषीपणाथी रक्षे छे तेम बोजाने पण तुं बचाव, जेम पारकाने तेमज आत्माने ए वे तुलोमां समान तोळीने पर अने पोतानुं सुख दुःख तेनो अनुभव जो, अने ते प्रमाणे कर (आवुं सुरू कहे छे)

कट्ठेण कंटएण व पाए विद्यस्स वेयणदृस्त । जह होइ अनिव्वाणी सब्वत्थ जिऐसु तं जाण ॥१॥

वळी छाफडाथी अथवा कांटाथी पगमां लामतां जेवी रीते तने वेदना थाय छे. तेवी रीते तुं बीजा जीवीमां एण जाण, तथा मरीश एटछं सांभळतां तने जे दुःख थाय छे ते प्रमाणे ते अनुमानवडे, बीजाने दुःख थाय छे ते जाणवुं शक्य छे, अने पारकानुं रक्षण करवुं ते पण शक्य छे, तेथी जेम तुलाए तोळवानुं वतान्युं, ते प्रमाणे स्व अने पर समजनारा माणसो स्थावर जंगम जंतुना समूहना रक्षण माटे पवर्ते छे. केबीरीते वर्ते छे. ते बतावे छे,

इह संतिगया दविया णावकंखंति जीविउं (सू॰ ५७)

आ दयाना एक रसवाळा जीनवचनमां, शान्ति (उपश्रम) ते प्रश्नम, संबेग, निर्वेद, अनुकंपा. आस्तिकयने बतावनार छस-

सूत्रम

For Private and Personal Use Only

॥२०९॥

णवाळं सम्यक्दर्भनद्वान, चरणनो समुदाय कहेवाय ते श्वान्ति छे कारण के ते निरावाध मोक्ष नामनी श्वांतिने आपनार छे;
तेवी श्वांतिने माप्त थयेला अथवा शांतिमां रहेला ते श्वांतिगत नीवां तथा द्रविका, एटले रागद्वेषथी मुकाएला छे, तेमां द्रव ते संयम सत्तर भकारनो छे, कारण के जे कठिन कर्म छे, तेने गाळवाना हेतुरुपे ते द्रवरुप संयमने घरे ते द्रविक छे, तेओ जीवितने
धारण करवाने इच्छता नथी, के अमे वायुकायने दुःख दइने जीवीए, (दुःख भोगवीए, मरधुं कबुल करीए, पण वायुने पीडा न
आपीए) तेज भगाणे पूर्वे कहेला भगाणे पृथिवीकाय विगेरेनी पण अमे रक्षा करीशुं. समुदाय अर्थ आ प्रमाणे छे, आ जैन
मवचनमां जे संयम छे तेनी अंदर जे रहेला छे, तेओज रागद्वेप रुप जे उंचा झाडो छे, तेने मूळथी उखेडनारा छे, अने तेओज
परभूत (अन्य जीवो) ने दुःख दइ सुखथी जीववानी इच्छा रहित साधुओं छे. पण अन्यत्र नथी कारण के आवी क्रियाना बोधनो
बीजे अभाव छे; आ म्माणे थये छते—

लज्जमाणे पुढो पास अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा जिमणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्मसमा-रंभेणं वाउसस्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसित । तत्थ खल्ल भगवया परिण्णा पवे-इया । इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूर्यणाए जाईमरणमोर्यणाए दुक्खपिडघारहेउं से सयमेव वाउसत्थं समारभित अण्णेहिं वा वाउसत्थं समारंभावेइ अण्णे वाउसत्थं समारंभंते समणु- सूत्रम्

॥२०९॥

1158011

जाणित, तं से अहियाए तं से अबोहीए, से तं संबुङझमाणे आयाणीयं समुद्दाए सोद्या भगवओ अणगाराणं अंतिए, इहमेगेसिं णायं भवित-एस खलु गंथे एस खलु मोहे एस खलु मारे एस खलु णिरए, इद्यत्थं गिट्टुए लोए जिमणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्मसमारंभेणं वाउसत्थं समारंभाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसति (सू॰ ५८)

से बेमि संति संपाइमा पाणा आहच्च संपयंति य फरिसं च खलु पुठा एगे संघायमात्र जंति, जे तत्थ संघायमात्र जंति ते तत्थ परियात्र जंति ते तत्थ उद्दायंति, एत्थ सत्थं समारभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति, एत्थ सत्थं असमारभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति, तं परिण्णाया मेहात्री णेत्र सयं वाउसत्थं समारंभेज्जा णेत्र प्णणेहिं वाउसत्थं समारंभोत्र ना प्रेति वाउसत्थं समारंभोत्र ना प्रेति वाउसत्थं समारंभोत्र समणुजाणेज्जा, जस्सेते वाउसत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति से हु मुणी परिण्णायकम्मे (सू० ५९) सिबेमि

पूर्व माफक सूत्रार्थ छे, दवे छ जीवनिकायना विषयमां वध करनाराओंने अपाय दुःख) बतावीने जीवोने तेवुं दुःख न देनाराओंने

सुत्रम् ॥२१०॥ आचा० ॥२११॥ संपूर्ण मुनिषणुं बतावना माटे सूत्रो कहे छे, एरथंपि जाणे उवादीयमाणा, जे आयारे ण रमंति, आरभमाणा विणयं वयंति, छंदो-वणीया अज्झोववणणा, आरंभसत्ता पकरंति संगं (सू० ६०)

पस्तुत वायुकायमां अने अपि शब्दथी पृथिवी विगेरेमां पण जेओ समाश्रित आरंभ करे छे, तेओ कर्मने बांधे छे. एक जी-विनकायना वधमां, महत्त थयेलो शेष निकायना वधना कर्मथी बंधाय छे शा माटे ? एम श्रिष्ये पूछतां कहे छे के हे छह ! एक जीवनिकायनो आरंभ बीजी जीवनिकायना उपमर्दन श्विवाय न बनी श्वके एटला माटे तुं सपजी ले. आ सांभळनारने विचारवा कहुं. (अहीं बीजीना अर्थमां पहेली विभक्ति छे. तेनो आ ममाणे अन्त्रय करवो,) पृथिवी विगेरेना आरंभ करनारने वीजी काया-ना आरंभ करवाथी उपादाय मान ने जाण. (अर्थात् तेओनी बीजीकाय मारवानो अभिलाप न होय, छतां एककाय हणता, बीजी काय स्वयं हणाइ, जवाथी मारनारने पाप लागे छे;) हवे क्या जीवो पृथिवी विगेरेनो आरंभ करतां शेप कायना आरंभना कर्मथी बंधाय छे, ते कहे छे. जेओ आचारमां रमता नथी, एटले परमार्थ जाण्या विना झान, दर्शन, चरित्र, तप, वीर्थ, नामना पांच म-कारना, आचारमां जेओ धीरज न राखे, तेओ अष्टतिने लीवे पृथिवीकाय विगेरेना आरंभी बने छे: तेओने बीजी कायना पण पाप बांधनारा जाणवा.

गरा जायकाः - प्रश्र—क्याकोको अचारमां रमता नथीः ? सूत्रम ॥२११॥

॥२१२॥

उत्तर-शाक्य दिगम्बर तथा पासत्था (चारित्रथी पतित) विगेरे. पश्च-शा गाटे ?

उत्तर—आरंभ करवा छतां, तेओ पोताने संयमवाळा माने छे, विनय तेज संयम छे. शाक्यादि साधु--अमे पण विनयमां रहेला छीए, एम बोले छे, पण तेओ पृथिवी विगेरे जीवोनुं स्वरूप जाणता नथी, अने कदाच माने तो पण तेज आश्रित आरंभ करवाथी झानादि आचारना विकल्पपणाथी आचार रहित छे.

मश्र-एवं शुं कारण छे के पोताने आचार विनाना दुए बीलवाळा होवा छतां संयमवाळा माने छे. ?

उत्तर—पोताना छन्द एटले अभिप्राय प्रमाणे पूर्वांपर विचार कर्या विना अथवा विषयनो अभिलाप तेना छन्दवढे उपनीत आरंभना मार्गमां रहीने अवीनीत छतां, पोताने विनय छे, एम बांले छे; अधिक एटले बधारे, उत्पन्न. ते आरंभमां लीन थयेला, विषयना परिभोगमां एक चित्रवाळा बनी गयेला जनो जीवोनो दुःख देवनां कर्मों करे छे. आ प्रमाणे विषयनी आशामां खेंचायला चित्रवाळा शुं करे छे ? ते बतावे छे. ' आरंभमाण ' एटले सावय अनुष्ठान अतिशयथी करे छे, तेओं आ संसारमां अनुष्ठानवडे आठ प्रकारना कर्मनो संग करे छे, अथवा जेओ आरंभ करे छे, ते विषय संग करे छे, अने ते विषय संगथी संसार छे. घणा वेगथी जे उत्पताइ करे, तेथी भावे कर्म बंधाय, अने पठी अनेक प्रकारनां दुःखो पोते, एटले छ जीवनिकायनो घात करनारो दांचार भोगवे छे हवे ते आरंभधी निष्टत थयेलो केवो उत्तम होय ते बतावे छे.

सूत्रम्

॥२१२॥

For Private and Personal Use Only

आचा० ॥२१३॥ से वसुमं सब्बसमण्णागयपण्णाणेणं अप्याणेणं अकरणिङ्जं पावं कम्मं णो अण्णेसिं, तं परिण्णाय मेहाबी णेव सयं छज्जीवनिकायसत्थं समारंभेज्जा, णेवऽण्णेहिं छङ्जीनिकायसत्थं समारंभावेज्जा णेवऽण्णे छङ्जीवनिकायसत्थं समारंभेते समणुजाणेङ्जा, जस्सेते छङ्जीवनिकाय सत्थसमारंभा परि-ण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णायकम्मेः; (सू॰ ६१) तिबेमि इति सप्तमोदेशकः ॥ ॥ इति प्रथममध्ययनम् ॥

पृथिवीना उद्देशमां विगेरे ते कहेला निवृत्ति गुणने भजनारा, एटले छ जीवनिकायना वध्यी पालो हठेलो छे. तथा वसु त द्रव्य अने भाव एम बे भेदे छे, द्रव्य बसु, ते, मरक्त (पातुं) इन्द्रनील (एक जातनुं रत्न) वज (हीरो) विगेरे तथा भाव वसु, ते, सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र जेने अथवा जेमां विद्यमान छे, ते वसु मान थाय, अहिं द्रव्य वसु सुकीने भाव वसु छेतां साधुने भाव वसुमान छेवो, एटले जे ज्ञानी होय ते लेवो; अथवा जेनावहे यथावस्थित विषय ग्रहण करनारां जे बथां ज्ञान छे, जेना वहे वधुं जणाय छे; ते ज्ञानो जेना आत्मामां होय ते सर्व सम्भागत प्रज्ञानवाळो एटले संपूर्ण बोधथी युक्त छे. तथा सर्व इन्द्रिय ज्ञानो वहे एटले पोतानी इन्द्रियो यथायोग्य अविपरीत विषयने प्रहण करे, ते सर्व अवबोध प्रज्ञानवाळो, पोताना आत्मा बहे अथवा सर्व द्रव्यपर्यायमां सारीरीते रहेलुं जे प्रज्ञान जेना आत्मामां होय, ते अत्मामां भगवहचन भमाण

स्त्रम् ॥२१३॥

भाषा॰

भ ॥२१४॥ मोक्त अनुष्ठानने करतां सर्व अनुकूळ बोध (प्रधान) वाळा आत्या जाणवो; तेथी आ प्रकारना आत्मावडे न करवा योग्य तथा के परलोक्तमां निंदनीयपणाथी हिंसाने अकार्य जाणीने ते न करवा यत्न करे छे हवे ते जीव वध छे ? शा माटे अकार्य छे ? शा माटे तेनों यस्न न करनो है ते कहे छे. नीचे पाढे ते पाप, अने कराय ने कर्म, ने पापकर्म अदार पकार ने छे. ते माणतिपातथी मिध्या

जीवहिंसा, जुटुं, चोरी, कुशील, परिब्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राम, द्वेष, बल्देश, अभ्याख्यान, (खोटुं तोहमत) चुगली परनिंदा, हर्ष खेद कपट करीने जुटुं बोलवुं. तथा मिध्यात्व श्रत्या, ए अहार प्रकारनां पाप पोते न करे, न करावे, अने न अनुमोदे, एटले ते अदार प्रकारनां पाप संपूर्ण जाणीने बुद्धिमान पुरुष मर्थादामां रहीने छ जीवनिकायनां शास्त्रों जे स्व, पर-श्वसना समारंभोने परीक्षा करीने जाण्या छे तथा ते निपयनां पाप कर्मों पण जाण्यां छे. ते इपरिवाए जाणीने परयाख्यान परि-द्वाष त्याग करे छे ते मुनी बधा पापेथी रहित छे, तथा पना पूर्वे थयेल बीतराग एटले राग द्वेपथी बीलकुल रहित एवा पुरुपनी माफ्क जाणहो, (अहिं ' इति ' शब्द अध्ययननी समाप्ति माटे छे) पछी सुधर्मास्तामी कहे छे, के पोतानी बुदिशी नहीं, पण

भगवाने कहे छुं, ते हुं कहुं छुं. अहीं भगवान एट छे ज्ञान आवरणीय, दर्शन आवरणीय, मोहनीय, अंतराय, ए चार कर्म आत्माना एणानो पात करनार होवाथी, पनघाती कर्म कहेवाय छे; ते द्र करवाथी संपूर्ण पदार्थतुं दिन्य ज्ञान जेणे माप्त कर्यु छे, तथा जेने वथर इन्द्रों नमे छे, तथा चोत्रीश अतिज्ञयथी युक्त छे; एवा श्री वर्धमानस्वामी पासेथी उपदेश सांभळी में आ बधुं कह्युं छे. आ प्रमाणे टीकाकार कहे छे के, सूत्रना अनुगम, निक्षेप अने सूत्रने स्पर्श करनारी निर्धुवित ए बधुं कह्युं, हवे नैगम विगेरे नयो कहे छे. ते बीजे स्थळे विस्ताथी कहा छे, अहिं तो संक्षेपथी वे मकारना छे.ते कहा छे, झाननय, अने चरणनय, तेमां झाननयवाळा मोक्षना साधनमां झानने प्रधान माने छे, कारण के हित अहितनी प्राप्ति तथा त्याग तेना वडे छे, अने झानना आधारयोज वधां दुःख क्षय थाय छे, पण तेओ द्वान माफक क्रिया प्रधान मानता नथी; आ ज्ञाननयवाद थयो, इवे चरणनय कहे छे; तेओ चरणने मधान माने छे. सकछ पदार्थमां अन्वय व्यतिरेकना समिथगम्यपणार्था ते प्रधान छे, जेमके ज्ञान होय तो एण सकल वस्तुने भाणवा छतां चारित्र विना भावमां धारण करेलां कर्मोनो उच्छेद न थाय, अने तेनावीना माक्षतो लाभ न थाय, तेथी ज्ञान मधान नथी, पण चरण माप्त थतां सर्व मूळ अने उत्तर ग्रुणवार्छ चारित्र होवाथी, ते पास थतां घातीकर्मनो उच्छेद थाय छे. अने तेथी केवळज्ञान थाय, अने तेथीज यथारूपात चारित्र माप्त थतां अग्नि ज्वाळाना समृद्दथी जेम काट बळी जाय, तेम ते चारित्रथी सकळ कर्म समृद्द नास थाय छे, अने तेथीन अन्याबाध सुखवाछं मोक्ष थाय, तेथी चारित्र तेज मधान छे. आ वन्नेनुं आचार्य समाधान करे छे. एकएकने प-धान मानवाथी अने बीनाने उडाववाथी बन्ने मिध्यादर्शनीय (भूछेला) छे. कारण के क्रिया विना ज्ञान नकामुं छे, अने ज्ञान

अाचा०
॥२१६॥
विना क्रिया नकामी छे, जेम देखवा छतां पांगळो भागमां चळी मुभो, अने दोडवा छतां भांघळो वळी मुभो, तेथी जैन मत प्रमाणे नयों जो एक बीजा साथे अपेक्षा न राखे, तो ते मिध्यात्वरूपे रही सम्बक्तभावने अनुभवता नथी, पण परस्पर अपेक्षा राखी एक कठा थयेला परस्पर अर्थ बतावाथी: सम्यक्ष्पणे (साचा) थाय छे, तेथी कहुं छे, के दुनियामां जेटला सत्य अभिमायों छे. ते नय छे. पण ते नयों चीजानी अपेक्षा न राखे, तो शत्रुरूप थह मिध्यात्वरणों छे पण एक बीजानो संबंधी रही एक अधाय तो ते सम्यक्त्व थाय. ते प्रमाणे अहिं ज्ञान चरण वन्ने मळीने मोक्ष माप्तिमां समर्थ छे. पण एक छं ज्ञान के एक छं चरण नहिं, आ जिनेश्वरनो निर्दोष पक्ष बताव्यो, हवे बन्ने मुं प्रधानपणुं बताव्या कहे छे. बधा नयो छु घणा मकार मुं वनत्वय सांमळीने वधा नयो मुं विशुद्ध जे तत्व तेने समजीने ते प्रमाणे आदरीने चरणगुणमां स्थित साधु होय, एटले चरण अने गुण ए वेउमां जे रहेलो तुं विशुद्ध जे तत्व तेने समजीने ते प्रमाणे आदरीने चरणगुणमां स्थित साधु होय, एडले चरण अने गुण ए बेउमां जे रहेलो ते चरण गुण स्थित छे. अहिं गुणथी ज्ञान लेवुं, कारण के आत्मा गुणी छे तेना गुण ज्ञान छे, ते बन्नेनो कोइ पण बखत वियोग थतो नथी, तेथी ते सहभाविक गुण छे. आ प्रमाणे घणा प्रकारे नय मार्गनुं स्वरूप समजीने संक्षेपथी ज्ञान चारित्रमांन रहेवुं आ यतो नथी, तेथी ते सहभाविक गुण छ. आ प्रमाण घणा मकार नय मागञ्ज स्वरूप समजान सक्षपथा कान नारकार रहे जा विद्वानोंनो निश्चय छे, पण एकला चारित्रथीन ज्ञान विना इच्छित पाष्ति न थाय. आगळ अंध नुं द्रष्टांत आपे छे, ते प्रमाणे ज्ञान मात्रथीन क्रिया विना इच्छित पाष्ति न थाय तथा पंग्र नुं द्रष्टांत आपे छें, ते आरीते, कोइ नगरमां आंधळो तथा पांगळो बन्ने रहेता हता, ते नगर बळवा लाग्युं त्यारे बधा लोको भागी गया, पण आंधळो तथा पांगळो रही गया, एक देखे छे, बीनो दोडे छे, पण उथां सुधी बन्ने न मळ्या, त्यां सुधी दुःखी यया, पण ज्यारे बन्ने मळ्या. त्यारे बन्ने नो छुटको थयो, जेवी रीते अंध,

॥२१७॥ १ १

पंगु, भेगा थया, तेबी रीते ज्ञान चरण, बन्नेने प्रधान मानी ज्ञान भणी किया करे ते मोक्ष माप्त करे छे आ प्रमाणे आचारांगतुं संदोहभूत पहेलुं अध्ययन छ जीवनिकायनुंस्वरूप तथा तेना रक्षणनो उपाय बतावनार छे, जे प्रथम मध्य अने अंतमां दयाना एक रसवाद्धं एकांत हित करनार छे, अने जे मुमुश्च शिष्ये मुत्रथी तथा अर्थथी भण्युं तथा श्रद्धा अने संवेगवडे यथायोग्य आत्म स्वरूपे कर्युं, तथी महात्रत आरोपण ते उपस्थापना' (बडी दिक्षा) ने योग्य जाणी निक्षीय विगेरे सूत्रोमां बतावेला क्रमोवडे स- चित्र पृथिवीना मध्यमां आचार्ये गमन विगेरे करवावडे परीक्षा करी शिष्यने श्रद्धावाळो जाणीने वडीदीक्षा आपवी तेनी विधि कहे छे, सारी तिथि, करण, नक्षतमुहूर्त तथा द्रव्य क्षेत्र. भाव, सारा देखीने जिनेश्वरनी मृतिने पवर्शमान स्तुतिओ वहे' नमस्कार करीने जिनेश्वरना पगमां पडीने उभो थयेल आचार्य शिष्य साथे महात्रत आरोपण संबंधी कायोत्सर्ग करीने एक एक महात्रतने श्ररुभातथी आहंभीने त्रण त्रण बखत पाठ बाले, ज्यां सुधी रात्रिभोजन संपूर्ण विरमणवतनो पाठ आपे त्यारपछी आ पाठ त्रण बखत उद्यारवी.

इच्चेइयाइं पंच महत्वयाइं राइभोयणवेरमणछद्वाइं अत्तहियद्वयाए उपसंपिजाता णं विहरामि

अ। पांच महाव्रत छठुं राविभोजन विरमण व्रत ते पोताना आत्माना हित माटे प्राप्त करीने विचर्ह छुं पछी बांदणां देव हावी थोडुं नमीने शिष्य बोले, आक्षा आपो हुं शुं बोलुं, त्यारे आचार्य कहे, बांदीने धारण कर (बोल) तमे मने महाव्रत अर्थण कर्या छे, अने हवे हितिशिक्षानी इच्छा राखुं छुं, त्यारे आचार्य कहे, संसार्थी तारो निस्तार थाओ, मोक्ष किनारे पहींच,

सुत्रम् ॥२१७॥

अगवा०

अ वाळ भव्यजनना समृहतुं मन समाधान करनार छे ते अध्ययन प्रियना वियोग विगेरे दुःखना आवर्तवाळी तथा घणा कपायरूप माछलां विगेरेना समृहधी आकुळ विषम संसाररूप नदीने तारवामां समर्थ छे तथा एक दयारूप रस छे. तेथी वारंवार मुमुश्रुए भणवं आ शीलांकाचार्ये करेली शक्षपरिका नामना पहेला अध्ययननी टीका समाप्त थइ (आ ग्रन्थना इलोक २२२१ छे.)

॥ इति श्रीआचाराङ्गसूत्रे प्रथमो भागः समाप्तः ॥ श्रीरस्त् ॥

